चयनिका

वर्ष:2020-2021 अंक:11

भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

दिल्ली-110054

भारत की स्वतंत्रता के सूत्रधार

आज के दिन हमारा ध्यान इस स्वतंत्रता के सूत्रधार हमारे राष्ट्रपिता की ओर जाता है जिन्होंने स्वयं में भारत की प्राचीन भावनाओं का समावेश करते हुए स्वतंत्रता की मशाल को ऊपर उठाया और उसे प्रज्वलित कर हमारे चारों ओर व्याप्त अंधकार को दूर भगाया। हम प्रायः उनके अयोग्य अनुयायी रहे हैं और उनके द्वारा दिये गये संदेश से भटक गये है किन्तु केवल हम ही नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियां इस संदेश को याद रखेंगी और अपने हृदय पटल पर विश्वास, शक्ति, साहस और विनम्रता से ओत प्रोत भारत के इस महान सपूत की छवि को अंकित करेंगी।

जवाहरलाल नेहरु,
15 अगस्त 1947

Architect of India's Freedom

On this day, our first thoughts go to the architect of this freedom, the Father of our Nation, who, embodying the old spirit of India, held aloft the torch of freedom and lighted up the darkness that surrounded us. We have often been unworthy followers of his and have strayed from his message, but not only we but succeeding generations will remember this message and bear the imprint in their hearts of this great son of India, magnificent in his faith and strength and courage and humility.

Jawaharlal Nehru,
August 15, 1947

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नम कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

- भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र, डीआरडीओ, एडीए और भारतीय सशस्त्र बलों के सुचारु कार्य निष्पादन के लिए समय पर गुणवत्ता पूर्ण सेवाओं को प्रदान करने तथा लागू वैधानिक आवश्यकताओं का पालन करते हुए हितधारकों की संवर्धित संतुष्टि के लिये अपनी सेवाओं में निरन्तर सुधार के लिये प्रतिबद्ध है।

चयनिका

संरक्षक

श्री भानु प्रताप शर्मा, अध्यक्ष, भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र

अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

श्री सुशील कुमार वर्मा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, एवं
निदेशक, भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र

संपादक मण्डल

श्री विभय कुमार झा, प्रधान निदेशक (ए एफ एच क्यू)
डॉ॰ आनंद बल्लभ धौलाखंडी, वैज्ञानिक 'एफ'
श्री राजेश कुमार त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'डी'
श्री नन्दन प्रसाद, सहायक निदेशक (राजभाषा)

चित्रांकन

श्री बसंता कुमार दत्ता, तकनीकी अधिकारी 'ए'
श्री गुरुबक्श लाल चोपड़ा, प्रशासनिक सहायक

'चयनिका' में प्रकाशित लेखों, कविताओं एवं राजभाषा से संबंधित रचनाओं की मौलिकता का उत्तरदायित्व पूर्णत: लेखकों का है। इनसे संपादक मण्डल व भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कृत संकल्प

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन,
रक्षा मंत्रालय, लखनऊ रोड, तिमारपुर, दिल्ली - 110054

1.	श्री सुशील कुमार वर्मा, निदेशक	अध्यक्ष
2.	श्रीमती सुनीता वडेरा, वैज्ञानिक 'जी'	उपाध्यक्ष-I
3.	श्री संत प्रसाद मिश्र, वैज्ञानिक 'जी'	सदस्य
4.	डॉ. ए.बी.धौलाखण्डी, वैज्ञानिक 'एफ'	उपाध्यक्ष-II
5.	श्री अशोक कुमार शर्मा, वैज्ञानिक 'ई'	सदस्य
6.	डॉ. राजेश कुमार त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'डी'	सचिव
7.	श्री सचिन सिंह, वैज्ञानिक 'डी'	सदस्य
8.	श्री नन्दन प्रसाद, सहायक निदेशक	सदस्य
9.	श्रीमती सुचिका चावला, तकनीकी अधिकारी 'बी'	सदस्य
10.	श्री टी के भारद्वाज, वरि.लेखा अधिकारी	सदस्य
11.	श्री बिपिन पारचा, वरि. प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
12.	श्री नरेश दत्त गौड, भण्डार अधिकारी	सदस्य
13.	श्री गुरबक्श लाल चोपड़ा, वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक	सदस्य
14.	श्री पूरण सिंह राठौर, प्रशासनिक सहायक 'बी'	सदस्य
15.	श्रीमती कला कालिया, तकनीशियन 'ए'	सदस्य
16.	श्री हरेन्द्र सिंह, ए.एल.एस-I	सदस्य

डॉ जी. सतीश रेड्डी
Dr G. Satheesh Reddy
FNAE, HFCSI, FRIN (London), FMACANUD (Russia), FAeSI, FRAeS (UK), HFPMAI, FSSWR, FIET (UK), FIE, FAPAS, FIETE, AFAIAA (USA)

सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग
एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ

Secretary, Department of Defence R&D
&
Chairman, DRDO

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
Government of India

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र (आर॰ए॰सी॰), दिल्ली द्वारा गृह-पत्रिका 'चयनिका' के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन करना हम सभी का संवैधानिक तथा नैतिक कर्तव्य है। यह केन्द्र वैज्ञानिकों की भर्ती एवं पदोन्नति से संबन्धित कार्य करने के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मैं आशा करता हूं कि इस पत्रिका प्रकाशन से हिन्दीमय वातावरण निर्माण करने में सहायता मिलेगी और इसके साथ-साथ सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा में अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का सुनहरा अवसर भी मिलेगा। मुझे विश्वास है कि 'चयनिका' के माध्यम से सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को एक नई दिशा मिलेगी।

इस शुभ अवसर पर मैं भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र (आर॰ ए॰ सी॰) के निदेशक, संपादक मण्डल तथा पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई देता हूं तथा गृह पत्रिका के सुनहरे भविष्य की कामना करता हूं।

सतीश रेड्डी

(डॉ॰ जी॰ सतीश रेड्डी)

रक्षा मंत्रालय, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग, डीआरडीओ भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
Ministry of Defence, Department of Defence R&D, DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Phone : 011-23011519, 23014350, फैक्स/Fax : 011-23018216, ई-मेल/E-mail : secydrdo@hqr.drdo.in

भानु प्रताप शर्मा
भा. प्र. से. (से. नि.)
अध्यक्ष, आर.ए.सी

B P Sharma
IAS (Retd.)
Chairman, RAC

सं./No.
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organistion
भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र
Recruitment and Assessment Centre
लखनऊ मार्ग, तिमारपुर, दिल्ली - 110 054
Lucknow Road, Timarpur, Delhi - 110 054
दूरभाष/Phone : 011-23819287, 23814279
फैक्स/Fax : 011-23812860
ई-मेल/E-mail : chairman@recruitment.drdo.in

संदेश

यह गौरव का विषय है कि भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, दिल्ली अपनी गृह पत्रिका 'चयनिका' के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन कर रहा है। यह केन्द्र रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के वैज्ञानिकों की भर्ती एवं मूल्यांकन संबंधी गतिविधियों के निर्वहन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहा है। योग्यतम मानव संसाधन इस केन्द्र की प्राथमिक ज़िम्मेदारी है। प्रसन्नता की बात है कि बहु-संवर्गीय लघु कार्यालय होते हुए भी इस केन्द्र के अधिकारी एवं कर्मचारी, गृह पत्रिका 'चयनिका' के प्रकाशन में रुचिपूर्वक अपना योगदान दे रहे हैं। यह सभी कार्य इस केन्द्र के निदेशक के मार्गदर्शन में सुचारु रूप से सम्पन्न किये जा रहे हैं जो कि एक सराहनीय प्रयास है।

मैं इस केन्द्र के निदेशक, अधिकारियों तथा कर्मचारियों को उनके अथक प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ और इस अंक की सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

(भानु प्रताप शर्मा)

के एस वराप्रसाद
महानिदेशक (मानव संसाधन)
K S Varaprasad
DIRECTOR GENERAL (HR)

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organisation
201, द्वितीय तल, 'ए' ब्लॉक, डी आर डी ओ भवन
201, 2nd Floor, 'A' Block, DRDO Bhawan
राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
Rajaji Marg, New Delhi-110011

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र, दिल्ली अपनी गृह पत्रिका 'चयनिका' के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। इस प्रकाशन से सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन के साथ-साथ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सृजनात्मक, साहित्यिक अभिरुचि का अवसर भी मिलेगा। हिन्दी गृह पत्रिकाएं राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं इससे कार्यालय कार्यों में भी हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने में सहायता मिलेगी जो राजभाषा कार्यान्वयन का प्रमुख लक्ष्य भी है।

भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र अपने कार्यों के साथ-साथ गृह पत्रिका प्रकाशन में अपना योगदान देते आ रहा है। नि:संदेह यह एक सराहनीय प्रयास है।

मैं इस केन्द्र के निदेशक एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को बधाई देता हूं और 'चयनिका' के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

(के॰ एस॰ वराप्रसाद)

डॉ. रविन्द्र सिंह
निदेशक
Dr. Ravindra Singh
Director

अ.स.प.सं./DO No.
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organisation
राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय
Directorate of Rajbhasha and O&M
'बी' ब्लॉक, द्वितीय तल
'B' Block, IInd Floor
डी.आर.डी.ओ. भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Telephone: 23017569, 23007237
फैक्स/Fax: 23017579

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र, दिल्ली अपनी गृह पत्रिका 'चयनिका' का ग्यारहवें अंक का प्रकाशन कर रहा है जो राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए एक सराहनीय प्रयास है। इससे राजभाषा हिन्दी के सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करने एवं संरक्षण में सहायता मिलेगी। मुझे विश्वास है कि गृह पत्रिका का प्रकाशन अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए अपने विचारों को हिन्दी में अभिव्यक्त करने का एक सार्थक मंच साबित होगा तथा इसके अतिरिक्त सभी पाठकों में राजभाषा हिन्दी के प्रति अभिरुचि पैदा करने में प्रमुख भूमिका का निर्वहन करेगा।

मैं इस केन्द्र के निदेशक एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को बधाई देता हूं और 'चयनिका' के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

रविन्द्र सिंह

(डॉ. रवीन्द्र सिंह)

दूरभाष/Telephone: 23016163, 23016132 फैक्स/Fax: 23016127 ई-मेल/E-mail : varaprasad@hqr.drdo.in

सुशील वर्मा
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं
निदेशक

Susheel Verma
Outstanding Scientist &
Director

AN ISO 9001:2015 ESTABLISHMENT

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research & Development Organisation
भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र
Recruitment and Assessment Centre (RAC)

संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र अपनी राजभाषा गृह पत्रिका 'चयनिका' के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन कर रहा है। योग्यतम मानव संसाधन का प्रबंधन, भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र की प्राथमिकता है और इस कार्य को यह केन्द्र अपने सूत्र वाक्य यथार्थता, गोपनीयता, समयबद्धता के साथ करने के लिए कृत संकल्प है। अपनी सेवाओं में अधिकतम संतुष्टि लाने के लिए हम निरंतर प्रयासरत हैं इसके साथ-साथ राजभाषा से संबन्धित गतिविधियों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है। गृह पत्रिका का प्रकाशन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। मुझे प्रसन्नता है कि हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी गण अपने-अपने कार्यों के निष्पादन के साथ-साथ गृह पत्रिका प्रकाशन में भी अपना सहयोग दे रहे हैं। इस अंक के प्रकाशन के दौरान मुझे इस केन्द्र के वर्तमान अध्यक्ष का मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन मिलता रहा है। इस पत्रिका को प्रस्तुत करने में राजभाषा निदेशालय और संपादक मण्डल का सराहनीय प्रयास रहा है। इन्हीं के सहयोग से हम इस अंक को प्रकाशित करने में सफल हुए हैं।

मैं इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल को शुभकामनाएं देते हुए आशा करता हूं कि यह केन्द्र निकट भविष्य में राजभाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करेगा और संस्थान का गौरव बढ़ायेगा।

(सुशील कुमार वर्मा)

Lucknow Road, Timarpur, Delhi - 110 054 Phone: 011-23817833, 23810314 Fax: 011-23812690
URL: http//rac.gov.in E-mail: susheelverma@recruitment.drdo.in, director@recruitment.drdo.in

संपादकीय

भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र में राजभाषा के कार्यान्वयन तथा संवर्धन की दिशा में गृह-पत्रिका 'चयनिका' एक मील का पत्थर है। इस केन्द्र के समस्त परिवार के सहयोग से चयनिका के **ग्यारहवें** अंक की प्रस्तुति अपार हर्ष का विषय है। जैसा कि अनुक्रमणिका तथा लेखों एवं कविताओं के विहंगम अवलोकन से ही सुस्पष्ट है, पत्रिका में अभिव्यक्ति की विधाओं एवं शैली ही नहीं, अपितु विषयों में भी विविधता झलकती है। गद्य के साथ पद्य विधाओं तथा वैज्ञानिक, तकनीकी, कार्मिक आदि विषयों के साथ ही मानवीय अनुभूतियों, संवेदनाओं तथा मूल्यों का दर्पण भी इस अंक में परिलक्षित होता है।

श्री भानु प्रताप शर्मा इस केन्द्र के वर्तमान अध्यक्ष एवं 'चयनिका' के संरक्षक, डॉ रवीन्द्र सिंह निदेशक राजभाषा निदेशालय तथा श्री सुशील कुमार वर्मा निदेशक, भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन के विना इस अंक की प्रस्तुति संभव नहीं हो पाती।

डॉ. आनन्द बल्लभ धौलाखंडी, वैज्ञानिक 'एफ', द्वारा इस अंक के मुख्य पृष्ठ के आरेखन (डिजाइन) में सहयोग मुख्य पृष्ठ की सुषमा में चार चांद लगा गया है।

चित्रांकन में श्री बसंता कुमार दत्ता, तकनीकी अधिकारी 'ए', श्री गुरुबक्श लाल चोपड़ा, प्रशासनिक सहायक तथा लेख, कविता आदि में योगदान देने वाले आर. ए. सी. परिवार के समस्त सदस्यों के अतिरिक्त श्री नन्दन प्रसाद, सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं सदस्य राजभाषा संपादक मण्डल का अथक श्रम, प्रयास एवं योगदान विशेष रूप से सराहनीय है। समस्त लेखों, कविताओं, लघु कथाओं रूपी अलग-अलग मोतियों को एक ही धागे में पिरोकर निर्मित 'चयनिका' रूपी यह माला राजभाषा देवी के चरणों में प्रस्तुत है। विशेष क्या कहूँ, अंत में बस इतना ही कि-

भर्ती-मूल्यांकन-चयन मणि,
आर ए सी मणि-क्रमणिका।
यह राजभाषा में समर्पित,
लेखांजलि वही 'चयनिका' ।

विभय कुमार झा
प्रधान निदेशक (ए एफ एच क्यू)

आभार

गृह पत्रिका 'चयनिका' के ग्यारहवें अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। जिन अधिकारियों व कर्मचारियों ने पत्रिका प्रकाशन में अपना सहयोग दिया है मैं उन सब का आभार प्रकट करता हूं। इस पत्रिका प्रकाशन में संपादक मण्डल का योगदान प्रशंसनीय रहा है। हमारा उद्देश्य इस पत्रिका प्रकाशन के माध्यम से राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देना है। जहां तक लेखों का प्रश्न है हमने लेखक एवं लेखिकाओं से राजभाषा हिन्दी में विचार प्रकट कराने का प्रयास किया है। जिससे राजभाषा के प्रयोग में निरंतर वृद्धि सुनिश्चित की जा सके। पत्रिका प्रकाशन के दौरान निदेशक महोदय का मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन मिलता रहा है इस प्रकार निदेशक महोदय के विशेष मार्गदर्शन एवं संपादक मण्डल के अथक प्रयासों से चयनिका के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन संभव हो पाया है। पत्रिका प्रकाशन के माध्यम से हमने राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने का प्रयास किया है।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए इस केन्द्र के निदेशक महोदय, सभी लेखकों व राजभाषा कार्यान्वयन समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का विशेष आभार प्रकट करता हूं साथ ही आशा करता हूं कि भविष्य में भी आपका अपेक्षित सहयोग मिलता रहेगा। गृह पत्रिका प्रकाशन में उत्तरोत्तर निखार लाने के आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

आनंद

(डॉ. आनंद बल्लभ धौलाखंडी)

प्राक्कथन

भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र (आर॰ ए॰ सी॰) वैज्ञानिक प्रतिभा चयन एवं मूल्यांकन हेतु रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी॰ आर॰ डी॰ ओ॰) की रक्षा अनुसंधान विकास सेवा (डी॰ आर॰ डी॰ एस॰) के तहत वैज्ञानिकों की भर्ती एवं पदोन्नति संबंधी सेवाएं प्रदान करता है। भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र के कार्य का विस्तार संगठन आवश्यकता के आधार पर होता आ रहा है। अपने इस उत्तरदायित्व का यह केंद्र नियमपूर्वक समयबद्ध तरीके से निर्वहन करता आ रहा है। यह केंद्र रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के लिए योग्यतम वैज्ञानिकों का चयन करने के लिए हमेशा कृत संकल्प रहा है। योग्यतम वैज्ञानिकों का चयन इस केंद्र की प्राथमिकता रही है। डी॰ आर॰ डी॰ ओ॰ में वैज्ञानिकों की भर्ती एवं कार्यरत वैज्ञानिकों की अगले उच्चतर श्रेणी में पदोन्नति के लिए मूल्यांकन करना इस केंद्र की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है। आर॰ ए॰ सी॰ के द्वारा प्रतिभावान वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों की भर्ती एवं भविष्य में प्रगति हेतु मूल्यांकन करना हमारे लिए गर्व का विषय है। आर॰ ए॰ सी॰ इस कार्य को अपने सूत्र वाक्य यथार्थता, गोपनीयता व समयबद्धता के साथ करने के लिए हमेशा कृत संकल्प रहा है। इस अंक में प्रयोगशाला/स्थापनाओं में कार्यरत वैज्ञानिकों के मार्ग दर्शन हेतु मूल्यांकन साक्षात्कार की प्रक्रिया एवं नवीनतम तकनीकी संरचना का उल्लेख किया जा रहा है।

वैज्ञानिकों का मूल्यांकन :-

रक्षा अनुसंधान विकास सेवा (डी॰ आर॰ डी॰ एस॰) के वैज्ञानिकों की (श्रेणी 'बी' / 'सी' / 'डी' / 'ई') अगले पद पर पदोन्नति हेतु डी॰ आर॰ डी॰ ओ॰ के प्रमुख केन्द्रों जैसे बंगलौर, दिल्ली हैदराबाद, व पुणे में हर वर्ष मूल्यांकन बोर्डों का आयोजन किया जाता है। अलग-अलग विषयों में अर्हता प्राप्त अभ्यर्थियों की संख्या को देखते हुए साक्षात्कार बोर्डों का आयोजन अन्य जगहों जैसे बालासोर, चंडीगढ़ और देहरादून में भी किया जा सकता है। दिल्ली में साक्षात्कार बोर्डों का आयोजन आर॰ ए॰ सी॰ में होता है। मूल्यांकन बोर्डों का आयोजन आर॰ ए॰ सी॰ के अध्यक्ष अथवा प्रतिष्ठित वैज्ञानिक/तकनीकीविदों की सूची में से किसी एक सह-अध्यक्ष की अध्यक्षता में किया जाता है। बोर्डों में एक अध्यक्ष, दो कोर सदस्य/मूल सदस्यों के अलावा विषय से संबन्धित एक विभागीय विशेषज्ञ और दो बाहरी विशेषज्ञ होते हैं। सामान्यतः बाहरी विशेषज्ञों में एक किसी शैक्षणिक संस्थान से तथा दूसरा एक ऐसे वैज्ञानिक संस्थान से होता है, जिनके कार्यकलाप डी॰ आर॰ डी॰ ओ॰ कार्यों से मेल खाते हों ताकि साक्षात्कार बोर्डों में उनके शैक्षणिक आधार पर अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में अभ्यर्थियों के ज्ञान का भी मूल्यांकन किया जा सके। हर अभ्यर्थी के लिए उसकी प्रयोगशाला से निदेशक या उसका प्रतिनिधि मूल्यांकन बोर्ड में एक सदस्य होता है। अनु॰ जा॰/ ज॰ जा॰ के प्रतिनिधि को भी जरूरत पड़ने पर बोर्ड के सदस्यों द्वारा सामूहिक सहमति से चुना जाता है।

साक्षात्कार की प्रक्रिया :-

बोर्ड अध्यक्ष द्वारा प्रयोगशाला के निदेशक से अपने अभ्यर्थी/उम्मीदवार को सौपी गई जिम्मेदारियों के प्रकार और उसके योगदान के बारे में संक्षिप्त विवरण देने के लिए कहा जाता है। बोर्ड से यह अपेक्षा की जाती है कि वह वैज्ञानिक का उसी विषय में साक्षात्कार ले जो कि उसके ए पी ए आर में दर्शाया गया हो। वैज्ञानिक के बोर्ड कक्ष में दाखिल होने के बाद, बोर्ड अध्यक्ष उसके बायोडाटा की समीक्षा करता है और उसके बाद वैज्ञानिक को अपनी उपलब्धियों और भविष्य के कार्यों की रूपरेखा के बारे में संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण (प्रेजेंटेशन) के लिए आमंत्रित करता है। वैज्ञानिक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह केवल अपने व्यक्तिगत योगदान और उपलब्धियों को ही दर्शाए। प्रेजेंटेशन के बाद बोर्ड के सभी सदस्यों से कहा जाता है कि वे बारी-बारी से वैज्ञानिक का साक्षात्कार लें।

मूल्यांकन बोर्ड जिसमें सावधानी से चुने गए विभागीय तथा बाहरी विशेषज्ञ होते हैं, जिससे एक सामूहिक संतोषजनक निर्णय लेने में मदद मिलती है। कुछ परिस्थितियाँ ऐसी भी आती है जिनमें मूल्यांकन बोर्ड को समूहिक निर्णय लेने के लिए काफी सावधानी बरतनी पड़ती है।

(क) एक संयुक्त परियोजना में व्यक्ति के योगदान का सटीक निर्धारण करना होता है। एक बहुत ही सफल और प्रतिष्ठित परियोजना में एक व्यक्ति का योगदान बहुत कम भी हो सकता है।

(ख) कुछ अभ्यर्थी बहुत अच्छे वक्ता और उत्कृष्ठ प्रस्तुतकर्ता होते हैं। दूसरों में ऐसे गुण नहीं होते हैं। अच्छे भाषण देने की प्रतिभा कहीं अभ्यर्थी की असली योग्यता को न दबा दे।

अगर मूल्यांकन बोर्ड द्वारा वैज्ञानिक की जाँची गई कुल क्षमता वर्तमान कार्यकाल के लिए निर्धारित अंकों से मेल खाती है तो उसे पदोन्नति के लिए 'योग्य' घोषित किया जाता है अन्यथा वह 'अभी योग्य नहीं' घोषित किया जाता है।

अगर अभ्यर्थी चाहे तो वह हिन्दी को साक्षात्कार का माध्यम बना सकता है।

पीयर रिव्यू :-

डी॰ आर॰ डी॰ एस॰ के वैज्ञानिकों की श्रेणी 'एफ' से 'जी' और 'जी' से 'एच' में पदोन्नति प्रतिवर्ष 01 जुलाई से एफ॰ सी॰ एस॰ प्रणाली के अंतर्गत आंतरिक छँटनी समिति द्वारा योग्य उम्मीदवारों की छँटनी कर पीयर समिति द्वारा उनके वार्षिक कार्य निष्पादन रिपोर्टों के मूल्यांकन के आधार पर की जाती है। मूल्यांकन हेतु न्यूनतम सेवावधि 5 वर्ष होती है।

अर्हक सेवा में तीन महीने की छूट उन वैज्ञानिकों को दी जा सकती है जिन्होने किन्ही अपरिहार्य कारणों से 01 जुलाई के बाद कार्यभार ग्रहण किया हो। कार्यकाल में उन वैज्ञानिक 'एफ' को 01 साल की छूट दी जाती है जिन्होंने लगातार उत्कृष्ट की ग्रेडिंग प्राप्त की हो अर्थात् (90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक अपने चार उतरोत्तर ए॰ पी॰ ए॰ आर॰ में प्राप्त किए हों)।

पीयर समिति वैज्ञानिकों के वर्तमान ग्रेड में उनकी वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास कार्य की गुणवत्ता, निर्दिष्ट कार्य का सही समय पर समापन, प्रबंध क्षमता, नेतृत्व गुण, चुनौतियों से जूझने की प्रेरणा, कार्य के प्रति समर्पण, उच्च स्तर के कार्य करने की क्षमता आदि योग्यताओं का समग्र आकलन करती है। पीयर समिति वैज्ञानिक श्रेणी 'एफ' से 'जी' पद में पदोन्नति के लिए सिफारिश भी करती है।

यही समिति वैज्ञानिक 'जी' से वैज्ञानिक 'एच' (उत्कृष्ट वैज्ञानिक) के लिए पदोन्नत होने जा रहे वैज्ञानिकों का भी मूल्यांकन करती है, जिन्होने अपनी श्रेणी में 03 साल की नियत सेवा पूरी कर ली हो और जिनकी सिफारिश आंतरिक छँटनी समिति ने उनकी योग्यता, उपलब्धियों, नेतृत्व और प्रबंधन गुणों के आधार पर की है।

यही समिति उत्कृष्ट वैज्ञानिकों को प्रतिष्ठित वैज्ञानिक (डी॰ एस॰) की श्रेणी में पदोन्नत करने की भी सिफारिश करती है।

आधुनिक मूल्यांकन प्रविधियों को अपनाने के लिए भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र ने नवीनतम तकनीकी संरचना तैयार की है, जैसे - आवेदनों को ऑनलाइन जमा करने की सुविधा, आवेदन पत्रों की कम्प्यूटर आधारित छँटनी के साथ-साथ आर॰ ए॰ सी॰ ने दूरस्थ वार्तालाप साक्षात्कार तथा आपसी संवाद (इंटरेक्शन) विशेषतः अप्रवासी भारतीयों के लिए विडियो कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा उपलब्ध कराई है। विदेश में कार्यरत वैज्ञानिकों के व्यस्त कार्यक्रमों को देखते हुए तथा विशेषज्ञों, निदेशकों की तत्कालीन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उनके लिए आडियो-विडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा साक्षात्कार प्रस्तुतीकरण करने की आधुनिक तकनीकी सुविधा स्थापित है। इसके अलावा इस केंद्र में वेब आधारित सूचना प्रणाली बखूबी उपयोग की जा रही है।

भर्ती एवं मूल्यांकन पद्धति को रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डी॰ आर॰ डी॰ ओ॰) की आवश्यकता के आधार पर आर॰ ए॰ सी॰ के समग्र कार्य प्रणाली को और अधिक कुशल बनाने के लिए इस केंद्र द्वारा स्पार्क साफ्टवेयर तैयार किया जा रहा है जिससे वैज्ञानिक कार्य निष्पादन मापन के तरीकों में व्यापक सुधार लाया जा सकेगा। मूल्यांकन पद्धति का संगठन की आवश्यकता के अनुरूप और अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए आर॰ ए॰ सी॰ द्वारा स्वनिर्मित साफ्टवेयर शोध निष्कर्षों के आधार पर भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र के समेकित कार्य को सुगमता तथा कुशलता से करने में सहायता मिलेगी।

मुझे गृह पत्रिका 'चयनिका' के माध्यम से भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र की गतिविधियों की सामान्य जानकारी को संगठन की विभिन्न प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं तक पहुंचाने में अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। राष्ट्र के समग्र विकास में राजभाषा हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस केंद्र की गतिविधियों का राजभाषा हिन्दी में प्रचार-प्रसार करना पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है। जिन अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस अंक के प्रकाशन में अपना योगदान दिया है वे सब बधाई के पात्र है।

(सुशील कुमार वर्मा)
विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख/कविताएँ	लेखक	पृष्ठ संख्या
	सामान्य खण्ड		
1.	मूल्यांकन साक्षात्कार परीक्षा की मौलिक विधियां	सचिन सिंह	2
2.	भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र : प्रमुख कार्य	सुमेधा मेहता एवं डॉ. ए.बी. धौलाखंडी	5
3.	वैज्ञानिक 'बी' के लिए: सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा	सुचिका चावला	8
4.	मानव संसाधन की चुनौतियां	जसबीर सिंह	12
5.	हिन्दी भाषा का संरक्षण व विकास	नन्दन प्रसाद	16
6.	भारत की प्रगति में 'फिट इंडिया' पहल का महत्त्व	चेतना पंत	19
7.	कार्यस्थल पर आध्यात्मिकता	डॉ. राजेश कुमार त्रिपाठी	21
8.	मानव विकास के मौलिक सिद्धांत	बिपिन पारचा	26
9.	समुद्री खनन	पूरण सिहं राठौड़	28
10.	बदलाव जीवन अकाट्य सत्य	प्रत्यक्ष शर्मा	30
11.	गिरते मानवीय मूल्यों की सुरक्षा	हरेन्द्र सिंह	32
12.	इंटरनेट सर्वोत्तम-विश्वकोश	दिनेश कुमार	34
13.	गांधी के विचारों की प्रासंगिकता	शशांक चन्द्रा	37
14.	इंसानियत का पैगाम	अबरार आलम	39
15.	एक महात्मा का आशीर्वाद	बिधिचन्द्र शर्मा	40
	कविता खण्ड		
1.	सुजाता	विभय कुमार झा	43
2.	साँटी	विभय कुमार झा	46
3.	जीवन	डॉ. ए.बी. धौलाखंडी	50
4.	मेरा देश मेरा परिवार	सूचिका चावला	52
5.	समय टल जाएगा	बिपिन पारचा	53
6.	निर्णायक मैं नहीं	इला नेगी	54
7.	जिन्दगी तेरा एतबार	इला नेगी	55
8.	संघर्ष-प्रेरणा	गुरबक्श लाल चोपड़ा	56
9.	रक्षा अनुसंधान विकास	सुनील कुमार सिंह	58
10.	माटी चंदन है	पूरण सिहं राठौड़	59
11.	टिक-टॉक	आकाश गुप्ता	60
	कार्मिक खण्ड		
1.	भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र में राजभाषा की गतिविधियां		61
2.	कार्मिक समाचार		64

मूल्यांकन साक्षात्कार परीक्षा की मौलिक विधियां

सचिन सिंह

मूल्यांकन साक्षात्कार शिक्षा अर्जन की कसौटी है। यद्यपि प्राचीन शिक्षा पद्धति में सब पढ़े सब बढ़े जैसी प्रणाली न थी और न ही मूल्यांकन की मौलिक रीति-नीति थी। आज विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं के मूल्यांकन के लिए अनिवार्य परीक्षाओं का आयोजन मौलिक रीति से होता है।

(1) लिखित परीक्षा - लिखित परीक्षा में विवरणात्मक शैली का प्रयोग होता है।

(2) प्रयोगात्मक परीक्षा - प्रयोगात्मक परीक्षा में साक्षात्कार के दौरान प्रयोगात्मक विधियों के माध्यम से परीक्षणों की पुष्टि की जाती है।

(3) साक्षात्कार परीक्षा - साक्षात्कार परीक्षा में मौलिक प्रश्नों के जवाब दिये जाते हैं।

इस प्रचलित रीति का दायरा परीक्षार्थी की स्मरण शक्ति को जाँचने-परखने जानने तक सीमित रहता है अर्थात् इन प्रचलित परीक्षाओं के द्वारा विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति का ही मूल्यांकन हो पाता है। इसी आधार पर उन्हें प्रथम, द्वितीय, तृतीय मान लिया जाता है।

इस प्रकार इन परीक्षाओं से अभ्यर्थियों के व्यक्तित्व के अनेक गुण न तो प्रकाशित हो पाते हैं और न जाँचने-परखने की जरुरत समझी जाती है।

साक्षात्कार परीक्षा : सामान्यतया दो या दो से अधिक विशेषज्ञता-प्राप्त शिक्षाविदों के बोर्ड द्वारा रोजगार या किसी विशेष उद्देश्य से आमने-सामने की गई बात-चीत को साक्षात्कार परीक्षा कहा जाता है। साक्षात्कार में मौखिक प्रश्न पूछे जाते हैं जिसमें उम्मीदवार विषय विशेषज्ञों के प्रश्नों, विचारों और प्रतिक्रियाओं को लिखने के बजाय उनके सम्मुख रह कर बात-चीत के माध्यम से उत्तर देता है।

साक्षात्कार विधि : इस विधि के प्रयोग में साक्षात्कारकर्ता के लिए साक्षात्कार से संबंधित विषय में दक्षता, विषय-विशेषज्ञता का ज्ञान होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेषज्ञता के अभाव में साक्षात्कार पक्षपातपूर्ण बन सकते हैं।

सामान्यतया साक्षात्कार के लिए निम्नलिखित मौलिक विधियां अपनाई जाती हैं। जो निम्नवत हैं:

1. **चयनात्मक साक्षात्कार** : जब साक्षात्कार का प्रयोग किसी आजीविका अथवा रोजगार हेतु चयन के लिए किया जाता है तो इस प्रकार के साक्षात्कार को चयनात्मक साक्षात्कार कहा जाता है। इस तरह के साक्षात्कार में साक्षात्कार बोर्ड द्वारा साक्षात्कार प्रदाता से पद से संबंधित विषयों में प्रश्न पूछे जाते हैं। इस प्रकार साक्षात्कारकर्ता अभ्यर्थी की कार्यक्षमता, योग्यता, आचरण आदि के आधार पर नौकरी के लिए उम्मीदवार की पात्रता सुनिश्चित करता है।

2. **सूचना एवं तथ्य आधारित साक्षात्कार मूल्यांकन :** इस प्रकार के साक्षात्कारों में संबंधित विषय पर विभिन्न उम्मीदवारों से सूचनाओं की पुष्टि तथ्यों के आधार पर की जाती है इस प्रकार के साक्षात्कार का मुख्य

उद्देश्य सूचना एवं शोध समस्याओं के प्रस्तावित समाधान के बारे में विस्तृत ब्यौरा तैयार करना होता है। ऐसे साक्षात्कारों का उद्देश्य समस्याओं का तुरन्त समाधान पा लेना होता है। इस प्रकार के साक्षात्कारों का उद्देश्य उम्मीदवारों से तथ्यों को संकलित कर के अपूर्णताओं, न्यूनताओं या कमियों की पूर्ति करना है। कुछ तथ्य अन्य विधियों से प्राप्त नहीं हो पाते हैं। उन उम्मीदवारों से पहले एकत्र की गई सूचनाओं की पुष्टि करने के लिए तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार की विधि अपनाई जाती है।

3. संरक्षित साक्षात्कार : इस प्रकार के साक्षात्कार में साक्षात्कार बोर्ड उम्मीदवारों से एक सुनिश्चित विषय में निर्धारित प्रश्नों को एक निश्चित क्रम में पूछता है। उम्मीदवारों के उत्तरों को मानवीकृत फॉर्म में नोट करता है। इस तरह के साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता एक खास निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश करता है। तत्पश्चात उम्मीदवार की पात्रता सुनिश्चित करता है।

4. असंरक्षित साक्षात्कार : असंरक्षित साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता उम्मीदवारों से जो प्रश्न पूछतें हैं वे पूर्व-निर्धारित नहीं होते हैं और न ही किसी निश्चित क्रम में प्रश्न पूछे जाते हैं। इस प्रकार के साक्षात्कार में उम्मीदवारों को अपनी प्रतिक्रिया को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है। साक्षात्कार जितना लचीला होता है, उसका विश्लेषण करना उतना ही कठिन हो जाता है।

5. साक्षात्कार बोर्डों की भूमिका : साक्षात्कार बोर्ड निष्पक्ष साक्षात्कार किये जाने के लिए निम्न प्रकार से अपनी भूमिका निर्वहन करते हैं

क. साक्षात्कारकर्ता अपनी बात को स्पष्ट शब्दों में रखता है।

ख. साक्षात्कारकर्ता उम्मीदवारों की अच्छी बुरी प्रतिक्रिया तथा कमियों को शांतिपूर्वक सुनते हैं।

ग. साक्षात्कारकर्ता उम्मीदवारों की बातों में रूचि लेकर तथा सद्भावपूर्ण व्यवहार बना कर अपने साक्षात्कार बोर्डों का संचालन करते हैं। इस प्रकार उम्मीदवारों को तनाव मुक्त करने का प्रयास करते हैं।

घ. साक्षात्कारकर्ता उम्मीदवारों से यह उम्मीद नहीं करते की उम्मीदवार के पास हर पूछे गये प्रश्न का उत्तर हो, बल्कि यह देखा जाता है कि प्रश्न के प्रति उसकी क्या प्रतिक्रिया है और तार्किक उत्तर ढूँढने की कितनी क्षमता है। अत: उम्मीदवारों से संबंधित विषय में अधिक जानकारी, व्यापक दृष्टिकोण तथा गहन समझ की अपेक्षा की जाती है।

6. साक्षात्कार की तैयारी : साक्षात्कार के लिए उम्मीदवारों को निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए।

- सर्वप्रथम बोर्ड का अभिवादन करें।
- जिस पद के लिए आवेदन किया है उससे संबंधित विषय व कार्यों के बारे में ज्ञान प्राप्त करें।
- अपनी विशेषज्ञता के ज्ञान को ताजा करें तथा अपने अध्ययन विषयों को दोहरायें।
- अपनी योग्यताओं एवं कमियों की सूची तैयार करें।
- अपने प्रलेख, संबंधित दस्तावेज़, प्रमाण-पत्रों तथा साक्षात्कार के लिए आमंत्रण-पत्र सहित फोल्डर तैयार करें।

- साक्षात्कार के समय ऐसे कार्यों में अपना समय बर्बाद न करें जिसमें आपका योगदान नहीं के बराबर हो या संबंधित विषय पर न हो।
- अतिशयोक्ति-पूर्ण कथनों या तथ्यों का प्रयोग न करें।
- समय सीमा का ध्यान रखें।
- साक्षात्कार से पहले रात को अच्छी नींद लें। प्रातः काल उठें और स्वच्छ एवं साफ कपड़े और जूते पालिश किये हुए ही पहनना सुनिश्चित करें।
- साक्षात्कार स्थल पर कम से कम आधा घंटा पहले पहुँचना सुनिश्चित करें।
- साक्षात्कार कक्ष में प्रवेश करते समय दरवाज़ा धीरे से खोलें, अभिवादन करें तथा बाहर आते समय धीरे से बंद करें।
- साक्षात्कार देते समय भली भांति सुनें, सोचें, फिर उत्तर दें।
- यदि आपने प्रश्न को नहीं सुना अथवा समझ नहीं पाए तो प्रश्न को दोहराने हेतु निवेदन करें। अंदाजा लगा कर गलत उत्तर न दें।
- यदि आपको प्रश्न का उत्तर नहीं आता है तो स्पष्ट रूप से बता दें कि आपको उत्तर नहीं आता है।
- आपका उत्तर संक्षिप्त, स्पष्ट और सरल होना चाहिए।
- पूरे साक्षात्कार के दौरान शिष्टता बनाये रखें।
- धन्यवाद, माफ़ कीजिए, जी ठीक है जैसे शब्दों का उचित अवसरों पर प्रयोग करें।
- साक्षात्कार की समाप्ति पर साक्षात्कार बोर्ड का मुस्कुरा कर धन्यवाद करें।

साक्षात्कार मूल्यांकन के लिए न तो कोई पाठ्यक्रम है और न ही कोई निश्चित नियम। छात्र-छात्राओं के लिए पूरे शिक्षा सत्र में विवरणात्मक परीक्षा पद्धति अपनाई जाती है जो परीक्षार्थियों को उत्तीर्ण करवाने तक सीमित होती है। साक्षात्कार की समग्र मौलिक रीति से विद्यार्थी अनभिज्ञ ही होते हैं। सामान्यत: शैक्षणिक संस्थानों में परीक्षाएं, लिखित मौखिक एवं प्रायोगिक तीन तरह से होती है। उनके पास विषय के सम्पूर्ण ज्ञान को परखने के लिए ऑब्जेक्टिव या वस्तुनिष्ठ परीक्षण नहीं होता है। शैक्षणिक संस्थानों में किसी परीक्षा के लिए अधिकांशत: विवरणात्मक पद्धति ही अपनाई जाती है। इसका उल्लेख इस लेख में इसलिए किया जा रहा है कि शैक्षणिक संस्थानों में कम से कम स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर साक्षात्कार मूल्यांकन एक एच्छिक विषय के रूप में होना चाहिए। ताकि उन्हें विषय संबंधी समग्र ज्ञान की जानकारी के साथ-साथ भविष्य का मार्गदर्शन भी प्राप्त हो सके।

*****

अहिंसा एक विज्ञान है। विज्ञान के शब्दकोश में 'असफलता' का कोई स्थान नहीं।

- महात्मा गांधी

भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र : प्रमुख कार्य

सुमेधा मेहता एवं डॉ. ए.बी. धौलाखंडी

भर्ती और मूल्यांकन केंद्र आर ए सी (RAC) की स्थापना पत्र संख्या 96549 / आर एण्ड ए सी (R & AC) / कार्मिक (Pers)-3/3748 / डी (आर एण्ड डी) D (R & D) दिनांक 23 जुलाई 1985 के द्वारा 23 जुलाई 1985 के दिन की गई थी जब डीआरडीओ को संघ लोक सेवा आयोग यू पी एस सी (UPSC) से डीआरडीएस कैडर में भर्ती के लिए छूट दी गई थी।

आर.ए.सी. के कर्तव्यों का चार्टर

- डीआरडीओ में वैज्ञानिकों (समूह 'ए' वर्ग/राजपत्रित पद) की भर्ती।
- अगले उच्चतर ग्रेड में पदोन्नति के लिए वैज्ञानिकों का मूल्यांकन।
- डीआरडीओ के अनुसंधान और प्रशिक्षण योजना और सेना, नौसेना और वायु सेना के स्नातकोत्तर प्रशिक्षण योजना के तहत उच्च अध्ययन पाठ्यक्रम (एमई/एमटेक) के लिए उम्मीदवारों का चयन।
- चेयरमैन डीआरडीओ और सचिव, डिपार्टमेंट ऑफ़ डिफेन्स आर एंड डी द्वारा निर्दिष्ट अन्य कार्य।

भर्ती और मूल्यांकन केंद्र (आर.ए.सी.) भर्ती, मूल्यांकन और वैज्ञानिकों के स्नातकोत्तर प्रशिक्षण से संबंधित कार्यक्रमों को पूरा करके डीआरडीओ को समर्पित सेवा प्रदान करता है। आरएसी विभिन्न डीआरडीओ प्रयोगशालाओं को गुणवत्ता-पूर्ण मानव संसाधन उपलब्ध कराता है, जिससे उन्हें विभिन्न आरएंडडी परियोजनाओं को पूरा करने में मदद मिलती है। आरएसी अपने प्रमुख कार्यों के रूप में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से विभिन्न स्तरों पर उज्ज्वल वैज्ञानिक प्रतिभा का उपयोग और उन्हें बनाए रखने के लिए चुनौतियों का निर्वहन करता है। आरएसी ने कई वर्षों से वैज्ञानिकों की भर्ती और मूल्यांकन के लिए कार्य प्रणाली को सुव्यवस्थित किया है और इसके तरीकों और प्रक्रियाओं की लगातार समीक्षा भी की है। आरएसी के मुख्य कार्य हैं: वैज्ञानिकों की भर्ती, वैज्ञानिकों की पदोन्नति हेतु मूल्यांकन, आर एंड टी और पीजीटी योजनाओं के माध्यम से स्नातकोत्तर प्रशिक्षण के लिए वैज्ञानिकों और सैनिक अधिकारियों का चयन । भर्ती और मूल्यांकन केंद्र (आरएसी) के प्रमुख कार्यों का विवरण निम्नलिखित है :

1. वैज्ञानिकों की भर्ती

वैज्ञानिकों की भर्ती वैधानिक नियम और आदेश एसआरओ में निहित प्रावधानों के अनुसार की जाती है। एसआरओ सीधी भर्ती (आयु, आवश्यक और वांछनीय योग्यता, अनुभव आदि) के लिए व्यापक नियमों को निर्धारित करता है। आरएसी द्वारा अपनाई गई छंटनी (शॉर्टलिस्टिंग) और चयन की विस्तृत प्रक्रिया वर्षों से निरंतर आंतरिक समीक्षाओं के परिणामस्वरूप बदलती रही है। वैज्ञानिकों को तीन प्रक्रियाओं के माध्यम से भर्ती किया जाता है: सीधी भर्ती (साइंटिस्ट बी / प्रवेश स्तर पर), पार्श्व भर्ती (अनुभव के आधार पर विभिन्न स्तरों पर) और सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा (सीधी भर्ती के पदों का 10%)।

खुले विज्ञापन के माध्यम से प्रवेश / वैज्ञानिक बी स्तर पर सीधी भर्ती

वैज्ञानिक बी की सीधी भर्ती विज्ञान और इंजीनियरिंग के प्रमुख विषयों में देश भर में प्रतिस्पर्धा के आधार पर की जाती है। आवेदन खुले विज्ञापन के माध्यम से आमंत्रित किए जाते हैं। 2016 के बाद से, आरएसी साक्षात्कार के लिए उम्मीदवारों को छंटनी (शॉर्टलिस्ट) करने के लिए संभावित उम्मीदवारों के ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट) स्कोर का उपयोग कर रहा है। इस विधि से साक्षात्कार के लिए उम्मीदवारों की अच्छी संख्या प्राप्त नहीं हुई। नतीजन, उम्मीदवारों की छंटनी (शॉर्टलिस्ट) करने की विधि को संशोधित किया गया है। अब उम्मीदवारों को गेट स्कोर के आधार पर पहले शॉर्टलिस्ट किया जाता है, फिर भारतीय इंजीनियरिंग सेवा आई ई एस (IES) परीक्षा की पद्धति के आधार पर एक वर्णनात्मक लिखित परीक्षा में उपस्थित होना आवश्यक है। उम्मीदवारों को लिखित परीक्षा में प्रदर्शन के आधार पर साक्षात्कार के लिए शॉर्टलिस्ट किया जाता है । इससे साक्षात्कार के लिए अधिक संख्या में अभ्यर्थी उपस्थित हुए। गेट (GATE) के अंतर्गत नहीं आने वाले विषयों में रिक्तियों के लिए, वैज्ञानिकों की भर्ती आवश्यक शैक्षिक योग्यता में अंकों के आधार पर शॉर्टलिस्टिंग व उसके बाद साक्षात्कार के माध्यम से की जाती है।

खुले विज्ञापन के माध्यम से विभिन्न स्तरों पर पार्श्व भर्ती

अनुभवी और योग्य वैज्ञानिकों / इंजीनियरों को इस योजना के तहत वैज्ञानिक सी के स्तर से वैज्ञानिक एच तक भर्ती किया जाता है। यह भर्ती (लेटरल एंट्री) पेशेवर योग्यता और प्रासंगिक विशिष्ट क्षेत्र में अनुभव की गुणात्मक आवश्यकताओं (क्यूआर) पर आधारित है। पदों का चयन साक्षात्कार में प्रदर्शन के आधार पर होता है।

सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा

यह योजना डीआरडीओ के तकनीकी कर्मचारियों को कैरियर के विकास के अवसर प्रदान करती है, जिन्होंने वैज्ञानिक बी के लिए न्यूनतम अर्हता प्राप्त की है। यह योजना केवल विभागीय उम्मीदवारों के लिए है। रिक्तियों की संख्या आम तौर पर सीधी भर्ती का 10% होती है। उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। प्राप्त आवेदनों की जांच की जाती है। योग्य उम्मीदवारों को लिखित परीक्षा- व्यापक अनुसंधान योग्यता परीक्षा में उपस्थित होने के लिए बुलाया जाता है। व्यापक शोध योग्यता परीक्षा और साक्षात्कार में प्रदर्शन के आधार पर चयन किया जाता है।

2. पदोन्नति के लिए वैज्ञानिकों का मूल्यांकन

आरएसी लचीली पूरक योजना (एफसीएस) के तहत एसआरओ के आधार पर वैज्ञानिकों का अगले उच्च ग्रेड में पदोन्नति के लिए मूल्यांकन का कार्य करता है। डी. आर. डी. ओ. के वैज्ञानिक डी. आर. डी. एस. योजना के अंतर्गत आते हैं। डी. आर. डी. एस. ग्रेड वैज्ञानिक बी, सी, डी, ई, एफ, जी, एच (ओ. एस.) तथा डी. एस. हैं। अगले उच्चतर ग्रेड में पदोन्नति के लिए मूल्यांकन का तरीका वैज्ञानिक के ग्रेड पर निर्भर करता है। साइंटिस्ट बी से ई तक को असेसमेंट बोर्ड के जरिए पदोन्नत किया जाता है, जबकि वैज्ञानिक 'जी' से डी. एस. तक के पदों पर पीयर कमेटी के जरिए पदोन्नत किया जाता है। पदोन्नति मूल्यांकन के लिए निर्धारित रेजिडेंसी अवधि न्यूनतम अंकों पर आधारित होती है, अर्थात अर्हकारी सेवा और उसके बाद एक विधिवत गठित मूल्यांकन बोर्ड / पीयर कमेटी की सिफारिश।

बी, सी, डी और ई के ग्रेड में डीआरडीएस वैज्ञानिकों को निर्धारित रेजिडेंसी (ए. पी. ए. आर. अंकों पर आधारित) अवधि के पूरा होने पर एसेसमेंट बोर्ड द्वारा पदोन्नति के लिए मूल्यांकन किया जाता है और फिट पाए गए उम्मीदवारों को अगले उच्च ग्रेड में पदोन्नत किया जाता है। जो उम्मीदवार सीमांत होते हैं, और मूल्यांकन के

वर्ष में पदोन्नति के लिए फिट नहीं पाए जाते हैं, उन्हें अगले वर्ष से फिर से मूल्यांकन बोर्ड का सामना किए बिना पदोन्नति के लिए सिफारिश की जाती है। पदोन्नति हर साल 01 जुलाई से प्रभावी होती है।

वैज्ञानिक एफ और जी को पदोन्नति के लिए एक आंतरिक स्क्रीनिंग समिति के सामने उपस्थित होना होता है। इसके बाद, वैज्ञानिक एफ, जी और एच की पदोन्नति की सिफारिश एक पीयर कमेटी द्वारा की जाती है। वैज्ञानिक 'एफ' की पदोन्नति हर साल 01 जुलाई से प्रभावी होती है। वैज्ञानिक जी और एच की पदोन्नति उच्च पद के प्रभार ग्रहण करने की तिथि से प्रभावी होती है।

3. आरएंडटी / पीजीटी योजना के तहत स्नातकोत्तर प्रशिक्षण हेतु चयन

आरएसी पोस्ट ग्रेजुएट प्रशिक्षण के लिए डीआरडीओ वैज्ञानिक और सैनिक अधिकारियों का चयन करता है, जो मुख्य रूप से मानव संशाधन विकास (एचआरडी) निदेशालय, डीआरडीओ मुख्यालय की एक योजना है। अनुसंधान और प्रशिक्षण (आर एंड टी) योजना डीआरडीओ वैज्ञानिकों को प्रायोजित कर उच्च प्रतिष्ठा के संस्थानों में विभिन्न इंजीनियरिंग / प्रौद्योगिकी विषयों में एम.ई / एम.टेक (M.E / M.Tech) करने के लिए है। पोस्ट ग्रेजुएट ट्रेनिंग (पीजीटी) योजना सैनिक अधिकारियों (सेना, वायु सेना और नौसेना) को प्रायोजित कर उच्च प्रतिष्ठा के संस्थानों में विभिन्न इंजीनियरिंग / प्रौद्योगिकी विषयों में एम.ई / एम.टेक (M.E / M.Tech) करने के लिए है। सेवारत वैज्ञानिकों / सैनिक अधिकारियों से आवेदन मांगे जाते हैं, इनकी जांच की जाती है और पात्र उम्मीदवारों को साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। साक्षात्कार बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षा / प्रशिक्षण के लिए उम्मीदवारों का चयन करता है।

*****

विकासशील विज्ञान

सत्याग्रह के विषय में मेरा ज्ञान दिनोंदिन बढ़ रहा है। मेरे पास जरूरत के वक्त मार्गदर्शन के लिए कोई पाठ्यपुस्तक नहीं होती, गीता तक नहीं होती जिसे मैं अपना कोश मानता हूं। मेरी धारणा का सत्याग्रह एक विज्ञान है जो अभी विकास की प्रक्रिया में है। हो सकता है कि जिसे मैं विज्ञान मान रहा हूं, वह विज्ञान सिद्ध ही न हो पाए और अगर पागल नहीं तो मात्र किसी मूर्ख का सोच और कारगुजारी ही साबित होकर रह जाए।

संभव है कि सत्याग्रह की सच्चाई पर्वतों जैसी प्राचीन निकले। लेकिन यह अभी तक विश्व समस्याओं, और खासकर युद्ध की भीषण समस्या, के समाधान में किसी काम का स्वीकार नहीं किया गया है। हो सकता है कि इसमें जो नयी बात मानी जा रही है, उसका युद्ध की समस्या के समाधान में कोई वास्तविक महत्व ही सिद्ध न हो पाए। यह भी हो सकता है कि जिन्हें सत्याग्रह अर्थात अहिंसा की सफलताएं माना जा रहा है, वे वस्तुतः सत्य और अहिंसा की सफलताएं न होकर हिंसा के भय से उत्पन्न सफलताएं हों। ये संभावनाएं सदा मेरे समक्ष रही हैं। मैं लाचार हूं। मुझे अपनी प्रार्थना का जो उत्तर भगवान से मिलता है, मैं अनुसरण के लिए वही राष्ट्र को प्रस्तुत कर देता हूं; इसे यों भी कह सकते हैं कि मैं हर समय भगवान की सेवा में उसका हुक्म बजा लाने के लिए प्रस्तुत रहता हूं।

- महात्मा गांधी

वैज्ञानिक 'बी' के लिए सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा

सूचिका चावला

यह केन्द्र, डी आर डी ओ तथा आडा के लिए विज्ञान एवं इंजीनियरिंग से संबन्धित विविध विषयों में अर्हता प्राप्त वैज्ञानिकों की विभिन्न योजनाओं जैसे कि एल डी सी ई, सीधी भर्ती, वैज्ञानिक प्रवेश परीक्षा, सेट, लेटरल आदि के तहत वैज्ञानिकों की भर्ती करता है। आर ए सी ने वर्ष 2017 में आई एस ओ 9001:2015 के तहत अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए मान्यता भी प्राप्त कर ली है।

सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा (एल डी सी ई) के तहत डी आर डी एस में तकनीकी कैडर के कर्मियों की वैज्ञानिक 'बी' पद में प्रवेश को सुनिश्चित करने के लिए एक रूप-रेखा तैयार की गई है। एस आर ओ के मुताबिक वैज्ञानिक 'बी' पद के लिए कुल जारी रिक्तियों में से 10% अभ्यर्थियों की भर्ती एल डी सी ई के माध्यम से की जाती है। एल डी सी ई के माध्यम से भर्ती की शुरुआत वर्ष 1988 में हुई थी, जिसमें 41 रिक्तियों में से 34 उम्मीदवारों का चयन किया गया। समय के साथ इस भर्ती के तहत सक्षम अधिकारी की मंजूरी के साथ इस प्रक्रिया में कई संशोधन हुए हैं। जिसमें विषय आधारित परीक्षा पद्धति के बजाय एक समान व्यापक अनुसंधान योग्यता परीक्षा (सी आर ए टी) पद्धति को अपनाया गया है तथा वर्ष 2017 से ऑफ लाइन आधारित परीक्षा के बजाय ऑनलाइन परीक्षा की भी शुरुआत की गई है।

1. **प्रक्रिया:-**

एल डी सी ई के तहत, डी आर डी ओ मुख्यालय के डी एच आर डी द्वारा रिक्तियाँ जारी होने के साथ गतिविधियां शुरू होती है। लिखित परीक्षा तथा साक्षात्कार के बाद आर ए सी अध्यक्ष तथा अध्यक्ष डी आर डी ओ द्वारा अनुमोदित परिणामों को डी आर डी ओ, डी ओ पी मुख्यालय को भेजने के उपरांत संबन्धित गतिविधियां पूर्ण होती है। इन गतिविधियों को निम्नलिखित उपप्रक्रियाओं में विभाजित किया गया है।

(क) **रिक्तियों को जारी करना :** डी आर डी ओ मुख्यालय के डी एच आर डी निदेशालय द्वारा इंजीनियरिंग और गैर इंजीनियरिंग दो प्रमुख श्रेणियों के तहत रिक्तियों का विषयवार पत्र जारी किया जाता है। एल डी सी ई के तहत इंजीनियरिंग तथा गैर इंजीनियरिंग के अंतर्गत स्वीकार्य प्रमुख विषयों की सूची भी डी एच आर डी द्वारा जारी की जाती है।

(ख) **आवेदन पत्रों की प्राप्ति :** एल डी सी ई के तहत डी आर टी सी कैडर के लिए जारी की गई रिक्तियों का विज्ञापन आर ए सी की द्रोणा वेबसाइट पर जारी किया जाता है जिसके अंतर्गत रिक्तियों के माप-दंड की सूचना दी जाती है तथा उम्मीदवारों को ऑनलाइन आवेदन करने की सुविधा दी जाती है। उम्मीदवारों को यह भी सूचित किया जाता है कि आवेदन पत्र केवल प्रयोगशाला प्रमुख / निदेशक द्वारा विधिवत अग्रेषित होने पर ही स्वीकार किये जाते है।

(ग) **आवेदन पत्रों की जांच :** आर ए सी में प्राप्त सभी आवेदन पत्रों की एस आर ओ के तहत अनुमोदित योग्यता मानदंडों के आधार पर जांच की जाती है, जिसमें डिग्री का विषय, डिग्री की श्रेणी, प्राप्त डिग्री के विश्वविधालय की मान्यता, कुल सेवा अवधि, डी आर डी ओ द्वारा एल डी सी ई के तहत

अब तक जारी विज्ञापनों में से कितने पूर्व अवसरों का लाभ उठाया गया है का उल्लेख भी होता है। यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि आवेदन पत्र प्रयोगशाला निदेशक / प्रमुख द्वारा अग्रेषित न करने पर आवेदन पत्रों पर विचार नहीं किया जाता ।

(घ) **परीक्षा आयोजन :** निर्धारित मानदंडों के अनुसार पात्र उम्मीदवारों को एल डी सी ई ऑनलाइन परीक्षा के लिए व्यापक अनुसंधान (एपटिट्यूड़ टेस्ट) के तहत चार अलग-अलग केन्द्रों जैसे बेंगलोर, दिल्ली, हैदराबाद और पुणे में उपस्थित होने की अनुमति दी जाती है। परीक्षा अवधि 2 घंटा तथा प्रश्न पत्र 300 अंक का होता है। वर्तमान परीक्षा का मुख्य उद्देश्य उम्मीदवारों के अनुसंधान योग्यता, संज्ञानात्मक क्षमताओं और उम्मीदवारों के व्यवहार-कौशल का आकलन करना है।

(ङ) **उम्मीदवारों की छंटनी :** पूर्व अनुमोदित छंटनी मानदंडों के अनुसार साक्षात्कार में उपस्थित होने वाले उम्मीदवारों की संख्या लिखित परीक्षा वरीयता क्रम में रिक्तियों के 1:4 के अनुपात में सीमित होती है, जिसके आधार पर उम्मीदवारों को साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। साक्षात्कार से पूर्व उम्मीदवारों को अपने आवेदन पत्र विस्तृत जीवनवृत्त के साथ पुन: प्रयोगशाला निदेशक / प्रमुख के द्वारा अग्रेषित करवा कर भेजना अनिवार्य है।

(च) **साक्षात्कार :** अलग-अलग विषयों में जारी रिक्तियों के आधार पर इंजीनियरिंग तथा गैर-इंजीनियरिंग के लिए अलग-अलग साक्षात्कार आयोजित किये जाते हैं। साक्षात्कार उम्मीदवार की विज्ञान/गणित /मनोविज्ञान/चिकित्सा या इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के विषय की डिग्री पर आधारित होता है। साक्षात्कार 100 अंकों का होता है।

उम्मीदवारों का चयन : उम्मीदवारों को वरीयता सूची में शामिल होने की सुनिश्चितता प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार में कम से कम 50% अंक प्राप्त करना अनिवार्य है। उम्मीदवारों के अंतिम चयन के लिए लिखित परीक्षा का 50% तथा साक्षात्कार के प्राप्तांकों का 50% जोड़कर वरीयता सूची बनाई जाती है। इंजीनियरिंग तथा गैर इंजीनियरिंग विषयों में अलग-अलग रिक्तियों के आधार पर चयनित उम्मीदवारों की अलग अलग सूची बनाई जाती है जिसका अनुमोदन अध्यक्ष आर ए सी द्वारा किया जाता है। तत्पश्चात अध्यक्ष आर ए सी तथा अध्यक्ष डी आर डी ओ द्वारा अनुमोदित परिणामों को नियुक्ति संबन्धित प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए डी ओ पी, डी आर डी ओ मुख्यालय को भेज दिया जाता है।

2. पात्रता:-

(क) **आवश्यक योग्यताएं :**

- **वैज्ञानिक या इंजीनियरिंग / तकनीकी विषय के पदों के लिए आवश्यक योग्यता :**
  किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय या समकक्ष से विज्ञान/ गणित या मनोविज्ञान में कम से कम प्रथम श्रेणी की स्नातकोत्तर डिग्री अथवा इंजीनियरिंग या प्रौद्योगिकी में स्नातक की डिग्री या धातु विज्ञान में स्नातक डिग्री प्रथम श्रेणी में प्राप्त की हो।
- **चिकित्सा अर्हताएं :** भारतीय चिकित्सा परिषद अधिनियम 1956 (1956 का 102) की तीसरी अनुसूची की पहली अनुसूची या दूसरी अनुसूची भाग II में चिकित्सा अर्हताएं शामिल की गई है। तीसरी अनुसूची भाग II में शामिल अधिनियम धारा 13 की उपधारा (3) में विनिर्दिष्ट शर्तों की अर्हताओं को भी पूरा करना होगा।

- अनिवार्यतः रोटेटिंग प्रशिक्षण पूर्ण करना

(ख) **सेवा अवधि :** रक्षा अनुसंधान सेवा (डी आर डी एस) में वैज्ञानिक "बी' के पद में प्रवेश पाने के लिए तकनीकी अधिकारी 'ए' तथा तकनीकी अधिकारी 'बी' के लिए 5 वर्ष की नियमित सेवा तथा अन्य तकनीकी पदों के लिए 10 वर्ष की नियमित सेवा के साथ-साथ डी आर डी एस नियम, एस आर ओ अनुसूची नियम III लिखित परीक्षा में उल्लिखित शैक्षणिक योग्यता प्राप्त अभ्यर्थी ही प्रवेश पाने के पात्र होंगे तथा पात्र उम्मीदवारों को 5 से अधिक अवसरों की आज्ञा नहीं होती है। सेवा अवधि, शैक्षणिक योग्यता की निर्णायक तिथि ऑनलाइन आवेदन पत्र प्राप्ति की अंतिम तिथि ही होती है। सेवा अवधि की गणना हेतु केवल डी आर टी सी कैडर में तकनीकी कर्मियों की सेवा अवधि की ही गणना की जाती है।

(ग) **आयु सीमा** : एल डी सी ई परीक्षा में शामिल होने के लिए कोई आयु सीमा निर्धारित नहीं है।

(ड.) **विषय :** एल डी सी ई के तहत अनिवार्य विषयों की सूची इंजीनियरिंग तथा गैर इंजीनियरिंग की अर्हताएं डी आर डी ओ के डी एच आर डी मुख्यालय द्वारा आर ए सी को प्रदान की जाती है। एस आर ओ के अनुसार गैर इंजीनियरिंग रिक्तियों के लिए उम्मीदवारों के पास विज्ञान विषयों/गणित /मनोविज्ञान/चिकित्सा विज्ञान में प्रथम श्रेणी की स्नातकोत्तर डिग्री होनी चाहिए तथा इंजीनियरिंग विषय की रिक्तियों के लिए इंजीनियरिंग विषयों में प्रथम श्रेणी की स्नातक डिग्री होनी चाहिए । दूरस्थ शिक्षा मोड के माध्यम से प्राप्त डिग्री दूरस्थ शिक्षा परिषद/ यू जी सी / ए आई सी टी ई या डी ई सी / यू जी सी की संयुक्त समिति द्वारा अनुमोदित होनी चाहिए।

3. **परीक्षा योजना :** एल डी सी ई के तहत योग्य उम्मीदवारों के लिए साक्षात्कार के बाद ऑनलाइन आम लिखित परीक्षा के उपरांत साक्षात्कार का प्रावधान है। ऑनलाइन व्यापक अनुसंधान योग्यता परीक्षा (सी आर ए टी) निम्नलिखित घटकों में आयोजित की जाती है:

(क) तार्किक योग्यता

(ख) आंकड़ों की व्याख्या

(ग) समझ का विकास

(घ) संख्यात्मक ज्ञान

(ङ) वर्तमान विज्ञान और प्रौद्योगिकी

(च) समस्या हल करने तथा निर्णय लेने की क्षमता

(छ) व्यवहार और पारस्परिक कौशल

लिखित परीक्षा 300 अंकों की होती है जिसमें 150 वैकल्पिक प्रश्न होते हैं, जिसमें प्रत्येक सही उत्तर के लिए 2 अंक होते हैं तथा गलत उत्तर के लिए 0.5 अंक की कटौती की जाती है। समय सीमा दो घंटों की होती है।

ऑनलाइन परीक्षा योग्यता के आधार पर साक्षात्कार में उपस्थित होने वाले उम्मीदवारों की संख्या इंजीनियरिंग तथा गैर-इंजीनियरिंग में जारी रिक्तियों की संख्या 1:4 के अनुपात में निर्धारित की जाती है, जिसके आधार पर उम्मीदवारों को साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। इंजीनियरिंग तथा गैर-इंजीनियरिंग के लिए अलग-लाग साक्षात्कार आयोजित किये जाते हैं। प्रत्येक उम्मीदवार के चयन के लिए उसके

योग्यता-विषय के आधार पर चयन बोर्ड गठित किया जाता है। साक्षात्कार के लिए 100 अंकों में से वरीयता दी जाती है।

4. अंतिम चयन:- उम्मीदवारों की लिखित परीक्षा तथा साक्षात्कार प्राप्तांकों के आधार पर वरीयता सूची बनाई जाती है जिसमें लिखित परीक्षा में प्राप्तांकों के 50% तथा साक्षात्कार में प्राप्तांकों के 50% का योग किया जाता है। अंतिम चयन इस वरीयता सूची में से इंजीनियरिंग तथा गैर-इंजीनियरिंग रिक्तियों की सीमित संख्या के आधार पर किया जाता है।

आर ए सी, डी आर डी ओ की भर्ती एवं मूल्यांकन संबंधी गतिविधियों को आधुनिक तकनीकी पद्धति के द्वारा पूर्ण करने के लिए सदैव तत्पर है तथा अपने सूत्र वाक्य यथार्थता, गोपनीयता, समयबद्धता के लिए हमेशा कृत-संकल्प है।

*****

मानव संसाधन की चुनौतियां

जसबीर सिंह

विकसित एवं विकासशील देश अपने नागरिकों का विकास एवं संवर्धन करने में सबसे आगे हैं, जो अपने देश के मानव संसाधन विकास में सर्वश्रेष्ठ भूमिका अदा करते हैं; जिसमें शिक्षा संस्थानों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जब तक व्यक्ति कोई भी नौकरी-पेशा या व्यवसाय में नहीं आता है तब तक वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करता रहता है। जब वह नौकरी में आ जाता है, उसके पश्चात् ही उस कर्मचारी का हित व उस संस्थान के हित में ताल-मेल बिठाना एवं कार्मिकों का एक संसाधन के रूप में विकास करने का कार्य मानव संसाधन के अंतर्गत आता है।

सभ्यता के आरंभ के कुछ समय बाद से ही आवश्यकता के अनुरूप खोजों व अनुसंधानों का जो दौर आरंभ हुआ, उसी के बदौलत 20वीं सदी तक पहुँचते- पहुँचते मानव-सभ्यता ने इस ऊँचाई को छुआ है। "आवश्यकता ही आविष्कारों की जननी है"। लेकिन बढ़ती जनसंख्या के परिणाम-स्वरुप बढती आवश्यकताओं ने हमें अनुसंधान व विकास कार्यों के लिए प्रेरित किया है। आज विश्व के अधिकांश देश अनुसंधान व विकास को अपनी प्राथमिकता की सूची में शामिल कर चुके हैं। भारत अपनी निरंतर बढ़ती प्रशिक्षित श्रमशक्ति एवं सरल होती सरकारी नीतियों के कारण आज अनुसंधान एवं विकास का वैश्विक केन्द्र बनता जा रहा है। अनुसंधान एवं विकास के लिए दुनिया भर में विभिन्न संस्थाएं काम कर रही हैं, जिनके अपने-अपने कार्य क्षेत्र हैं जैसे - जैव तकनीक, अंतरिक्ष अनुसंधान, भूगर्भ, रक्षा-उत्पाद, जिनमें अनेक वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषय शामिल हैं। मानव-संसाधन के बिना अनुसंधान एवं विकास संभव नहीं है। किन्तु आज तेजी से बदले आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक परिदृश्य में अनुसंधान संगठनों के लिए मानव-संसाधन के क्षेत्र में नित्य नई चुनौतियां उपस्थित हो रही हैं।

1. **मानव संसाधन की चुनौतियां -** अनुसंधान एवं विकास संगठनों के समक्ष मानव संसाधन के क्षेत्र में कई चुनौतियां हैं, वे विकसित तथा विकासशील देशों में अलग प्रकार की हैं। प्रस्तुत आलेख में भारत जैसे विकासशील देशों की स्थिति को केन्द्र-बिन्दु के रूप में रखा गया है। वैसे एक सत्य यह भी है कि समस्याएं गिनाना आसान है परंतु उनका समाधान बताना कठिन। अत: चुनौतियों के उल्लेख के साथ-साथ निराकरण के संभावित उपायों का भी संक्षेप में वर्णन है। मानव-संसाधन के क्षेत्र में अनुसंधान व विकास संगठनों के समक्ष मोटे तौर पर दो प्रकार की चुनौतियां हैं

- प्रथम, तेजी से फैलते अनुसंधान तथा विकास कार्यों के लिए दक्ष, प्रशिक्षित एवं विज्ञान से सही अर्थों में लगाव रखने वाले मानव संसाधन की पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति की चुनौती।
- द्वितीय, प्रतियोगिता के दौर में, इस प्रकार से प्राप्त दक्ष एवं कुशल मानव-संसाधन को अपने संगठन के साथ जोड़े रखने की चुनौती।

इन दो महत्वपूर्ण और बड़ी चुनौतियों का गंभीरता से विशलेषण करने पर इनके ही अंदर कई अन्य समस्याएं दिखाई देंगी: जैसे - वर्तमान शिक्षा-पद्धति में अनुसंधान व शोध पहल में कमी, देश में 'बेसिक रिसर्च' की कमी, 'ब्रेन ड्रेन' (प्रतिभा पलायन) की समस्या अनुसंधान व विकास संगठनों में मानव संसाधन के समक्ष समुचित वातावरण अथवा संसाधन की कमी इत्यादि।

2. कुशल मानव संसाधन - अनुसंधान एवं विकास संगठन हेतु समुचित संख्या में दक्ष एवं कुशल मानव संसाधन उपलब्ध करने की आवश्यकता है। परंतु ऐसा प्रशिक्षित मानव-संसाधन एक ही दिन में तैयार नहीं होता। इसके लिए शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर अपेक्षित मौलिकता का अभाव भविष्य के लिए एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि जिस अनुपात में अनुसंधान व विकास का कार्य बढ़ रहा है, उसी अनुपात में शोधकर्ताओं एवं अनुसंधानकर्ताओं की संख्या भी बढ़नी चाहिए। इसके लिए प्रारंभिक शिक्षा-स्तर से ही विज्ञान तथा प्रयोगों के प्रति छात्रों में अभिरुचि पैदा करना आवश्यक है ताकि विभिन्न अनुसंधान एवं विकास संगठन में 'बेसिक रिसर्च' (आधारभूत शोध) गुणवत्तापूर्ण मानव-संसाधन के विकास में सार्थक सिद्ध हो सके। आज पुराने निष्कर्षों तथा तथ्यों पर आधारित उत्पादों का विकास तो हो रहा है, किन्तु अनुसंधान संगठनों में आधारभूत अनुसंधान की सख्त कमी है। इसके लिए न सिर्फ इन अनुसंधान व विकास संगठनों में आधारभूत शोध के लिए अधिक निवेश की जरुरत है, बल्कि विश्वविद्यालयीय स्तर से ही अनुसंधान-वातावरण में सुधार की आवश्यकता है। यद्धपि देश में कुछ प्रमुख विश्वविद्यालय अध्यापन के साथ अनुसंधान का काम भी सफलतापूर्वक कर रहे हैं, तथापि भारत जैसे बड़े देश के लिए यह पर्याप्त नहीं है क्योंकि कई अन्य उच्च संस्थाएं अध्यापन तो अच्छा करा रही हैं किन्तु उच्च शिक्षा अनुसंधान की उनमें नितान्त कमी है।

3. अनुसंधान एवं विकास की प्रेरणा एवं अभिरुचि - "उच्चविद्यालय स्तर से ही छात्रों का एक बड़ा संवर्ग डॉक्टर या इंजीनियर बनने की इच्छा रखने लगता है (अनुसंधानकर्ता या वैज्ञानिक नहीं)। इन मेधावी मस्तिष्कों को किस प्रकार अनुसंधानकार्य को बतौर कैरियर अपनाने हेतु प्रेरित किया जा सकता है?" यह प्रश्न स्वयं ही इस कटु सत्य को उजागर करता है कि किस प्रकार बढ़ते अनुसंधान व विकास कार्य को भविष्य में मानव-संसाधन की कमी का सामना करना पड़ सकता है।

अत: अनुसंधान तथा विकास संस्थानों को भविष्य में मानव-संसाधन की संभावित कमी की चुनौती के लिए आज से ही तैयारी करनी होगी। सरकार को विज्ञान तथा शोध/अनुसंधान कार्य को बतौर कैरियर प्राथमिकता देने वालों के लिए भी एक उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करनी चाहिए, तभी अभिभावकों तथा छात्रों का इस दिशा में रुझान बढ़ेगा। एक अलग 'साइंस कैडर' (विज्ञान संवर्ग) बनाना होगा जिसमें प्रोन्नति तथा विकास के पर्याप्त अवसर हों, साथ की आकर्षक वेतन-भत्ते भी। इसरो, डी.आर.डी.ओ., परमाणु ऊर्जा अनुसंधान केन्द्र, सी.एस.आइ.आर., टी.एस.टी. और साथ ही आईटी, तेल व प्राकृतिक गैस, कृषि, ऊर्जा के क्षेत्रों से संबद्ध निजी क्षेत्र के उद्धोगों को भी अनुसंधान व विकास कार्य के लिए एक निर्धारित संख्या में एम.एस.सी. व पी.एच.डी. उत्तीर्ण छात्रों को नियुक्त करना चाहिए। कुछ इस प्रकार के कदम उठाकर अनुसंधान व विकास संगठन भविष्य में मानव-संसाधन की संभावित कमी की चुनौती का सामना कर सकते हैं।

4. प्रतिभा पलायन - अनुसंधान व विकास संगठनों द्वारा लंबी प्रक्रिया के बाद नियुक्त मानव-संसाधन को अपने संगठन के साथ जोड़े रखना एक चुनौती पूर्ण कार्य है। दरअसल गलाकाट प्रतियोगिता के इस दौर में प्रत्येक राष्ट्र तथा प्रत्येक संगठन अपने साथ योग्यतम व्यक्तियों को जोड़ना चाहते हैं। ऐसे में स्वभावत:, दक्ष एवं मेधावी

मानव-संसाधन का प्रवाह उन संगठनों व राष्ट्रों की ओर होने लगता है जो उन्हें न सिर्फ अनुसंधान व विकास के लिए बेहतर वातावरण उपलब्ध कराते हैं वरन् अपेक्षित वेतन, भत्ते तथा सुविधाएं भी प्रदान करते हैं। विकसित पश्चिमी देशों में अनुसंधान तथा विकास कार्यों को 'चतुर्थक सेवाओं' की श्रेणी में रखकर सर्वाधिक वेतनमान प्रदान किया जाता है, जबकि भारत जैसे विकासशील देशों में ऐसा नहीं है। यही कारण है कि भारत में कई सरकारी अनुसंधान संगठनों को 'ब्रेन-ड्रेन' (प्रतिभा-पलायन) की समस्या का सामना करना पड़ता है।

कई बार यह धारणा बना ली जाती है कि अनुसंधान संगठनों के शोधकर्ता तथा वैज्ञानिक सिर्फ अच्छे वेतन-भत्तों तथा दूसरी सुविधाओं के लिए ही अन्य संगठनों या देशों में पलायन कर जाते हैं। सत्य तो यह है कि यह सिक्के का सिर्फ एक पहलू है। इस प्रकार के पलायन का दूसरा तथा अधिक महत्वपूर्ण कारण है - 'कार्मिक संतुष्टि' (जॉब सटिस्फैक्शन) का अभाव। हमारे देश में डी.आर.डी.ओ. तथा दूसरे कुछ सरकारी अनुसंधान तथा विकास सगठनों में प्रतिभा-पलायन का यह एक कारण उनके 'कोर एरिया ऑफ स्पेशियलाइजेशन' या 'फील्ड ऑफ इंट्रेस्ट' (विशेषज्ञता या अभिरुचि वाले विषयों) से भिन्न, दूसरे क्षेत्रों में अनुसंधान हेतु लगा दिया जाता है जो न सिर्फ उनके अनुसंधानकार्य को धीमा तथा उबाऊ बना देता है वरन् कई बार वे संगठन छोड़ अपनी रूचि वाले क्षेत्र में जाने को बाध्य हो जाते हैं। सरकारी संगठनों में नियमावली से चलने के कारण संसाधनों की समय पर आपूर्ति के अभाव में अन्य काम-काज की गति धीमी हो जाती है जो युवा अनुसंधानकर्ताओं में असंतोष अथवा अरुचि पैदा करती है। समय पर विभागीय प्रोन्नति तथा प्रोत्साहन का न मिलना भी निराशा का एक कारण बनता है।

5. मानव संसाधन प्रबंधन के उपाय - इसके अलावा किसी भी संगठन के मानव-संसाधन का विकास एवं संवर्धन निम्नलिखित बातों पर निर्भर करता है।

(क) अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच ताल-मेल बिठा कर रखना।

(ख) कर्मठ एवं ईमानदार कर्मचारी को यह नहीं लगना चाहिए कि वह केवल काम करने के लिए ही है। उसके हितों का ध्यान रखा जाए इसके लिए उचित ताल-मेल भी बनाये रखना चाहिए।

(ग) संस्थान प्रमुख को यह महसूस होना चाहिए कि संस्थान में कौन से अधिकारी-कर्मचारी कामचोर तथा चुगलखोर है जो अपने निजी स्वार्थ के लिए अपने सहकर्मी को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। ऐसे कर्मचारी से सावधान हो जाना चाहिए।

(घ) एक अच्छे मानव संसाधन के लिए उपयोगकर्ता को समन्वय, ईमानदारी, समय निष्ठता, कार्यकुशलता जैसे मानवीय गुणों पर ध्यान देना अनिवार्य हो जाता है।

(ङ) किसी भी संस्था की मानसिक व बौद्धिक स्थिति को कार्य के अनुरूप ज्यादा से ज्यादा सुदृढ़ करने की आवश्यकता होती है, ताकि ऐसी संभावनाओं का पता लग सके और वह उस संस्थान के लिए लाभदायक हो सके।

(च) मानव-संसाधन का मुख्य बिंदु यह है कि नियोक्ता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अधिकारी-कर्मचारी जिस कार्य के लिए नियुक्त हुआ है उसे उसी कार्य पर लगाना चाहिए ताकि ज्ञान कुशलता व अनुभव का सही उपयोग हो सके।

(छ) उचित प्रबोधन के द्वारा कार्मिकों की कार्यक्षमता विकसित करने का प्रयास करें।

(ज) किस कर्मचारी से क्या कार्य कराया जाये यह निर्णय करने हेतु उस क्षेत्र में व्यक्ति के ज्ञान, ताकत, कमजोरी का आंकलन करने के बाद ही कार्य सौंपा जाना चाहिए।

इस प्रकार सभी पक्षों पर प्रकाश डालने के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि 21वीं सदी में तेजी से बदलते आर्थिक परिवेश तथा बढती वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस दौर में अनुसंधान व विकास संगठनों को मानव-संसाधन के क्षेत्र में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जो आगे चलकर और भी कठिन होती जाएंगी। भारत जैसे विकासशील देश में एक ओर जहां भविष्य में अच्छे मानव-संसाधन की आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु शिक्षा नीति में कुछ मूलभूत सुधार करने होंगे तथा उच्चशोध संस्थाओं में 'बेसिक रिसर्च' को बढ़ावा देना होगा, वहीं कुशल मानव-संशाधन को अपने साथ बनाए रखने के लिए व ब्रेन-ड्रेन पर अंकुश लगाने हेतु अनुसंधानकर्ताओं को उनकी योग्यता, रूचि तथा क्षमता के अनुसार शोधकार्य देने होंगे एवं समय-बद्ध विभागीय प्रोन्नति, आकर्षक वेतन-भत्ते, अनुसंधान के लिए समुचित संसाधन व उपलब्धि-आधारित प्रोत्साहन-पुरस्कारों की व्यवस्था करनी होगी। तभी देश में अनुसंधान व विकास का कार्य फल-फूल सकेगा एवं आने वाले दशकों में भारत को महाशक्ति के रूप में देखने का हमारा सपना पूरा हो सकेगा।

*****

घृणा नहीं

प्रार्थनामय अनुशासन में रहते-रहते, पिछले चालीस से भी अधिक वर्षों से मैंने किसी भी व्यक्ति को घृणा की दृष्टि से देखना बंद कर दिया है। मैं यह जानता हूं कि यह एक बडा दावा है। फिर भी, पूरी विनम्रता के साथ, मैं यह दावा कर रहा हूं। लेकिन बुराई जहां भी है, मैं उससे घृणा कर सकता हूं और जरूर करता हूं। मेरे असहयोग के मूल में घृणा नहीं, प्रेम होता है। मेरा व्यक्तिगत धर्म मुझे किसी से भी घृणा करने की इजाजत नहीं देता। मैंने यह सरल किंतु महान सिद्धांत बारह वर्ष की आयु में स्कूल की एक किताब से सीखा जो आज भी दृढ़ता के साथ मेरे मानस-पटल पर अंकित है। यह दिन-प्रतिदिन और दृढ़ होता जाता है। यह मेरे जीवन का एक तीव्र मनोवेग है। ऐसा नहीं है कि मैं हर चीज के प्रति अनिष्ठा की भावना पालने लगता हूं, लेकिन जो असत्य है, अन्यायपूर्ण है और बुरा है, उसके प्रति मेरी कोई निष्ठा नहीं होती... मैं किसी संस्था के प्रति तभी तक नैष्ठिक रहता हूं जब तक वह मेरे और मेरे राष्ट्र के विकास में सहायक होती है। जैसे ही मुझे लगता है कि वह विकास में साधक होने के बजाय बाधक सिद्ध हो रही है, मैं उसके प्रति निष्ठाहीन होना अपना कर्तव्य समझने लगता हूं। मेरा असहयोग यद्यपि मेरे धर्म का एक अंग है, पर यह असहयोग की शुरुआत होती है। मेरा असहयोग पद्धतियों और प्रणालियों के प्रति होता है, व्यक्तियों के प्रति कभी नहीं। मैं तो डायर के प्रति भी दुर्भावना नहीं पालूंगा। मैं दुर्भावना को मानव गरिमा के अनुरूप नहीं मानता। कुछ लोगों ने मुझे अपने समय का सबसे बडा क्रांतिकारी बताया है। यह चाहे गलत हो, पर मैं स्वयं को एक क्रांतिकारी, एक अहिंसक क्रांतिकारी अवश्य मानता हूं। असहयोग मेरा शस्त्र है। कोई व्यक्ति संबंधित लोगों के स्वेच्छा अथवा बलात् सहयोग के विना विपुल धनराशि का संचय नहीं कर सकता।

मैं स्वभावतः सहयोगी हूं; मेरे असहयोग का उद्देश्य वस्तुतः सहयोग से सारी नीचता और झूठ को निकाल फेंकना होता है, क्योंकि मेरे विचार में ऐसा सहयोग किसी काम का नहीं है।

- महात्मा गांधी

हिन्दी भाषा का संरक्षण व विकास

नन्दन प्रसाद

भाषा अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम परम्परागत साधन है। भाषा प्राचीन काल के आविष्कारों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा चमत्कारी खोज है। भाषा के माध्यम से संसार के महान कार्यों का सम्पादन व संरक्षण होता रहा है। हम जिस विकास की बातें सुनते हैं वह भाषा के बिना कभी भी संभव नहीं हो पाती। मानव अस्तित्व का सर्वेक्षण करें तो भाषा संरक्षण के माध्यम से ही तत्कालीन मानवीय अस्तित्व की खोज हो सकी है। भाषा विचारों के आदान-प्रदान करने का वह माध्यम है जो मानवीय-भावनाओं को आबद्ध करती है। भाषाओं के विकास व संरक्षण में विश्व की भाषा लिपियों का महत्वपूर्ण योगदान है। किसी भी देश की भाषा अपने-अपने देश की पहचान बनाने में हमेशा समर्थ होती है। हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा हो या न हो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भारत की पहचान की भाषा है। हिन्दी भाषा के विकास में देवनागरी लिपि में संरक्षित साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है।

1. **संप्रेषण व संपर्क भाषा -** यह भी ध्यान देने की बात है कि भारत बहुभाषी देश है। इसलिए राजभाषा या राष्ट्रभाषा के रूप में इसकी भाषा समस्या जटिल रूप में हमारे सामने उभर कर आती है। इसी का लाभ उठा कर अंग्रेजों ने अंग्रेजी भाषा को भारत में सरकारी प्रयोजनों की भाषा बना दिया। देश में भाषा की विभिन्नताओं और सामाजिक अस्मिताओं के भेद के बावजूद यह हमेशा अनुभव किया जाता रहा कि अलग- भाषाओं के बीच कड़ी के रूप में कोई भाषा अवश्य होनी चाहिए, जिसे अखिल भारतीय स्तर पर संप्रेषण व संपर्क भाषा के रूप में मान्यता दी जा सके। इन्हीं प्रयोजनों के तहत भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार हिन्दी को संघ की राजभाषा और देवनागरी लिपि के रूप में मान्यता दी गई।

2. **हिन्दी भाषा का मानकीकरण** - हिन्दी भाषा के शब्दों की शुद्धता, सुबोधता और एकरूपता भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर सुनिश्चित करने के लिए मानकीकरण की शुरुआत की गई। आधुनिकीकरण, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली, प्रशासनिक शब्दावली का निर्माण हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुसार भारतीय भाषाओं में एकरूपता लाना ही इसका उद्देश्य होना चाहिए। मनमाने ढंग से शब्दावली निर्माण पर रोक लगाई जानी चाहिए। यद्धपि मानकीकृत शब्दावली कोड या प्रयोग निर्धारण के आधार पर ही मानक नहीं कही जा सकती है। उसके लिए किसी भी भाषा को बार-बार व्यवहार या प्रयोग से गुजरना पड़ता है। द्विभाषी मानक तकनीकी शब्दावली अनुवाद से हिन्दी भाषा विकास में सहायता मिल सकती है। कंपनियां, बाजार, विज्ञापन, टी. वी. चैनल, समाचार पत्र, मोबाइल, इंटरनेट, मीडिया आदि हिन्दी भाषा के मूल सृजक हैं वहां पर भाषागत शब्दों के सही प्रयोग में सुधार की आवश्यकता है क्योंकि हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के इन साधनों के मनमाने प्रयोग से ही भाषा के समुचित विकास पर प्रभाव पड़ा है।

3. भाषा संरक्षण की आवश्यकता - भाषा किसी भी देश की सभ्यता व संस्कृति तथा उसके रहन-सहन की पहचान होती है। यदि किसी समुदाय की भाषा न बचे तो उसके बारे में जानना कठिन हो जाता है। ईसाईयों और यहूदियों के धर्म ग्रंथों की भाषा हिब्रू थी, जो अब प्रयोग में नहीं है। इसी तरह पाली, प्राकृत भाषाएं भी विलुप्त हो चुकी हैं। संरक्षित न होने के कारण इनके मूल ग्रंथों के बारे में जानना कठिन है। मूल भाषा या स्थानीय भाषाओं के विलुप्त होने में शहरीकरण, जनसंख्या पलायन, आधुनिक शिक्षा, वैश्वीकरण, भाषा विकल्प, तकनीकी प्रसार, भाषा क्लिष्टता आदि प्रमुख कारण हैं। विश्व में बोली जाने वाली कुल 6900 भाषाएं हैं इसमें से 90 प्रतिशत भाषाएं बोलने वालों की संख्या एक लाख से कम है। इन में से 10 (दस) सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाएं हैं जिसमें से चीनी (मंडारिन), अंग्रेजी, हिन्दी, जापानी, रूसी, पुर्तगाली, अरबी, स्पैनिश प्रमुख हैं। दुनिया में चार हज़ार से अधिक भाषाओं पर खत्म अथवा लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। यूनेस्को रिपोर्टों के अनुसार पिछली सदी में 600 (छः सौ) भाषाएं गायब हो चुकी हैं।

नृवंश-विज्ञान (Ethnologue), जो भाषाओं की एक निर्देशिका है, में दुनियां भर की 7,111 (सात हज़ार एक सौ ग्यारह) भाषाओं को सूचीबद्ध किया गया है। उसमें से सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषायें चीनी, अंग्रेजी, हिन्दी, स्पैनिश और अरबी हैं। आज भाषा मानव विज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है, जिसमें ऐसी भाषाओं का अध्ययन किया जाता है जो अभी भी लिपिबद्ध नहीं है या अलिखित है। ऐसी भाषा को समझने के लिए किसी शब्दकोश या किसी व्याकरण का उपयोग नहीं किया जाता है। शोधकर्ता ऐसी भाषाओं का अध्ययन कर के शब्दकोश व व्याकरण तैयार करते हैं और बोली सरंचना के आधार पर भाषागत लिपियों का प्रयोग किया जाता है, जिसके आधार पर भाषा को संरक्षित किया जा सकता है।

4. हिन्दी के साथ अन्य भाषाओं का समन्वय - हिन्दी भाषा का उद्गम संस्कृत भाषा से माना जाता है। संस्कृत का प्रयोग धीरे-धीरे कम होता गया। संस्कृत का प्राकृत रूप व्यवहरित होने लगा। कालांतर में प्राकृत भाषा उन्नति करती गई। विद्वानों ने छः प्रकार की प्राकृत भाषाओं का उल्लेख किया है, मगधी इसे पाली भी कहा जाता है, जो आज बिहारी, बंगला, उड़िया, असमी आदि के नाम से जानी जाती है। इसी का एक रूप अर्धमागधी भी है। जो अवधी, बघेली आदि बोलियों का समन्वय है। महाराष्ट्री जिसका आधुनिक रूप मराठी है। सौरसेनी, ब्रज भाषा, पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती इसके आधुनिक रूप हैं। इसी प्रकार पैशाची, जो पंजाब में बोली जाती है जिसकी उपभाषाएं लहंदा, सराइकी, मुल्तानी, पंजाबी आदि हैं। ब्राचर्ड सिंध प्रांत में बोली जाती है जो इस भाषा का सिन्धी रूप है हिन्दी में फारसी, दखिनी, मैथली, कौरवी आदि भाषा बोलियों का गहरा प्रभाव रहा है। हिन्दी भाषा के विकास में प्रान्तीय भाषाओं का समन्वय महत्वपूर्ण है। इन भाषाओं के समन्वय से हिन्दी भाषा का विभाजन नहीं हुआ बल्कि उसकी विविधता में हिन्दी भाषा का विकास हुआ है। एक प्रकार से हिन्दी में उर्दू और फारसी आदि भाषाओं का सुन्दर गठजोड़ हुआ है।

5. वैश्वीकरण - वैश्वीकरण के इस दौर में किसी भी स्वाधीन और साधन संपन्न देश में किसी दूसरे देश की भाषा विकास का पैमाना बने यह कैसे स्वीकार हो सकता है। यह सच है कि विश्व के किसी भी देश में भाषा की स्वायत्तता अथवा स्वाधीनता और उसकी निजता, व्यापक विस्तार और विकास पर बारीकी से ध्यान नहीं दिया है। बाजारवादी अर्थव्यवस्था के चलते हिन्दी की अस्मिता और निजता सर्वाधिक खतरे में है बाजारवाद तात्कालिक आवश्यकता को सर्वाधिक अहमियत देता है। यह ऐसी संकर भाषा निर्मित करता है जिससे केवल उसका हित सध

सके। वह अपने हित के लिए हिन्दी भाषा का हित देखे बिना भाषा निर्मित कर रहा है। उसके प्रति हमारी घोर उदासीनता ही है।

6. हिन्दी भाषा संरक्षण व विकास में अन्य भारतीय भाषाओं का योगदान - हिन्दी भाषा का निर्माण और विकास में मानकीकरण आयोग द्वारा भाषा वैज्ञानिक शब्दावली निर्माण व नियमों के अनुपालन से हिन्दी परिष्कृत एवं शुद्ध हुई है। इसके साथ-साथ हिन्दी भाषा में प्रान्तीय भाषाओं का व्यापक दृष्टिकोण शामिल है। हिन्दी, उर्दू, मैथिली आदि भाषाओं का प्रभाव है। खड़ी बोली, ब्रज, अवधी, राजस्थानी, बुन्देली, मगधी, भोजपुरी, गढ़वाली, हरयाणवी हिन्दी भाषा की बोलियाँ हैं, जिन्होंने हिन्दी को परिभाषित एवं समृद्ध किया है। हमें अपनी भाषा में बोलने पर गर्व होना चाहिए। भाषा की श्रेष्ठता उसके विचारों में निहित होती है।

7. भाषा संरक्षण व विकास में अनुवादों की भूमिका - इक्कीसवीं सदी को वैश्वीकरण का युग कहा जा सकता है। इसमें अपरिचय के सारे बंधन तोड़ कर निकालने का प्रयास हो रहा है। अनुवादों के माध्यम से भाषाओं के रूप घिस मांज कर पारदर्शी बनाये जा रहे हैं। वैसे तो किसी भी भाषा में अनुवाद के अनेक प्रयोजन हो सकते हैं। भाषा के संरक्षण और विकास में अनुवाद भाषा को परिपुष्ट, समृद्ध व परिष्कृत करते हैं। नये-नये शब्द सामने आते हैं और नई शैली का जन्म होता है। इसके साथ-साथ अन्य भाषाओं के महान ग्रंथों का अनुवाद होता है, जिससे हमारी भाषाओं का विकास एवं अन्य भाषाओं का भी संरक्षण होता है।

यद्धपि आज वैश्वीकरण के युग में विश्व की समस्त भाषाएं परिवर्तन के दौर से गुजर रहीं हैं, ऐसे में हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत तथा हिन्दी भाषा की रक्षा करनी होगी। आज हिन्दी भाषा को ऐसा नवीनतम स्वरुप उपलब्ध कराना है जिसमें हमारी सभी भाषाओं का समन्वय हो परन्तु वे नष्ट न हों बल्कि पुष्ट एवं विकसित हों, साथ ही भाषाओं के बीच संवाद की समस्या न हो। भारतीय भाषाओं का समन्वय, मानकीकरण, अनुवाद तथा संप्रेषण और संपर्क भाषा के अनुप्रयोगों के द्वारा ही हम अपनी हिन्दी भाषा का संरक्षण और विकास कर सकेंगे।

*****

खुद वो बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।

- महात्मा गांधी

भारत की प्रगति में 'फिट इंडिया' पहल का महत्त्व

चेतना पंत

हमारे प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने 9 अगस्त 2019 को राष्ट्रीय खेल दिवस पर इंदिरा गांधी स्टेडियम पर 'फिट इंडिया' पहल की शुरुआत की। जिसमें उन्होंने 'फिट इंडिया' के महत्त्व को समझाया। इस दिन इन्होंने भारतीय हॉकी के दिग्गज 'मेजर ध्यानचंद' को नमन किया और उनके स्टेमिना, हॉकी कौशल और प्रतिभा को याद किया। इससे पहले भी 25 अगस्त को माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में भी स्वास्थ्य के प्रति लोगों को जागरूक किया और इस कार्यक्रम में लोगों से बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए आह्वान किया।

फिट इंडिया का अर्थ - इस विषय पर आगे बढ़ने से पहले यह जानना आवश्यक है कि 'फिट इंडिया' का अर्थ क्या है ? दरअसल 'फिट इंडिया' का अर्थ भारतवासियों को 'फिट' यानी स्वस्थ रहने से है फिर वह चाहे शारीरिक रूप से हो या मानसिक रूप से। मतलब कि दोनों तौर पर स्वस्थ रहना ही 'फिट इंडिया' का मूल अर्थ है। प्रधानमंत्री जी का मानना है कि भारत तभी आगे बढ़ेगा जब हर भारतीय शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहकर भारत की प्रगति के लिए अपने सामर्थ्य के अनुसार कार्य करें।

'फिट इंडिया' का उद्देश्य - इस पहल का प्रमुख उद्देश्य हर भारतवासी को अपने-अपने स्तर पर स्वास्थ्य प्रदान करना है जिससे कि न केवल उनका अपितु उनके सहभागियों का भी भला हो और वे स्वस्थ रहें। इसके लिए उन्हें कई तरह के विभिन्न प्रयासों को अपनाना होगा, जिसमें शारीरिक व्यायाम/योग उल्लेखनीय हैं, जिससे कि भारतवासियों के तन-मन का विकास हो और इस तरह से वे एक स्वस्थ भारत की ओर अग्रसर हों।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि हमारे दैनिक जीवन में शारीरिक व्यायाम के अभाव और खान-पान की खराब आदतों के कारण हमें कई बीमारियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें उच्च रक्तचाप, डायबीटीज, हाइपरटेंशन व दिल की बीमारियां प्रमुख हैं। तनाव जो की आजकल की जीवन शैली की सबसे बड़ी बीमारी बन चुकी है, यह भी हमारे व्यस्त जीवन और कुछ-कुछ व्यायाम के प्रति उदासीनता का ही परिणाम है। एक तरह से कहें तो आजकल की पीढ़ी इस बीमारी को अपनी बेढंगी जीवन शैली से आमंत्रित कर रही है और ग्रसित हो रही है। हम जाने अनजाने में अपने आप को बीमारियों की गर्त में धकेलते चले जा रहे हैं और इसके बाद न चाहते हुए भी हमारी आय का एक बड़ा हिस्सा इन्ही स्वजनित बीमारियों से जूझनें और लड़ने में चला जाता है।

प्रधानमंत्री जी ने इसी कड़ी में कहा है की 'फिट इंडिया' में स्वास्थ्य में जीरो निवेश है और रिटर्न असीमित। शायद उनके इस कथन का आशय यही है कि अगर हम पहले से ही जागरूक रहें तो हम सिर्फ स्वस्थ तन-मन के कारण हर जगह सफलता पा सकते हैं।

आज के परिवेश में 'फिट इंडिया' का महत्त्व - आज के भौतिकवादी युग में 'फिट इंडिया' का महत्त्व काफी बढ़ जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आज के युग में जहां हम सभी अपने-अपने कार्यों को पूर्ण करने के लिए भाग रहे हैं वहीं हम अपने स्वास्थ्य को कहीं दूर छोड़ते जा रहे हैं। यह सिर्फ केवल वयस्कों तक ही सीमित नहीं अपितु

हमारी आने वाली पीढ़ी यानी की हमारे बच्चे भी इससे अछूते नहीं है। हमेशा आगे आने वाली होड़ में अब तो बच्चों को भी इतना तनाव हो गया है की अब किताबों के अलावा उन्हें कुछ सूझता ही नहीं और यदि थोड़ा समय बच जाता है तो इस तकनीकी समृद्धि के समय में कम्प्यूटर और लैपटॉप उन्हें खेल-कूद से और दूर करते जा रहे हैं। मोबाइल का अधिकाधिक प्रयोग उन्हें अस्वस्थ जीवन शैली की ओर धकेलता जा रहा है। ऐसा नहीं है कि हम इस बात से अनभिज्ञ हैं, किन्तु हमारी दिनचर्या में इन सभी उपकरणों का अधिकाधिक प्रयोग हमें हमारी शारीरिक एवं मानसिक विकास से दूर ले जा रहा है। ऐसे में 'फिट इंडिया' पहल हमारे लिए एक वरदान की तरह है जो हमें यह याद दिला रहा है कि जिस तरह से हमारे पूर्वज़ों ने, ऋषि-मुनियों ने व्यायाम और आध्यात्म का पालन कर के भारत को वैश्विक पटल पर एक नाम दिया, उसी प्रकार हमें भी इसी तरह व्यायाम एवं योग को अपने जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान देना होगा। तभी हम सब मिलकर एक स्वस्थ भारत का निर्माण कर सकेंगें।

'फिट इंडिया' की चुनौतियां - फिट इंडिया पहल के समक्ष कुछ चुनौतियां भी हैं जिसे सरकार को देखना होगा कि भारत जैसे देश में जहां एक बड़ी आबादी अभी भी गरीबी रेखा के नीचे है**,** वह कैसे इसका हिस्सा बन सके। इन लोगों के पास अभी भी मूलभूत सुविधाओं की कमी है। जिस देश की एक बड़ी आबादी कुपोषण से लड़ रही हो उस देश के उन लोगों को आप कैसे स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

स्वस्थ/फिट इंडिया का मूल मंत्र है सही खान-पान और व्यायाम। इसको इन लोगों के आगे लेकर जाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

मैं अंत में यही कहूंगी कि 'फिट इंडिया' पहल अपने आप में एक अनोखी और अनूठी पहल है, जो न केवल भारत के लिए ही अपितु वैश्विक स्तर पर भी उपयोगी है। और कई देश इसके लिए आगे भी बढ़ रहे हैं। हमें भी चाहिए कि हम इस पहल में बढ़-चढ़ कर भाग लें और इसे सफल बनाएं। आखिर इससे ही तो हमारा देश आगे बढ़ेगा। हम सब फिट हैं तो, भारत फिट है।

'प्रगति के पथ पर, विकास के रथ पर बढ़ रहा है देश मेरा।

स्वस्थ भारत का एक नया सपना, नया सवेरा देख रहा है देश मेरा'।

*****

उपवास

आमरण उपवास सत्याग्रह के शस्त्रागार का अंतिम एवं सबसे शक्तिशाली शस्त्र है। यह एक पवित्र शस्त्र है। इसे इसके संपूर्ण निहितार्थ के साथ स्वीकार करना चाहिए। महत्वपूर्ण स्वयं उपवास नहीं है, बल्कि उसका निहितार्थ है।

- महात्मा गांधी

कार्यस्थल पर आध्यात्मिकता

डा. राजेश कुमार त्रिपाठी

भारतीय परिप्रेक्ष्य में गीता के कर्म योग का सिद्धान्त कार्य में, कार्य से जुडने और कार्य के आध्यात्मिक पक्ष को उजागर करने का अनूठा उदाहरण है, तथा सम्पूर्ण विश्व को एक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है जो कार्य को सिर्फ उत्पादन, उपयोग और उत्पादकता का निमित्त-मात्र न समझे, बल्कि कार्य को जीवन की सार्थकता को प्रमाणित करने का हेतु समझे। भारतीय विधा में कार्य सिर्फ नौकरी या व्यापार नहीं, बल्कि जीवन को अर्थ प्रदान करने का माध्यम है, और यही विचारधारा कार्य में आध्यात्मिकता का एक बृहत् पक्ष प्रस्तुत करता है। कार्य-स्थल पर आध्यात्मिकता और उनके कार्य के विविध पक्षों से संबंधों की लम्बे समय तक मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में अनदेखी की जाती रही है। कार्य-स्थल पर आध्यात्मिकता का सम्बन्ध धार्मिक विश्वासों से न होकर व्यक्ति के उस विश्वास से है जिसमें वह अपनी उर्जा को पहचानते हुये, कार्य की गुणवत्ता को मानव-मात्र के कल्याण का हेतु समझता है, जिसमें उसका भाव कार्य और जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझते हुये जन-कल्याण को भी अपने जीवन का लक्ष्य समझना है। प्रस्तुत आलेख में कार्य-स्थल पर आध्यात्मिकता और उसके विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

आध्यात्मिकता मानव-अस्तित्व से जुड़ी हुई है तथा इसका मानव के सम्पूर्ण विकास, उसके जीवन के चरम उद्देश्य की प्राप्ति तथा जीवन दर्शन से संबंध है। कार्य-स्थल पर आध्यात्मिकता का अध्ययन नूतन है। इस विषय पर मनोविज्ञान तथा प्रबन्धन के शोधकर्ताओं ने ध्यान देना प्रारम्भ कर दिया है। विविध संगठनों के प्रबन्धकों ने समझा है कि किसी भी कर्मचारी के कार्य की गुणवत्ता, उसका कार्य-स्थल पर व्यवहार या सन्तुष्टि सिर्फ आर्थिक प्रलोभन से निर्धारित नहीं होता है, बल्कि किसी भी व्यक्ति का अन्तर्मन जब तक पोषित नहीं होता है तब तक उसको उसका कार्य अर्थपूर्ण नहीं लगता है। इसके लिये अपरिहार्य है कि कोई भी कर्मचारी/कार्यकारी जब तक अपने कार्य से जुड़ा हुआ, उस कार्य में अर्थपूर्णता तथा उस कार्य में सन्तुष्टि नहीं पाता हो, तब तक उसकी उत्पादकता कम या सामान्य ही होती है। कार्य-स्थल पर आध्यात्मिकता या आध्यात्मिक प्रक्रियाओं का अध्ययन इसी का परिणाम है। भारतीय वांग्मय में यह स्थापित परम्परा या विचारधारा रही है कि आध्यात्मिकता व्यक्ति/जीव के जीवन का आधार है तथा उसके पुरूषार्थ से जुड़ा हुआ है जिसमें उसका कार्य भी एक आवश्यक अंग है।

कार्य-स्थल पर आध्यात्मिकताः विभिन्न अवयव

कार्यस्थलीय आध्यात्मिकता का अध्ययन व्यक्ति के कार्य-जीवन में सन्तुलन स्थापित करने की एक प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रारम्भ हुआ। वर्तमान जीवन मानव सभ्यता के समक्ष एक चुनौती है तथा उसके कार्य-व्यापार तथा जीवन में सन्तुलन की स्थापना ही व्यक्ति को वर्तमान जीवन की विभीषिका से बचा सकता है। इसका मूल आध्यात्मिक चिन्तन के विस्तार और जीवन में इसके प्रगामी प्रयोग में निहित है। असुरक्षा का भाव, प्रतिस्पर्धा,

कोविड जैसी विभीषिका, बदलते कार्य-वातावरण की स्थिति ने व्यक्ति के जीवन में तनाव, विषाद तथा अन्य मनो-दैहिक असामान्य स्थितियों को जन्म दिया है जिसका निदान आध्यात्मिक चिन्तन ही प्रदान कर सकता है। गियाकेलोन तथा जुर्कीविज (2003) ने कार्य-स्थलीय आध्यात्मिकता को परिभाषित करते हुये लिखा है कि व्यक्ति, समूह या संगठन का वह पक्ष जो किसी व्यक्ति को पराचिन्तन के माध्यम से सन्तुष्टि का भाव प्रदान करे वह आध्यात्मिकता है। वर्ष 2000 में दो मनोवैज्ञानिकों (असमोस और डूकॉन) ने कार्य-स्थलीय आध्यात्मिकता के मापन के लिये पहली प्रश्नावली बनाई जिसमें कोई व्यक्ति अपने कार्य की अर्थपूर्णता (समुदाय के लिये) के माध्यम से अपने भाव व्यक्त कर सकता है।ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार "आध्यात्मिकता को जीवन का सर्वोच्च नैतिक मूल्य" माना गया है। श्री अरविन्दो घोष ने आध्यात्मिकता को भारतीय मानस का प्रमुख चिन्तन माना है। अर्थपूर्ण जीवन और सन्तुष्टि ही इसके प्रमुख आयाम हैं।

गिब्बोन्स (2000) ने बताया कि आध्यात्मिकता व्यक्ति को सम्पूर्णता का आभास कराती है, व्यक्ति उच्च जीवन-मूल्यों के साथ अपने कार्य तथा कार्य-स्थल से जुड़ा होता है। ब्रह्मदेवन (2013) ने आध्यात्मिकता को व्यक्ति (जीव), जगत और ब्रह्म के बीच के अन्तर्सम्बंध के रूप में व्याख्यायित किया। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि आध्यात्मिक चिन्तन (1) एक सम्पूर्ण और शाश्वत उर्जा का प्रवाह है (2) वह उर्जा हम सभी में विद्यमान है तथा (3) हम सभी उस उर्जा को महसूस पर सकते है।

जब हम उस उर्जा को महसूस कर सकते हैं तो उसका उपयोग हमे अपने वाह्य-व्यवहार में करना चाहिये। और यही निर्धारित करता है कि व्यक्ति जो कार्य कर रहा है वह मात्र भौतिक उपलब्धि के लिये है या जीवन में सन्तुष्टि और अपने परम उद्देश्य की प्राप्ति के लिये। कार्य-स्थल पर आध्यात्मिकता (1) कर्मचारी के स्वास्ति-बोध तथा जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है। (2) कर्मचारी में सुरक्षा का भाव तथा उसके कार्य को अर्थ प्रदान करता है तथा (3) कर्मचारी में समाज के प्रति उत्तरदायित्व तथा उससे जुड़े होने का भाव देता है।

मिलीमैन (2003) ने कार्यस्थलीय आध्यात्मिकता के तीन प्रमुख आयामों यथाः व्यक्तिगत, समूह-स्तर तथा संगठन के स्तर की व्याख्या की है। व्यक्तिगत स्तर पर कर्मचारी अपने कार्य का आनन्द लेता है तथा कार्य और उसके उद्देश्य में तारतम्य स्थापित कर अर्थपूर्णता की ओर अग्रसर होता है। यह भाव उसके जीवन को दशा, दिशा प्रदान करता है। समूह के स्तर पर कर्मचारी अपने समूह से जुड़ा हुआ महसूस करता है। सामूहिक चेतना के संचार की वजह से एक-दूसरे का सहयोग तथा संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति में एक-दूसरे का समर्थन भी कार्यस्थलीय आध्यात्मिकता का उदाहरण है। संगठनात्मक स्तर पर आध्यात्मिकता कर्मचारी और संगठन के लक्ष्यों में समानता स्थापित कर किसी संगठन की प्रभावशीलता को बढाता है। कर्मचारी संगठन के उद्देश्यों और मूल्यों से एकाकारिता स्थापित कर संगठन और उसके सदस्यों को अपना समझता है। प्राचीन ग्रन्थों में अन्यान्य उदाहरण हैं जो किसी व्यक्ति, समूह या राज्य/संगठन के आध्यात्मिक पक्ष को उजागर कर वर्तमान परिवेश के लिये मार्गदर्शन देते हैं जिससे कार्य-संस्कृति को उन्नत तथा प्रभावी बनाया जा सके।

भगवत गीताः कार्यस्थलीय आध्यात्मिकता

भगवत गीता महाभारत के भीष्म पर्व में अध्याय 25 से 42 तक है, जिसमें सर्वोत्कृष्ट नैतिक नेतृत्व के गुणों का वर्णन है जिसकी सर्वकालिक प्रासंगिकता है। गीता के कर्मयोग का सिध्दान्त जीवन के उद्देश्य, कार्य-स्थल का हमारे जीवन में महत्व तथा किसी कार्य को करने का उचित मार्ग इत्यादि का वर्णन करता है। गीता के

सिद्धांतों का अनुप्रयोग किसी भी धार्मिक, सामाजिक या भौगोलिक सीमाओं से परे है। ब्रिटिश आर्मी द्वारा भी समय-समय पर गीता के उपदेशों या प्रबन्धन के सूत्रों यथाः

कार्य की चेतना, उत्तरदायित्व का भाव, चित्त/मन के नियन्त्रण की प्रविधि, स्व-अभिज्ञान तथा उचित-अनुचित के भेद का प्रशिक्षण दिया जाता है (द हिन्दु, मार्च 26, 2014)।

भगवत-गीता के 13वें और 14वें अध्याय में किसी भी कार्य को करने के पाँच कारणों का वर्णन है यथा कार्य का माध्यम (शरीर), कार्य का एजेन्ट (स्व), ज्ञानेन्द्रियाँ तथा देवत्व की प्राप्ति। उपनिषदों में वर्णित है कि उपरोक्त कारण ही किसी व्यक्ति को कार्य के लिये प्रेरित कर उसके लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वर्तमान कार्य-वातावरण में नैतिक मूल्यों का होना कार्य और कर्मचारी दोनों की गुणवत्ता के लिये बहुत आवश्यक है। इसलिये संगठनात्मक मनोवैज्ञानिको के लिये यह आवश्यक है कि वे आध्यात्मिक सिद्धांतों का अनुप्रयोग संगठनों में करें तथा इस दिशा में अधिक से अधिक शोध हों। गीता में लिखा है "योगः कर्मसु कौशलम्" जो किसी की कार्य की सफलता का मूल है (अध्याय-11, श्लोक 50)। गीता के कर्म योग सिद्धांत का अनुप्रयोग वर्तमान युग में कार्य-निष्पादन तथा कार्य-वातावरण की प्रभावशीलता के लिये आवश्यक है।

कार्य को संस्कृत में 'कर्म' कहा जाता है जो 'कृ' धातु से बना है। जिसका अर्थ होता है करना। 'योग' युज् धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'जुडना'। अर्थात अपने कार्य से जुडना, तथा उस कार्य को मानव-कल्याण के लिये समर्पित करना। 'कर्म योग' सिद्धांत की सबसे बृहत् व्याख्या मेनन और कृष्णन (2004) ने की है तथा उन्होंने 'कर्म-योग' या कार्य-स्थल पर आध्यात्मिकता के चार घटकों का वर्णन किया है यथाः कार्य की सार्थकता, कार्य की सफलता, कार्य से विरक्ति और उदाहरणों की स्थापना है। कृष्णन (2006) ने दो अन्य कारकों को भी इसमें जोड़ा यथाः कार्य के प्रति समर्पण और उससे किसी पुरस्कार प्राप्ति की इच्छा नहीं होना। कर्म-योग किसी भी व्यक्ति में यह इच्छा उत्पन्न करता है, जिससे वह व्यक्ति कार्य को सफलता-पूर्वक सम्पन्न करने कि लिये आवश्यक कौशल का विकास करता है तथा कार्य को समाज-सेवा का माध्यम समझता है। इस दिशा में और शोध करते हुये पुरातन ज्ञान तथा दर्शन की महत्ता से वर्तमान पीढी को अवगत कराना तथा इसका कार्य-स्थल पर अनुप्रयोग जीवन की गुणवत्ता बढाने का सशक्त माध्यम हो सकता है।

कार्य-स्थलीय आध्यात्मिकता के फायदे

कार्य-स्थलीय आध्यात्मिकता का प्रशिक्षण, शोध एवं उसका अनुप्रयोग अगर सार्वभौमिक सिद्धांतों के माध्यम से हो, जिसमें किसी धर्म-विशेष के सिध्दान्तों को स्थापित न करते हुये, मानव कल्याण और कार्य की प्रभावशीलता, चिन्ता एवं तनाव प्रबन्धन, सन्तुष्टि और स्वास्ति बोध के लिये हों तो वर्तमान कार्य-वातावरण आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत होकर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के माध्यम से मानव-कल्याण का हेतु हो सकता है। किसी भी संगठन में आध्यात्मिकता को संगठन की संस्कृति का अंग बनाने से निम्नलिखित फायदे हो सकते हैं:

- संगठन का उद्देश्य सिर्फ उत्पादन या उपभोग न होकर मानव-कल्याण के उद्देश्य से अनुप्राणित होगा।
- प्रबन्धन का कार्य बस नियन्त्रण न होकर प्रभावशीलता तथा विकास होगा।
- कार्य-संस्कृति का आधार आपसी प्रेम होगा, भय नहीं।
- प्रबन्धन के कार्य और निर्णय, ईमानदारी, दयालुता, सम्मानपूर्णता तथा पोषण-युक्त होगा।

- कार्य उद्देश्यपूर्ण तथा अर्थपूर्ण होगा।
- कर्मचारी प्रबन्धन पर विश्वास करते हुये अपनी बात को बिना डर के स्पष्ट रूप से रख सकते हैं।
- प्रबन्धन इसके माध्यम से कर्मचारियों में पदानुक्रम से परे एक-दूसरे पर विश्वास तथा प्रेम के भाव को विकसित कर सकता है।
- उत्पादन और सेवा में मानवीय मूल्यों की प्रधानता होगी।
- प्रबन्धन अपने कर्मचारियों के एक स्वतन्त्र दायित्व को स्वीकार करते हुये उनकी अभिक्षमता का सदुपयोग संगठन तथा समाज के हित में कर सकता है।
- प्रबन्धक अपने कर्मचारियों को जिम्मेदारीपूर्ण तथा सम्मानजनक तरीके से उपयोग करता है।
- आध्यात्मिक नेतृत्व का सिद्धांत कार्य-स्थल पर द्वंद, तनाव तथा किसी भी प्रकार की समस्या का समाधान प्रभावशाली तरीके से कर सकता है।
- नियन्त्रण आधारित नेतृत्व से सर्वेन्ट (servant) नेतृत्व की तरफ शिफ्ट कार्य-वातावरण को उन्नत तथा प्रभावशील बनायेगा।
- कार्य-स्थल पर नैतिकता, मनोबल, कार्य-सन्तुष्टि, विश्वास तथा उत्पादकता में वृद्धि होगी।

इस प्रकार कार्य-स्थल पर आध्यात्मिकता का अनुप्रयोग कार्य-संस्कृति में आमूल परिवर्तन कर कर्मचारी-प्रबन्धन सम्बन्धों में सकारात्मकता, उत्पादकता तथा मानवीय संवेदना के साथ संगठन के लक्ष्यों की प्राप्ति तथा उच्च-स्तर की कार्य-संतुष्टि होगा। एक अध्ययन के अनुसार (पवार. 2009, पे.375) किसी व्यक्ति की उच्च आध्यात्मिकता का स्तर उसे कार्य-स्थलीय तनाव से प्रभावित नहीं होने देता है, तथा उसमें स्वस्तिबोध का भाव उत्पन्न करता है। यह भाव कार्य के प्राप्ति समर्पण, उत्पादन, तथा कार्य संतुष्टि को भी बढाता है।

कार्य-स्थलीय आध्यात्मिकता और मानव संसाधन

कार्य-स्थल की संस्कृति का सर्वाधिक प्रभाव किसी संगठन के मानव-संसाधन पर होता है। आध्यात्मिक मूल्य किसी संगठन के मानव-संसाधन के स्वास्ति-बोध, अभिप्रेरणा एवं मनोबल कार्य के प्रति समर्पण के लिये आवश्यक होता है, साथ ही कर्मचारियों के तनाव में कमी, असन्तुष्टि तथा संघर्ष/द्वंद में कमी करता है। वर्तमान कार्य-संस्कृति तथा संगठन की संरचना में कर्मचारी को अपना अधिकतर समय संगठन तथा सहकर्मियों के साथ बिताना पड़ता है। कार्य-स्थल पर ही हम लोग ज्यादातर समय व्यतीत करते हैं तथा इसी के माध्यम से समाज में सार्थक योगदान देते हैं। कार्य-संस्कृति में आध्यात्मिक मूल्यों का उपयोग कर्मचारी के जीवन को सार्थक रूप से प्रभावित कर आपसी सम्बन्धों को उन्नत कर संगठन तथा कर्मचारी को प्रभावशाली बनाता है। वर्तमान युग असुरक्षा, तनाव तथा गिरते मानवीय मूल्यों का प्रतिबिम्ब बनता जा रहा है। ऐसे समय में मानव-संसाधन प्रबंधन के लिये आध्यात्मिकता नेतृत्व/प्रबन्धन हेतु महत्वपूर्ण माध्यम हो सकता है। इस प्रकार की परिचर्चा, शोध तथा प्रयास वर्तमान युग में किसी संगठन की प्रभावशीलता तथा उत्पादकता के साथ-साथ किसी कर्मचारी की संतुष्टि का स्तर, तनाव प्रबन्धन, कार्य के प्रति समर्पण तथा जीवन को अर्थपूर्ण उद्देश्य प्रदान करने के लिये आवश्यक है (नेक, 2002)।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में कह सकते हैं कि आध्यात्मिकता एक प्रक्रिया है, कोई लक्ष्य नहीं। संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति तथा कर्मचारी की संतुष्टि दोनों को प्राप्त करने में सहायक होती हैं। मानव संसाधन-

प्रबन्धन में आध्यात्मिकता के अनुप्रयोग हेतु कोई संगठन निम्नलिखित उपागमों/उपायों का प्रयोग कर सकता है (अनु हुनडोना, 2013)।

- प्रत्येक संगठन मे एक समिति का गठन जो संगठन के उपयुक्त आध्यात्मिक मूल्यों/प्रक्रियाओं की व्याख्या कर सके।
- सर्वे करना जिससे संगठन के वर्तमान स्थिति का बोध हो सके।
- इसके लिये आवश्यक है कि कर्मचारियों में यह विश्वास हो कि संगठन में खुला सम्प्रेषण हो, जिससे वे अपनी बात स्पष्ट रूप से रख सकें।
- व्यक्तित्व-विकास के लिये संगठन में सेमिनार तथा व्याख्यान का आयोजन, जिससे अन्तदर्शन हो सके और आध्यात्मिक मूल्यों की महत्ता के बारे में पता चल सके।
- संगठन ऐसे नियम बनायें जिससे इन मूल्यों का संवर्धन तथा पोषण हो सके।
- संगठन में आध्यात्मिकता का प्रमुख पक्ष है कि कर्मचारी को सीखने की प्रक्रिया में गलती से डर न हो बल्कि वह गलती को सीखने की प्रक्रिया समझे।
- आध्यात्मिकता का अर्थ प्रतिस्पर्धा का न होना नहीं होता है, बल्कि स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का होना कार्य स्थलीय आध्यात्मिकता का ही प्रतिरूप है।
- उपर्युक्त प्रविधियों का अनुप्रयोग किसी संगठन में आध्यात्मिकता के प्रयोग के लिये आवश्यक है तथा प्रभावशाली मानव-संसाधन प्रबन्धन द्वारा कार्य-संतुष्टि तथा उत्पादकता का हेतु है।

उपसंहार

वर्तमान युग में कार्य-स्थल सिर्फ उत्पादन और बाजार नहीं है बल्कि संगठन में कार्यरत कर्मचारियों के जीवन को अर्थ प्रदान करने, उद्देश्य प्रदान करने तथा मानवीय मूल्यों के संवर्धन और पोषण का भी माध्यम है। सभी संगठन अपने कर्मचारियों की पूर्ण सक्षमता का सदुपयोग करते हुये संगठन को प्रभावशाली बनाना चाहते है। भारतीय परम्परागत ज्ञान, वैदिक संस्कृति तथा भगवत गीता में प्रतिपादित 'कर्म योग' का सिद्धांत अभी तक इस दिशा में अध्ययनों का मूल आधार रहा है। इस दिशा में हो रहे शोध-कार्यो से संगठनों में कार्यरत मानव-संसाधन को अवगत कराने से शोध-कार्यो की उपादेयता और भी बढ जायेगी। संगठनात्मक नागरिकता-व्यवहार, कर्मचारी-संतुष्टि तथा समर्पण एवं संगठन में बने रहने की इच्छा आवश्यक रूप से आध्यात्मिकता से जुडा हुआ गोचर है। इस दिशा में भारत तथा अन्य देशों में हो रहे शोध-कार्यों का आपसी सामन्जस्य संगठनों में मानव-संसाधन की गुणवत्ता तथा प्रभावशीलता बढाने का अपूर्व माध्यम हो सकता है।

*****

मानव विकास के मौलिक सिद्धांत

बिपिन पारचा

मानव विकास एवं सेवा के लिए हमें निरंतर जागरूक होना चाहिए। हमें यह विचार करना चाहिए कि हम इस संसार में किसलिए हैं और हमारा लक्ष्य क्या होना चाहिए। यदि हम गहराई से विचार करें तो हमें ज्ञात हो जाता है कि मनुष्य दूसरों के लिए जीता है, जिनकी खुशियों और मुस्कराहटों में हमारी खुशियां निहित हैं। हमें दूसरों की सेवा में समर्पित होना चाहिए और यही हमारी मौलिकता है। दूसरे वे असंख्य लोग हैं जिनके भाग्यों से हम सहानुभूति की डोरी से बंधे हैं। हमें यह भी याद करना चाहिए कि हमारा जीवन असंख्य जीवित और मृत लोगों के श्रम से बुना है। यदि हम सौहार्द, प्रेम, सहानुभूति, अहिंसा से मानव-जीवन के विकास के लिए कटिबद्ध हो जाएँ तो निश्चय ही मानव मात्र का कल्याण हो सकता है। दूसरी बात यह है कि हमें भी उसी मात्रा में श्रम करना होगा जिस मात्रा में हमें प्राप्त हो रहा है। मानवता की रक्षा के लिए अंधविश्वास, भ्रम, रूढियां, विद्वेष, घृणा को सर्वथा नकारना व नष्ट करना होगा ताकि एक उन्नत समाज के निर्माण में हम अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकें।

1. **परंपरागत रूढ़ियों को दूर करना :** मानव मूल्यों की रक्षा शिक्षित शक्ति प्रतिभा के माध्यम से उच्च गुण संपन्न मानव समाज बनाने में प्रयत्नशील होना चाहिए। मानवता की रक्षा का एक मात्र उपाय मानव-समाज के सर्वांगीण विकास में धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक जो भी बाधाएं हों, उन्हें दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि हमें अन्य राष्ट्रों की प्रतियोगिता में जीवित रहना है तो समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जागृत करना होगा। उसे शिक्षित कर आचार-विचार, कर्तव्य, पाप, पुण्य का विवेक सिखाना होगा। इस प्रकार समुन्नत संगठित कर आगे बढाना होगा। यदि मानव के लिए निष्कंटक, आलस्यहीन, प्रमाद-रहित, सरल, सादा, उच्च विचार वाला जीवन चाहते हैं तो हमें राष्ट्रीय एकता के लिए मनुष्यत्व का विकास करना होगा जिसमें हम सब सुखी हों। सब शिक्षित प्रकाशमान हों। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि हो। स्वास्थ्य, सुख, समृद्धि और शान्ति के साधन मानव मात्र के लिए सुलभ हो सकें।

2. **सद्भावना का विकास :** पीड़ित मानवता के प्रति सद्भावना के विकास की बड़ी आवश्यकता है। जब तक मानव प्रतिरक्षा के लिए कसक, पीड़ा की भावना, दिल में संवेदना महसूस नहीं होती तब तक हम मानवता का विकास नहीं कर सकते। जब तक दूसरों पर होते हुए अत्याचार हमें तिलमिला नहीं देते तब तक हम संकुचित स्वार्थों के दायरे में बंद हैं, और मानवता से दूर हैं। इसके लिए हमें सत्य, अहिंसा, परमार्थ के मार्ग का स्मरण रखना चाहिए, जिससे मानवता का कल्याण हो सके।

3. **आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति :** दूसरों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हमें निजी आवश्यकता की पूर्ति अपनी आवश्यक आवश्यकताओं के आधार पर पूर्ण करनी चाहिए। अपने निहित स्वार्थों से दूसरों का अहित न हो, मेरी आवश्यकता पहले पूरी होनी चाहिए जैसे विचारों का त्याग करना चाहिए। मुझे नहीं चाहिए, आप लीजिए यह नीति ऐसी है जिसके आधार पर मानवता का विकास हो सकता है। शान्ति स्थापित की जा सकती है। एक सौहार्दपूर्ण माहौल का निर्माण किया जा सकता है।

4. **पारस्परिक व्यवहार :** मनुष्य यदि सच्चा मानव जीवन जीना चाहे तो उसे पारस्परिक सद्भाव का आश्रय लेना चाहिए। सद्भाव ही सत्संगति का गुण बन जाता है, जिससे बुरे विचारों का नाश होता है और शुभ संस्कारों का निर्माण होता है। हमें राग-द्वेष, ईर्ष्या, घृणा का त्याग कर स्वार्थ के स्थान पर दूसरों के प्रति सद्भावना का विकास करना चाहिए। यदि हम दुनिया की आंखों में धूल झोंक कर, झूठ बोल कर, धोखा देकर, पक्षपात कर ऊंचा

उठ भी जाते हैं तो कल अवश्य ही उसका प्रमाद जीवन में उतर आयेगा, जिससे आत्मग्लानि की पीड़ा सहन करनी पड़ेगी। अत: दीन, शोषित, दुखी, पीड़ितों के प्रति निर्दयता नहीं करनी चाहिए। हमेशा दूसरों के प्रति शुभ भावनाएं विकसित करनी चाहिए। यह भावना एक दिन आपके जीवन में दिव्य संदेश बनकर अच्छे भविष्य का आश्वासन दिलाएगी।

5. सकारात्मक सोच : जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सकारात्मक सोच की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब व्यक्ति की सोच सकारात्मक होती है तो वह सरलता से आगे बढ़ता है। जीवन में अच्छे-बुरे अनुभव मिलते रहते हैं जो मन को हतोत्साहित भी करते हैं। लेकिन दूसरों के प्रति सकारात्मक सोच मन के हतोत्साह को उत्साह में सरलता से बदल देती है, जिससे मानव-मात्र का विकास हो सकता है।

6. आलोचनाओं का सामना : पुरानी अवधारणा व रूढ़ियां धीरे-धीरे बदल रही हैं। इसमें राजा राममोहन रॉय, पं. ईश्वरचंद विद्यासागर, दयानन्द सरस्वती आदि समाज सुधारकों ने अपना योगदान दिया है। समाज सुधारकों को भी कई आलोचनाओं का सामना करना पड़ा। आलोचनाएँ मन को विचलित कर सकती है। लेकिन सत्य के लिए इनसे घबराना नहीं चाहिए। कालांतर में आलोचनाएँ सद्भावना में परिवर्तित हो जाती है जैसे - सती प्रथा, बाल-विवाह के उन्मूलन आदि इसके उदाहरण हैं।

7. मानव सेवा में कर्म की प्रधानता : संसार कर्म-प्रधान है। कर्म किये बिना हम किसी की भी सेवा नहीं कर सकते। इसलिए कर्म ही पूजा है, कर्म ही सर्वश्रेष्ठ है, जिससे संसार सुन्दर और सुखद है। इसके विपरीत यदि दुष्कर्म है तो संसार भी उसी के अनुरूप कष्ट एवं पीड़ा से भरा है। यदि कर्म विश्व-मानवता के लिए अर्पित हो जाता है तो इसी कर्म से मनुष्य संसार से पार जा जाता है।

8. मानव-मात्र के कल्याण की भावना : संसार में आज भी ऐसे अनेक मानव-रत्नों के साक्षात्कार हो जाते हैं जो मानव-मात्र के कल्याण के लिए विश्व-बन्धुत्व, प्रेम, सौहार्द, नैतिकता, सहानुभूति से ही अपनी प्रतिष्ठा हासिल नहीं करते अपितु अपनी उदारता, सहिष्णुता, त्याग, परहित तथा जन-हित की सद्भावना से मानवता की सेवा करते हैं।

जो मानव विकास के लिए मानव-मात्र के चित्त में आनन्द और शांति प्रदान करने के लिए मानवता का बीज बोता है, वही महान है। वह आनंदित हो कर फलों का संचय करता है। अपने हाथों से अपने प्रत्येक कर्म को दिव्य ऊर्जा से भर देता है। कर्म का संचय आस-पास खड़े हो कर सत्कर्मों के फल प्रदान करने के लिए बाट जोहता है। केवल वही व्यक्ति इस निस्सार संसार में महान है, जो इस संसार में प्रत्येक प्राणी को भगवान का अंश मान कर मानव-सेवा में अपने कर्मों को अर्पित करता है। यही मानव-विकास की मौलिक सार-संपदा है।

*****

समुद्री खनन : एक नई खलबली

पूरण सिहं राठौड़

धरती के बाद अब समुद्र के भीतर छिपे खनिजों पर उद्योगों की नज़र पड़ चुकी है। खनिज, जो बड़े उद्योगों के लिए कच्चे माल के तौर पर इस्तेमाल होते हैं, उनकी आज लगातार कमी होती जा रही है। इस कमी के अंतर को समाप्त करने के लिए समुद्र के दोहन की कोशिश तेज हो गई है। इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 'इंटरनेशनल सीबेड ऑथोरिटी' बनायी गई है, जिसका उद्देश्य खनिज संपदा के दोहन के संदर्भ में देशों पर नियंत्रण रखना और उन्हें अनुमति प्रदान करना है।

इस संगठन ने दोहरे मापदंड अपनाए हुए हैं, जहां एक तरफ यह समुद्र-सरंक्षण की चिंता जताता है, वहीं दोहन की अनुमति भी इसका उद्देश्य है। इसकी अनुमति के मुताबिक फिलहाल करीब 5 लाख वर्ग किमी क्षेत्र में लगातार 11 हजार मीटर समुद्र के भीतर तक खनन हो सकेगा। उदाहरण के तौर पर दुनिया में कम्प्यूटर व स्मार्ट फोन का व्यापार तेजी से पनप रहा है। इसके निर्माण में इस्तेमाल होने वाले खनिज समुद्र में बहुतायत से उपलब्ध हैं। खासतौर से कॉपर, निकल, ऐल्यूमिनीयम, जिंक, मैंगनीज आदि खनिज लगातार भू-खनन से समाप्ति की ओर हैं।

भारत में खनिज पदार्थों के दोहन के लिए 'डीप ओश्यन मिशन' के तहत प्रोजेक्ट अक्टूबर 2019 में प्रारंभ किया गया। इसमें पॉलीमैटेलिक खनिज जैसे-कोबाल्ट, मैंगनीज, निकालने के लिए खनन होगा। करीब 6000 मीटर तलहटी में यह दोहन किया जायेगा। वैसे भारत को 1987 में ही खनन की अनुमति मिल गई थी।

समुद्र की गहराई में उपलब्ध खनिजों का विवरण इस प्रकार है:

औसत गहराई	मिलने वाले खनिज
4000-6000 मीटर	निकल, कॉपर, कोबाल्ट व मैंगनीज
800-2400 मीटर	कोबाल्ट, वेनेडियम, प्लेटिनम
1400-3700 मीटर	कॉपर, जिंक, सोना तथा चांदी

ऐसा नहीं है कि समुद्र में होने वाले खनन के कारण पर्यावरण पर दुष्प्रभाव की आशंकाएं ना हो। ब्रिटेन के एक बड़े अखबार गार्जियन ने इसका विरोध करने के लिए कमर कसी है। लेकिन सीबेड ऑथोरिटी ने दावा किया है कि जो भी खनन होगा, वो उचित तकनीक से होगा। लेकिन सच यह है कि अभी तक हमारे पास कोई भी ऐसा अध्ययन व रिपोर्ट नहीं है, जो यह बता सके कि समुद्र में खनन की शैली क्या होगी ? इसमें प्रयोग होने वाले जो

तमाम उपकरण होंगे, वे किस स्तर के होंगे ? यही नहीं, इनके पर्यावरणीय प्रभाव के आकलन की कोई जानकारी भी हमारे पास उपलब्ध नहीं है।

खनन-क्षेत्र में कुछ इलाके ऐसे भी है, जहां विशिष्ट जीव प्रजातियाँ हैं और उनके पास सूरज की किरणें भी नहीं पहुचंती। फिर भी कुछ धातु जैसे कोबाल्ट, मैंगनीज, निकल आदि के विषैले प्रभाव भी होते हैं। यदि हमने समुद्र की तलहटी में खनन के लिए छेड़छाड़ की तो इस बात की आशंका है कि यही तत्व पानी में घुलकर जहरीली परिस्थितियाँ पैदा करेंगे। फिर वहां की जीव प्रजातियों पर दुष्प्रभाव पड़ेगा। आज हम हर पारिस्थितिकी तंत्र को संकट में डाल रहे हैं, चाहें वह पृथ्वी का हो या समुद्र का हो।

सबसे बड़ी बात इस कार्य से जनता को भी जोड़ना होगा और उनके माध्यम से एक आम सहमति बनानी चाहिए, क्योंकि ऐसे विकास में लाभ मुट्ठी भर लोगों का होता है, पर नुकसान सभी को उठाना पड़ता है।

*****

सविनय अवज्ञा

अवज्ञा सविनय तभी मानी जा सकती है जब वह सच्चे हृदय से की जाए, आदरभाव लिए हो, संयमित हो, कभी उद्धत रूप ग्रहण न करे, सुस्थापित सिद्धांतों पर आधारित हो, स्वेच्छाचारिता के दोष से मुक्त हो और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसके पीछे कोई द्वेष या घृणा की भावना न हो । मेरी निश्चित राय है कि सविनय अवज्ञा वैधानिक आंदोलन का विशुद्धतम रूप है। हां, यदि उनका 'सविनय' अर्थात अहिंसक रूप केवल छद्मावरण है तो वह घटिया तथा तिरस्करणीय है। यदि अहिंसा पर पूरी ईमानदारी से रहा जाए तो उग्र-से-उग्र अवज्ञा भी हिंसा को नहीं भड़काएगी, अतः उसकी निंदा करने का अवसर ही नहीं आएगा । कोई बड़ा या तेज आंदोलन भरपूर जोखिम लिए बिना नहीं चलाया जा सकता, और बड़े-बड़े जोखिमों से भरी न हो तो जिंदगी जीने योग्य नहीं मानी जा सकती। क्या संसार का इतिहास यह नहीं बताता कि अगर जोखिम न होता तो जिंदगी में कोई रोमांच ही न होता ? सविनय अवज्ञा नागरिक का जन्मजात अधिकार है। वह अपनी आदमियत को खोए बगैर इस अधिकार को छोड़ने का साहस नहीं कर सकता। सविनय अवज्ञा से अराजकता कभी उत्पन्न नहीं होती। वह आपराधिक अवज्ञा से उत्पन्न हो सकती है। प्रत्येक राज्य आपराधिक अवज्ञा को बलपूर्वक कुचल देता है। यदि नहीं, तो वह स्वयं नष्ट हो जाता है।

सत्याग्रही विवेकपूर्वक तथा स्वेच्छा से समाज के नियमों का पालन करता है, क्योंकि वह इसे अपना पवित्र कर्तव्य मानता है। समाज के नियमों का इस प्रकार पालन करने से ही वह ऐसी स्थिति में आ पाता है कि यह निर्णय कर सके कि कौन-से नियम अच्छे तथा न्यायोचित हैं और कौन-से अनुचित तथा अन्यायपूर्ण। तभी सुनिश्चित परिस्थितियों में, किन्हीं नियमों की सविनय अवज्ञा करने का अधिकार उसे मिलता है।

- महात्मा गांधी

बदलाव जीवन अकाट्य सत्य

प्रत्यक्ष शर्मा

लोगों का यही मानना होता है कि समय और तारीख के बदलते ही जिंदगी भी बदल जाती है। लेकिन वास्तव में जिंदगी का बदलाव किसी निश्चित तारीख या समय पर निर्भर नहीं होता, बल्कि यह तो सतत चलने वाली हर किसी के जीवन में होने वाली प्रक्रिया है। जिंदगी हमेशा चलती रहती है। जीवन में यदि कोई चीज अस्थिर है तो वह बदलाव है। जिंदगी का हर एक पल बदलता रहता है। फिर चाहे उन पलों में आप नए घर भी जा सकते हैं। शादी या तलाक भी कर सकते हैं। बच्चे को जन्म भी दे सकते हैं। आर्थिक लाभ या हानि भी हो सकती है। और कुछ भी बदलाव हो सकते हैं। ये सब कुछ हम सभी के जीवन में होता है। हमारे जीवन के ये एक प्राकृतिक भाग है। कभी-कभी बदलाव हमारे लिये अच्छे भी हो सकते हैं और कभी-कभी हमारे विरुद्ध भी हो सकते हैं। लोग बदलाव को जिंदगी की सबसे बड़ी चीज मानते हैं। क्योंकि बदलाव हम में से हर किसी के जीवन में होता ही है। इस दुनिया में चीजें कभी एक जैसी नहीं रहती। वे लगातार बदलती रहती है। इंसानी विचारों की तरह इस दुनिया में चीजे भी बदलती रहती है। बदलाव को रोकने के फिर चाहे आप कितने ही प्रयास क्यों न कर लें बदलाव यदि होना है तो आप उसे होने से नहीं रोक सकते। बदलाव जीवन का एक प्राकृतिक नियम है। हमें बदलाव को बिना किसी विरोध के स्वीकार करना चाहिए। साधारणत: सामान्य लोगों को बदलाव से काफी डर लगता है, क्योंकि उन्हें इस बात का डर होता है कि कहीं बदलाव से वे विपरीत परिस्थितियों में न फंस जायें। या फिर कहीं वे अपनी वर्तमान सफलता न खो बैठें। यह सिद्ध हो चुका है कि किसी के भी खिलाफ लड़ने से वह आपको और ज्यादा खराब बनाते हैं। बदलाव हमेशा अलग-अलग नहीं होते। जब आप बदलाव का सामना करते हैं तो उससे आपको गुस्सा, अशांति, दर्द, चिंता और तकलीफ हो सकती है, क्योंकि उस समय आपको नकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती रहती है। इसीलिए आनंदमय जीवन जीने के लिए आपको यह सलाह देना चाहूंगा कि जीवन में बदलाव को खुशी से अपनायें। अपनी महत्वपूर्ण ऊर्जा को गुस्सा करने में, चिंता करने में या लड़ने में व्यर्थ न करें बल्कि अपनी ऊर्जा को अच्छी आदतों में लगाये। यदि बदलाव से आपका कोई आर्थिक नुकसान होता है तो ज्यादा चिंतित मत होइए क्योंकि शारीरिक और मानसिक नुकसान की तुलना में आर्थिक नुकसान काफी छोटा होता है। यहां मैं आपको कुछ उपाय बताऊंगा जिससे आप बदलाव से होने वाले इन नुकसानों से बच सकते हैं। बदलाव को अपने विकास का अवसर समझें, उसे विकास के नजरिये से देखें और उसे हँसी-खुशी अपनायें। नयी परिस्थितियों का, नयी चुनौतियों का हमेशा स्वागत करें। आपमें सच का सामना करने की और उसे सुनने की आदत होनी चाहिये। तभी आप अपने लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं। बदलाव के इस अवसर को आपके कल्याण के लिये भगवान द्वारा भेजा गया पुरस्कार समझिये। आपको हमेशा यह याद रहना चाहिए की भगवान हमेशा आपके लिए अच्छा ही चाहता है और हमेशा आपका ध्यान रखता है। स्वर्ग में बैठा वह आपके पिता समान है। इसीलिए उनके द्वारा भेजे गए अवसरों के रास्तो पर चलते हुए आप कभी गलत मार्ग पर नहीं जा सकते। इसीलिए जीवन में बदलाव को आसानी से अपनायें। हमेशा याद रखें कि हर नकारात्मक परिस्थिति भविष्य में आपके लिये सकारात्मकता के बीज बोये रखती

है। यदि आपने कोई पुरानी चीज खो दी है तो डरिये मत। भविष्य में आपको उस से भी अच्छी चीज मिल सकती है। यदि आप बदलाव को चुनौतियों और अवसर की तरह स्वीकार करते हैं तो आपका जीवन एक समृद्ध जीवन बन सकता है। बदलाव का सबसे बड़ा उदाहरण हमारे सामने पिछले 150 सालों में देश में तेज़ी से बदलाव हुए हैं और इसी से देश का विकास हुआ है। ये बदलाव आज भी चलता जा रहा है। आप भी बदलाव की इसी दुनिया में रहते हैं इसलिए आपको सहज ही इसे अपनाना चाहिये।

"जो कुछ भी हुआ अच्छे के लिये हुआ।

जो कुछ भी हो रहा है अच्छे के लिये हो रहा है और, जो कुछ भी होगा अच्छा ही होगा।"

*****

सत्याग्रह का स्वरूप

सत्याग्रह की खूबी यही है कि आदमी को इसकी कहीं बाहर जाकर खोज नहीं करनी पड़ती, वह उसके सामने खुद आ खड़ा होता है। स्वयं सत्याग्रह के सिद्धांत में ही यह गुण अंतर्निहित है। धर्मयुद्ध, जिसमें न कोई बातें गोपनीय रखने की होती हैं और न जिसमें धूर्तता तथा असत्य के लिए कोई स्थान होता है, बिना खोजे प्रकट हो जाता है, और धर्मनिष्ठ व्यक्ति उसके लिए सदा तत्पर रहता है। जिस संघर्ष की पहले से बाकायदा योजना तैयार करनी पड़े, वह धर्मसम्मत संघर्ष नहीं माना जा सकता। धर्मसम्मत संघर्ष में तो ईश्वर स्वयं अभियानों की योजना बनाता है और लड़ाइयों का संचालन करता है। धर्मयुद्ध केवल ईश्वर के नाम में लड़ा जा सकता है; सत्याग्रही जब स्वयं को बिलकुल लाचार अनुभव करता है, टूटने की स्थिति में होता है और उसे चारों ओर पूर्ण अंधकार दिखाई देता है, तब ईश्वर उसकी मदद के लिए आ पहुंचता है। सत्याग्रह पर अमल करते हुए मुझे शुरू के चरणों में ही यह लग गया था कि सत्य के अनुकरण में विरोधी पर हिंसक वार करने की अनुमति नहीं है, बल्कि उसे धैर्य तथा सहानुभूति से अपनी गलती को दूर करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। बात यह है कि कोई चीज जो एक आदमी को सही लगती है, वही दूसरे को गलत लग सकती है। और, धैर्य का अर्थ है आत्मपीड़न। इस प्रकार, सत्याग्रह के सिद्धांत का अर्थ हुआ विरोधी के बजाए स्वयं को पीड़ित करके सत्य को प्रमाणित करना। सत्याग्रह और उसकी प्रशाखाएं, असहयोग तथा सविनय प्रतिरोध, और कुछ नहीं बल्कि पीड़ा के नियम के ही नये नाम हैं। सत्य और अहिंसा के योग से, तुम सारी दुनिया को अपने कदमों में गिरा सकते हो। सार रूप में, सत्याग्रह और कुछ नहीं बल्कि राजनीतिक यानी राष्ट्रीय जीवन में सत्य और शालीनता की प्रतिष्ठा है। सत्याग्रह पूर्ण अनात्मशंसा, अधिकतम विनम्रता, असीम धैर्य तथा प्रदीप्त आस्था है। यह अपना पुरस्कार स्वयं है। सत्याग्रह सत्य की अथक खोज और उस तक पहुंचने का दृढ़ संकल्प है। यह ऐसा बल है जो चुपचाप, और, जाहिरा तौर पर, धीरे-धीरे काम करता है।

- महात्मा गांधी

गिरते मानवीय मूल्यों की सुरक्षा

हरेन्द्र सिंह

एक जापानी कहावत है कि जड़ें जितनी मजबूत होंगी वृक्ष उतना ही ऊंचा और सुदृढ़ होगा। यही बात मानवीय मूल्यों के बारे में सत्य है। मनुष्य भीतर से जितना चरित्रवान और संयमी होगा उतना ही वह एक स्वस्थ समाज के निर्माण में भागीदार बनेगा। पहले हम यह समझें कि आखिर मानवीय मूल्य हैं क्या। इसके लिए हम उन शिक्षाओं को आधार मान सकते हैं जो हमारे धर्म-ग्रंथों में सदियों पहले लिखी गई हैं। वे आज भी उतना ही सत्य हैं जितना कि वे युगों पूर्व थीं। हम सबने यही पढ़ा-सुना है कि एक सच्चा मनुष्य वही है जिसमें सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया और दूसरों के प्रति सेवाभाव है। अर्थात् इंसान वही है जो सद्भाव से दूसरों के लिए जीता है।

हमें यह विचार करना है कि आज के युग में गिरते हुए मानवीय मूल्यों की रक्षा हम किस तरह कर सकते हैं। हमारी युगों पुरानी संस्कृति में मानवीय मूल्यों के विकास और उन्हें सहेजने के अनेक तरीकों का समन्वय है। मानवीय मूल्यों की प्रथम पाठशाला हमारा परिवार है जहां एक माँ बच्चे की पहली शिक्षक होती है। इसलिए जरुरी है कि लड़कियों को, जिन्हें भावी माँ बनना है, उन्हें चारित्रिक रूप से सुदृढ़ किया जाए। यह सही है कि आज का युग वैज्ञानिक उन्नति का युग है और बच्चों का पूरा जोर तकनीकी पढ़ाई पर है। परन्तु हम ध्यान रखें कि उनका आत्मिक विकास उससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

मानव-मूल्यों के संरक्षण के लिए अच्छी शिक्षा देना सर्वश्रेष्ठ उपाय है। माता-पिता मनमाने तरीकों से अपने बच्चों को नसीहतें न दें, बल्कि उनके समक्ष एक अच्छे और सच्चे इंसान का उदाहरण प्रस्तुत करें। बच्चे बड़ी गहनता से हमारे क्रिया-कलापों को नोट करते हैं और उन्हीं का अनुसरण करते हैं। किसी भी प्रकार की नकारात्मक शिक्षा से बुराई ही आती है। युद्ध, हिंसा जैसी भावनाओं से अपना ही विनाश होता है। अत: ज्ञान, संवेदना, करुणा के द्वारा शांति, सौहार्द, प्रेम बनाए रखने की नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए। यदि माता-पिता का आचरण झूठ, मक्कारी, चालाकी और क्रूरता से पूर्ण होगा तो तब हम कैसे आशा कर सकते हैं कि बच्चों का जीवन सदाचारी बनेगा।

मानवीय मूल्यों की सुरक्षा के लिए विद्यालय हमारे धर्म स्थान हैं। हम खुद भी वहां जायें और अपने बच्चों को भी धीरे-धीरे उस ओर मोड़ें। लेकिन इसमें एक सावधानी की जरुरत है। हम खुद इस बात को समझें और दूसरों को समझाएं कि धर्म का पालन करने में कट्टरता और लकीर के फकीर बनने की तरफ न चल पड़ें। हमें समझना होगा कि धर्म-स्थानों में किये जाने वाले कर्मकाण्डों के पीछे मूलभूत शिक्षा क्या है।

यदि हम अपने-अपने धर्म की आत्मा को जानें और उसकी तह में जायें तो हम पायेंगे कि बाहरी आडम्बरों को छोड़ दें तो हर एक धर्म की मूल शिक्षा के लिए तैयार हो सकते हैं । हर धर्म यही कहता है कि परमात्मा एक है, हम सब उसके अंश हैं और उसे पाने के लिए हमें अपनी आत्मा पर पड़ी कालिख को साफ़ करना होगा। कुछ

इस तरफ भी ध्यान देने की जरुरत है कि धर्म-स्थानों पर जाकर हम केवल कर्मकाण्डों में ही न फंसे रहें बल्कि वहां मिल-बैठकर अपने-अपने धर्म में निहित सार्वभौमिक सत्यों पर विचार विमर्श, खुली चर्चा करें। यदि एक बार हम अपने धर्म को अच्छी तरह जान लेंगे तो हममें दूसरे धर्मों के प्रति आदर और सहिष्णुता खुद-ब-खुद पैदा हो जायेगी। इसके अलावा दूसरे धर्मों में निहित अच्छी बातों को जानने, समझने और स्वीकार करने में भी हमें कदापि संकोच नहीं करना चाहिए ताकि मानव मूल्यों का सही अर्थों में संरक्षण हो सके।

हमारे विद्यालय भी मानवीय मूल्यों की उन्नति में सहयोग कर सकते हैं। वहां बच्चे एक-दूसरे से सहयोग, सहनशीलता, सेवा और सच्चाई जैसे गुणों का सरलता और सहजता से आत्मसात कर सकते हैं। वहां आयोजित प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर विद्यार्थी हार को स्वीकार करना, विजेताओं की प्रशंसा करना सीखते हैं। अध्यापक बच्चों को सत्य कहने और उसे सहने का साहस करना सिखा सकते हैं। मानवीय मूल्यों का हमारे समाज में विकास हो, इसके लिए हर एक को अपना योगदान करना होगा। केवल आलोचना करने से कुछ नहीं होगा। हम सोचें कि हम क्या कर सकते हैं। अंग्रेजी में एक कहावत है कि "मत कोसो अन्धकार को, हो सके तो एक दीप जला दो"। इसलिए यदि हर व्यक्ति स्वयं में सुधार करे, अपने आपको अन्दर से बदले, सद्गुणों को जीवन में धारण करे, दूसरों की बुराइयां देखने के बजाय अपने अवगुणों को ढूंढें और उन्हें दूर करें तो समूचा मानव समाज, स्वस्थ, सुन्दर से सुन्दरतर बन जायेगा।

*****

सत्याग्रह की तकनीक

विजेता के हाथ अपनी आत्मा को बेचने से इंकार करने का अर्थ है कि तुम वह काम नहीं करोगे जिसे करने के लिए तुम्हारी अंतश्चेतना तुम्हें रोकती है। मान लो कि 'शत्रु' तुम्हें जमीन पर नाक रगड़ने या अपने कान पकड़ने या इसी तरह के कोई लज्जाजनक काम करने के लिए कहे तो तुम इन्हें करने से इंकार कर दोगे। लेकिन वह तुमसे तुम्हारी संपत्ति छीन ले तो तुम आपत्ति नहीं करोगे, क्योंकि अहिंसा का पुजारी होने के नाते तुमने शुरू से ही निर्णय कर लिया है कि सांसारिक पदार्थों का आत्मा से कोई वास्ता नहीं है। जिसे तुम अपना मानते हो, उसे अपने पास तभी तक रखोगे जब तक दुनिया रहने देगी। अपने मन के वश में न होने का अर्थ यह है कि तुम किसी प्रलोभन के शिकार नहीं होंगे। आदमी प्रायः इतना दुर्बलमनस्क होता है कि वह लालच और मीठे शब्दों के जाल में फंस जाता है। हम अपने सामाजिक जीवन में यह रोज होता देखते हैं। दुर्बलमनस्क व्यक्ति सत्याग्रही नहीं हो सकता। सत्याग्रही का 'न' अटल 'न' और उसका 'हां' शाश्वत 'हां' होता है। केवल ऐसे ही व्यक्ति में सत्य और अहिंसा का पुजारी होने की ताकत होती है। लेकिन यह जरूर है कि आदमी को दृढ़ निश्चय और जिद का फर्क समझना चाहिए।

- महात्मा गांधी

इंटरनेट सर्वोत्तम-विश्वकोश

दिनेश कुमार

'इंटरनेट' एक ऐसा वाक्य है जिसने मानव जीवन को सूचना-क्रान्ति के रूप में बढ़े पैमाने पर प्रभावित किया है। आज इंटरनेट समाज में सूचनाओं को संप्रेषित करने और ज्ञान के प्रसारण में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। लगभग सभी इस शब्द से भली भांति परिचित हैं। इंटरनेट तेजी से प्रगति की ओर बढ़ रहा है। इंटरनेट मानव मस्तिष्क की एक अद्‌वितीय संरचना है। यह दूरसंचार के साधनों का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। इसकी ई-मेल सुविधा को हर वह व्यक्ति प्रयोग में ला रहा है जो इंटरनेट से वाकिफ है। इंटरनेट दूरसंचार के अलावा कई और सुविधाएं भी उपलब्ध कराता है। इसकी सेवाएं मानव-मस्तिष्क की कल्पनाओं से भी परे है। इंटरनेट हमारे दिन-प्रतिदिन के कार्यों में भी उपयोगी सिद्‌ध हो रहा है। इन्टरनेट के माध्यम से हमें हर क्षेत्र की नवीनतम सूचनाएं प्राप्त होती हैं जैसे शिक्षा, विज्ञान, खेल, वाणिज्य और व्यापार, सिनेमा जगत, सूचना और प्रोद्‌योगिकी आदि। इस तरह से इंटरनेट को मानव द्‌वारा रचित सबसे उत्तम विश्वकोश कहा जा सकता है।

इंटरनेट का अभिप्राय : सबसे पहले हमें यह जानना आवश्यक है कि इंटरनेट क्या है। 'इंटरनेट' का अर्थ होता है 'नेटवर्क का जाल'। नेटवर्क एक अंग्रेजी का शब्द है जिसका अर्थ है 'जाल'। इंटरनेट की परिभाषा जो सामान्य व्यक्ति के लिए उपयुक्त होती है वह यह है कि इंटरनेट अनगिनत प्रतियोगिताओं, मशीनों, सोफ्टवेयर कार्यक्रमों और दुनियां भर की सूचनाओं से बना हुआ है। इस तरह से हम कह सकते हैं कि इंटरनेट के माध्यम से दुनियां भर के लोग किसी भी एक विषय में लगातार जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। नेटवर्क कम्प्यूटरों की एक श्रृंखला है जिसके तहत अनेक कम्प्यूटर एक दूसरे से प्रेषण मार्गों (ट्रांसमिशन पाथ्स) के द्‌वारा जुड़े हुए हैं। इसमें किसी विशेष सूचना या संदेश को किसी एक कम्प्यूटर पर भेजा जाता है। यह प्रणाली दो पक्षीय वार्ता पर निर्धारित है (टू वे कम्युनिकेशन) अर्थात् यदि कम्प्यूटर 1, कम्प्यूटर 2 को कोई संदेश या सूचना भेज रहा है तो कम्प्यूटर 2 उसका उत्तर देगा।

इंटरनेट का उद्‌भव : इंटरनेट सुविधा विश्वसनीय नेटवर्किंग का एक नतीजा थी, जो रक्षा मामलों के लिए बनाई गई थी। इसके वित्तीय खर्चे का प्रबंध रक्षा कार्यालय (डिपार्टमेंट ऑफ डिफेंस) ने 1919 में किया जो अमरीका में स्थित है। सर्वप्रथम इस सेवा का प्रयोग रक्षा मामलों के लिए ही किया गया किन्तु समय के साथ-साथ इसके प्रबंधन में हुए विस्तार के कारण इसे दो भागों में विभाजित करना पड़ा।

(1) रक्षा अनुसंधान से संबंधित मामले

(2) निजी मामले/दूसरे मामले

इस प्रकार से इंटरनेट ने धीरे-धीरे सम्पूर्ण विश्व में अपनी पकड़ मजबूत कर ली और यह सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होने लगा। इसकी उत्पत्ति ने लाखों लोगों को रोजगार के साधन उपलब्ध कराए जो कि सम्पूर्ण विश्व के लिए एक अच्छा संकेत था।

इंटरनेट का महत्त्व :- इतने कम समय में सूचना और प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में विस्तार ने लोगों को इंटरनेट को दूरसंचार के माध्यम के रूप में ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया। इस क्षेत्र में हुए विस्तार के कारण लोगों को एक ऐसे माध्यम की आवश्यकता पड़ी जो उनको दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। लोगों ने इंटरनेट का अधिकाधिक प्रयोग करना सीखा और अपने इस विचार को उन्होंने इंटरनेट के माध्यम से व्यावहारिक रूप दिया।

इंटरनेट जिसे 'नेट' भी कहा जाता है एक ऐसा माध्यम बन गया जिसने लोगों की सभी समस्याओं का समाधान दिखा दिया। इंटरनेट के माध्यम से दुनियां भर के कम्प्यूटर एक दूसरे से जुड़े और सूचनाओं का आदान-प्रदान होने लगा। इंटरनेट से हम आज अपने विचार और तथ्य एक दूसरे के समक्ष विना किसी रोक-टोक के रख सकते है। इसके द्वारा हम कोई भी सेवा या सॉफ्टवेयर मिनटों में एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर पर (डाउनलोड) निकाल सकते हैं। इसके माध्यम से हम कोई भी प्रयोग (एप्लीकेशन) लिख सकते हैं जो सभी इंटरनेट सॉफ्टवेयर के अनुकूल हो।

व्यापार और वाणिज्य में भी इसके तहत काफी बढ़ोतरी हुई है। अब कोई भी संस्था अपना विज्ञापन लाखों लोगों तक आराम से पहुँचा सकती है। शिक्षा के क्षेत्र में इसका बहुत प्रसार हुआ है। आज बच्चे अपने विषय से संबंधित कोई जानकारी इंटरनेट के माध्यम से मिनटों में प्राप्त कर सकते हैं। बिजली का बिल, टेलीफोन बिल आदि सभी कार्य आसानी से इंटरनेट के द्वारा पूरे किए जा सकते हैं। इसके द्वारा देश-विदेश का मानचित्र देख सकते हैं। आने जाने का मार्ग तलाश कर सकते हैं। परन्तु इसके साथ-साथ इंटरनेट से हानियाँ भी बहुत हैं।

आजकल ऐसी साईट भी हैं जो हमारी युवा पीढ़ी में हिंसा, मारधाड़ और अश्लीलता का प्रचार कर रही हैं जिससे हमारी युवा पीढ़ी का नैतिक पतन हो रहा है। इसके गलत प्रयोग से कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के व्यक्तिगत जिंदगी में दखल दे सकता है, जिससे कि दूसरों को अपमानित भी होना पड़ सकता है। इंटरनेट के माध्यम से बैंकिंग चोरियाँ भी बड़ी तेजी से बढ़ रही हैं।

इसके अत्यधिक प्रयोग से लोगों का आपस में संपर्क कम हो रहा है। मानसिक बीमारियां बढ़ी हैं, जो कि चिंता का विषय है। बच्चों के दिमाग पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। इसके अलावा हानिकारक रेडिएशन से मस्तिष्क पर बुरा असर पड़ रहा है।

इन सब को देखकर हम यह कह सकते हैं कि इंटरनेट मानव जीवन के लिए सर्वोत्तम विश्वकोश की भांति लाभदायक सिद्ध हुआ है। किन्तु इसके गलत प्रयोग से काफी नुकसान भी झेलना पड़ सकता है। इसलिए इसका उचित तरीके से प्रयोग ही अति उत्तम है जिसके द्वारा हमारा देश उन्नति की ओर अग्रसर हो सकता है। इसके लिए हमें चाहिए कि हमें अपनी युवा पीढ़ी को इंटरनेट से होने वाले लाभ और नुकसान दोनों से अवगत कराया जाए ताकि इंटरनेट का उचित प्रयोग हो सके।

यह सच है कि इंटरनेट से कई तरह के फायदे हैं। इससे हमें कई तरह की सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। आधुनिक डिजिटल युग में नई पीढ़ी जिस गति से नई टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर रही है उसे देखते हुए यही कहा जा सकता है कि इंटरनेट दुनियां का सर्वोत्तम विश्व-कोश है।

*****

सत्याग्रह की विजय

जब तक दुर्भाव है तब तक सत्याग्रह की स्पष्ट विजय असंभव है। लेकिन जो अपने को दुर्बल समझते हैं, वे प्रेम करने में असमर्थ होते हैं। इसलिए हमारा पहला काम यह होना चाहिए कि प्रतिदिन प्रातःकाल यह संकल्प करेः 'मैं दुनिया में किसी से नहीं डरूंगा। मैं केवल ईश्वर से डरूंगा; मैं किसी के प्रति दुर्भावना नहीं रखूँगा। मैं किसी का अन्याय सहन नहीं करूंगा। मैं असत्य पर सत्य से विजय प्राप्त करूंगा और असत्य का प्रतिकार करते हुए हर प्रकार की पीड़ा को भोगने के लिए तैयार रहूंगा। सत्याग्रही के लिए, समय की कोई सीमा नहीं होती, न उसकी पीड़ा-भोग की क्षमता की कोई सीमा होती है। इसलिए सत्याग्रह में पराजय नाम की कोई चीज नहीं है। ऐसा नहीं है कि देह को कम महत्व देने के कारण मैं सत्याग्रह में हजारों लोगों को स्वेच्छा से प्राणों का उत्सर्ग करते हुए देखकर प्रसन्न होता हूं। बात यह है कि मैं यह जानता हूं कि, दीर्घकाल में, सत्याग्रह में प्राणों की हानि न्यूनतम होती है और यह बलिदानियों का उदात्तीकरण तो करती ही है, उनके बलिदान से पृथ्वी का भी उदात्तीकरण होता है। एक बार यह चीज शुरू हो जाए और यदि यह काफी गहन हो तो इसका प्रभाव संपूर्ण विश्व में व्याप्त हो सकता है। आत्मा की उच्चतम अभिव्यक्ति होने के कारण यह महानतम बल है। मेरा अनुभव है कि हर न्यायोचित संघर्ष पर गुणोत्तर वृद्धि का नियम लागू होता है। लेकिन सत्याग्रह के मामले में तो यह नियम स्वयंसिद्ध है। जैसे-जैसे सत्याग्रह-संघर्ष प्रगति करता है, अन्य अनेक तत्व उसको बल प्रदान करने लगते हैं और उससे प्राप्त परिणामों में निरंतर वृद्धि होती जाती है। यह वस्तुतः अपरिहार्य है, और सत्याग्रह के प्रथम सिद्धांत के साथ ही जुड़ी है। कारण यह है कि सत्याग्रह में न्यूनतम ही अधिकतम भी है और चूंकि इस न्यूनतम में और ह्रास संभव नहीं है इसलिए सत्याग्रह में पीछे हटने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता; उसकी एक ही गति संभव है और वह है प्रगति। अन्य प्रकार के संघर्षों में मांग को थोड़ा ऊंचा करके रखा जाता है ताकि भविष्य में उसमें कुछ कमी करने की गुंजाइश रहे, इसलिए उन सब में गुणोत्तर वृद्धि का नियम निरपवाद रूप से लागू नहीं होता।

मेरी दृष्टि में सत्याग्रह दुनिया के सर्वाधिक सक्रिय बलों में से एक है। यह सूर्य की भांति है जो हर रोज बिना नागा पृथ्वी के ऊपर चमकता है। अगर हम समझ पाएं तो सत्याग्रह करोडों सूर्यों से भी अत्यधिक तेजस्वी है। यह जीवन और प्रकाश तथा शांति एवं सुख का प्रसार करता है।

- महात्मा गांधी

गांधी के विचारों की प्रासंगिकता

शशांक चन्द्रा

डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर जब 1958 में भारत आए तो उन्होंने कहा कि मैं दूसरे देशों में एक पर्यटक की तरह जा सकता हूं लेकिन मैं भारत में एक तीर्थयात्री हूं। उन्होंने कहा - शायद अन्य बातों से बढ़कर भारत ऐसी भूमि है जहां अहिंसक सामाजिक बदलाव की तकनीकें विकसित की गई, जिन्हें मेरे लोगों ने अलाबामा के मोंटगोमेरी और अमेरिका के पूरे दक्षिण में आजमाया है। हमने उन्हें प्रभावी पाया है - वे काम करती हैं। इसलिए डॉ. किंग, मोहनदास करम चन्द गांधी की जन्मभूमि भारत भ्रमण पर आए थे, जहां उन्हें शांति, सद्भाव, अहिंसा, आत्मनिर्भरता से उपजी समस्याओं के समाधान की बुनियादी तकनीकें हासिल की।

बापू दुनियाभर में करोड़ों लोगों को आज भी हौसला दे रहे हैं। प्रतिरोध के गांधीवादी तरीकों ने कई अफ्रीकी देशों में उम्मीद की भावना प्रज्वलित की। डॉ. किंग ने कहा था जब मैं अफ्रीका में घाना गया था तो वहां के प्रधानमंत्री नेक्रुमाह ने मुझसे कहा कि उन्होंने गांधी जी के काम के बारे में पढ़ा है और महसूस किया कि अहिंसक प्रतिरोध का यहां विस्तार किया जा सकता है। हमें याद आता है कि दक्षिण अफ्रीका में सिर्फ बहिष्कार हुये हैं।

नेल्सन मंडेला ने गांधी जी को 'पवित्र योद्धा' कहते हुए लिखा, असहयोग आंदोलन की उनकी रणनीति, उनका इस बात पर जोर देना था कि हम पर किसी का प्रभुत्व तब चलेगा जब हम अधीन रखने वाले का सहयोग करेंगे और उनकी अहिंसक प्रतिरोध ने हमारी सदी में कई उपनिवेश और नस्लवाद विरोधी आंदोलनों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रेरित किया। मंडेला के लिए गांधी भारतीय और दक्षिण अफ्रीकी थे। गांधी जी में मानव समाज के सबसे बड़े विरोधाभासों में पुल बनने की अनूठी योग्यता थी। 1925 में गांधी ने 'यंग इंडिया' में लिखा : किसी व्यक्ति के लिए राष्ट्रीयवादी हुए बगैर अन्तर्राष्ट्रीय होना असंभव है। अन्तर्राष्ट्रीयवाद तभी संभव होता है जब राष्ट्रवाद एक तथ्य बन जाता है अर्थात् जब अलग-अलग देशों के लोग संगठित होते हैं और फिर मिलकर कार्य करने में कामयाब होते हैं। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद की इस रूप में कल्पना की थी कि जो संकुचित न हो बल्कि ऐसा हो जो पूरी मानवता की सेवा करे।

महात्मा गांधी समाज के सभी वर्गों में भरोसे के प्रतीक भी थे। 1917 में गुजरात के अहमदाबाद में कपड़ा मिल की बड़ी हड़ताल हुई। जब मिल मालिकों और श्रमिकों के बीच टकराव बहुत बढ़ गया तो गांधी जी ने मध्यस्थता करके न्यायसंगत समझौता कराया। गांधी जी ने श्रमिकों के अधिकारों के लिए मजदूर महाजन संघ गठित किया था। इससे उजागर होता है कि कैसे छोटे कदम बड़ा प्रभाव छोड़ते हैं। उन दिनों 'महाजन' शब्द का उपयोग श्रेष्ठ के लिए आदर स्वरुप प्रयोग किया जाता था। गांधी जी ने 'महाजन' के साथ 'मजदूर' जोड़कर सामाजिक सरंचना को उलट दिया था। श्रमिकों के गौरव को बढ़ाकर उनके अन्दर आर्थिक आत्म निर्भरता के साथ जीवन को गरिमापूर्ण जीने की समझ पैदा की। गांधी जी ने साधारण चीजों को व्यापक जनमानस की राजनीति से

जोड़ा। चरखे और खादी को राष्ट्र की आत्मनिर्भरता और सशक्तीकरण से और कौन जोड़ सकता था। दुनिया भर में कई जन-संघर्ष हुए हैं लेकिन जनता की व्यापक भागीदारी गांधीवादी संघर्ष या उनसे प्रेरित संघर्षों को उनसे अलग करती है।

उनके लिए स्वाधीनता विदेशी शासन की गैर-मौजूदगी का नाम नहीं था। उन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत सशक्तीकरण में गहरा संबंध देखा। उन्होंने ऐसी दुनिया की कल्पना की थी, जिसमें हर नागरिक के लिए गरिमा व समृद्धि हो। जब दुनिया अधिकारों की बात करती है तो गांधी कर्तव्यों पर जोर देते हैं। उन्होंने 'यंग इंडिया' में लिखा : कर्तव्य ही अधिकारों का सच्चा स्त्रोत है। यदि हम सब अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें तो अधिकार ज्यादा दूर नहीं रहेंगे। 'हरिजन' पत्रिका में उन्होंने लिखा कि जो अपने आप कर्तव्यों को व्यवस्थित ढंग से अंजाम देता है, उसे अधिकार अपने आप मिल जाते हैं। धरती के उत्तराधिकारी के रूप में हम इसके कल्याण के लिए भी जिम्मेदार हैं, जिसमें इसकी वनस्पतियां और जीव शामिल हैं। गांधी जी के रूप में हमें मार्गदर्शन देने वाला सर्वश्रेष्ठ शिक्षक उपलब्ध है। मानवता में भरोसा रखने वालो को एकजुट करने से लेकर टिकाऊ विकास को आगे बढ़ाने और आर्थिक स्वावलंबन सुनिश्चित करने तक गांधी जी हर समस्या का समाधान देते हैं। हम भारतीय इस दिशा में अपना दायित्व निभा रहे हैं। जहां तक गरीबी मिटाने की बात है भारत सबसे तेजी से काम करने वाले देशो में है। स्वच्छता के हमारे प्रयासों ने दुनिया का ध्यान खींचा है। इंटरनेशनल सोलर अलायंस जैसे प्रयासों के माध्यम से भारत अक्षम ऊर्जा स्त्रोतों के दोहन में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इस अलायंस ने कई देशो को टिकाऊ भविष्य की खातिर सौर ऊर्जा के दोहन के लिए एक किया है। हम दुनिया के साथ मिलकर दुनिया के लिए और भी बहुत कुछ कर सकते हैं।

गांधी जी को श्रद्धांजलि देने के लिए मैं उस बात की पेशकश करता हूं जिसे मैं आइन्स्टीन चैलेंज कहता हूं। हम गांधी जी के बारे में अलबर्ट आइन्स्टीन का प्रसिद्ध वक्तव्य जानते हैं। आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से ही विश्वास करेगी कि रक्त-मांस का जीता-जागता ऐसा कोई व्यक्ति धरती पर हुआ था। हम यह कैसे सुनिश्चित करें गांधी जी के आदर्श भावी पीढियां भी याद रखें ? मैं विचारकों, उद्यमियों और टेक्नोलॉजी लीडर्स को आमंत्रित करता हूं कि वे इनोवेशन के जरिये गांधी जी के विचारों को फैलाने में अग्रणी भूमिका निभाएं।

आइए, हमारी दुनिया को समृद्ध बनाने और नफरत और तकलीफों से मुक्त करने के लिए कंधे से कंधा मिलाकर काम करें। तभी हम महात्मा गांधी के सपनों को पूरा कर सकेंगे, जो उनके प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो' में व्यक्त हुआ है। यह कहता है कि सच्चा मानव वह है जो दूसरे के दर्द महसूस कर सके, तकलीफों को दूर कर सके और इसका उसे कभी अहंकार न हो। दुनिया का आपको नमन है बापू !

*****

इंसानियत का पैगाम

अबरार आलम

मर्सिया उर्दू साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो उर्दू कविता की एक विधा है और जिसे शोक-गीत के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। किसी के मार्मिक व्यक्तित्व और उसकी शहादत पर मृतक की याद में लिखे गये शोक-गीत, कविता, कहानी, लेखों को उर्दू साहित्य में दस्ताने मर्सिया कहा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि जो लोग मर्सिया के मिसरों को पढ़ते-पढ़ते रोते है, उन्हें दुआएं अवश्य मिलती है। मर्सिया ने इंसान को जीने का सलीका सिखाया है। इंसानियत का पैगाम मर्सिया में साफ जाहिर हो जाता है। सख्त दिल इंसान को मर्सिया जरूर पढ़ना चाहिए। ऐसा ही एक पैगाम इस कहानी में भी है जो इस प्रकार है।

एक शख्स ने एक खूबसूरत लड़की से शादी कर ली। वह अपनी बीवी से बहुत मुहब्बत करता था। लेकिन कुछ समय बाद उस लड़की को जिल्द (स्किन) की बीमारी लग गयी, जिस वजह से उसकी खूबसूरती रोज-बरोज घटती जा रही थी। एक दिन उसका शौहर सफर पर निकला और वापस आते हुए उसे हादसा पेश आया जिसमें उसकी दोनों आँखें जाती रही। खैर उन दोनों की जिंदगी यूं ही चलती रही और उसकी बीवी की खूबसूरती काफी घटती रही। मगर अंधे आदमी को इस बात का इल्म नहीं था इसलिए उस लड़की की जिंदगी पर उसकी बदसूरती का कोई असर भी नहीं पड़ा और दोनों एक दूसरे को पहले की तरह चाहते रहे और एक दूसरे का ख्याल रखते रहे। खुदा का करना ऐसा हुआ कि एक दिन उस लड़की का इंतकाल हो गया। उसका शौहर इस सदमें से काफी गमगीन था। अब वह आदमी इस शहर को छोड़ कर कहीं और जाने लगा। जाते हुए रास्ते में एक शख्स ने पीछे से आवाज लगाई और कहने लगा अकेले कैसे जाओगे अब तक तो आप की बीवी आपकी मदद करती रही और आपका ख्याल रखती रही और आपकी आँखें बनी रही। इस नाबीना (अंधेपन) की हालत में दूसरी जगह पर आपकी कौन मदद करेगा। तब अंधे आदमी ने जवाब दिया मैं अंधा नहीं था मगर इसे ऐसे दिखा रहा था जैसे मैं अंधा हूँ, क्योंकि अगर उसे इस बात का पता होता कि मैं उसकी बदसूरती देख सकता हूँ तो यह एहसास उसे उसकी बीमारी से ज्यादा तकलीफ देता। इसलिए मैंने अंधे होने का नाटक किया। यह बहुत अच्छी बीवी थी। मैं हर हालत मैं उसे खुश रखना चाहता था। पर अब वह न रही, बस इसी का दुख है।

*****

उस आस्था का कोई मूल्य नहीं जिसे आचरण में न लाया जा सके।

- महात्मा गांधी

एक महात्मा का आशीर्वाद

बिधिचन्द्र शर्मा

किसी गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। उसका एक पुत्र था, जो रात-दिन उसकी सेवा करता था और खेती करके उसे स्वादिष्ट भोजन खिलाता था। कुछ दिनों के बाद बुढ़िया बीमार पड़ गई और उसका पुत्र रात-दिन उसकी सेवा में लग गया। अपनी माँ की सेवा में लगे रहने के कारण बुढ़िया का पुत्र सावन-भादो में खेतों को बराबर न कर सका और न उनमें कुछ बो सका। खेती न होने से बुढ़िया के भोजन का ठीक इंतजाम न हो सका और पुत्र दुखी होकर इधर-उधर भटकने लगा। फिर भी वह अपनी माँ को भूखा नहीं रखता था।

एक दिन बेल के पत्तों की दवाई के लिए बुढ़िया का पुत्र जंगल में गया और बेल के पेड़ पर चढ़कर पत्तों को तोड़ने लगा। इतने में एक भूखा शेर आया और ज्यों ही लड़का पेड़ से उतरा कि उसने उसे दबोच लिया। परेशान लड़का शेर से बोला, मेरी माँ बीमार है। दवा के लिए बेल के पत्तों को देकर मैं शीघ्र ही घर से लौटूँगा, तब मुझे खा लेना। अभी मत खाओ। मुझ पर दया करो।

इतने में एक महात्मा वहाँ आ पहुँचे, जहां शेर खड़ा हुआ था। दोनों हाथ जोड़कर लड़के ने प्रार्थना की, "हे भगवन, मुझ पर कृपा कीजिये और शेर को समझा दीजिये कि वह मुझे अभी न खाए। मेरी माँ बीमार है। एक वैद्य ने बेल के पत्तों के रस में दवा देने के लिए कहा है, इसलिए मैं यहाँ इन पत्तों को लेने आया था। मैं माँ को दवा देकर और उसके चरणों को छूकर शीघ्र ही यहाँ आऊँगा। तब शेर मुझे खा सकता है।

महात्मा इस लड़के की मातृ-भक्ति पर प्रसन्न हुए और बोले, "बेटा, यह शेर मेरा ही सेवक है। मैं तुझे आशीर्वाद देता हूँ कि तू सदैव अमर रहेगा और तेरी माँ भी अमर रहकर सब प्रकार के सुखों को भोगेगी। तेरे खेतों में सब प्रकार का धान उत्पन्न होगा और गरीबी तुझे कभी नहीं सताएगी। तू अपने खेतों को अब कभी मत जोतना। बेटा! जो पुत्र अपनी माँ की सेवा करता है, वह भगवान को बहुत प्यारा होता है और उसे भगवान सब प्रकार से सुखी रखता है। जाओ, तुम सुख से रहो।"

बुढ़िया के लड़के ने महात्मा के पैर छूए और देखा कि वहाँ न शेर था और न महात्मा थे। घर आते ही उसने अपनी माँ को सुंदर पलंग पर लेटे देखा। वह प्रसन्न थी। गाँव में शोर मच गया कि बुढ़िया के खेतों में सब प्रकार का धान बिना बोए फल-फूल रहा है।

इस प्रकार हमने देखा कि माता-पिता की सेवा करने से सभी दुख दूर हो जाते हैं।

*****

मोहनदास करम चंद गांधी
जन्म: 2 अक्टूबर, 1869, पोरबंदर, काठियावाड़ एजेंसी (अब गुजरात)
मृत्यु: 30 जनवरी 1948, दिल्ली
2 अक्टूबर,1869 में गुजरात के पोरबंदर में काठियावाड़ नामक स्थान पर पैदा हुए महात्मा गांधी का पूरा नाम था मोहनदास करमचंद गांधी। 1892 तक सब ठीक ठाक चल रहा था। वकालत पूरी हो चुकी थी। कस्तूरबा गांधी से विवाह के बाद 2 बेटे पैदा हो चुके थे। 1893 में दक्षिण अफ्रीका गए तो मानो सब बदल गया। और बस वहीं से शुरू होती है उनके महात्मा बनने की कहानी।

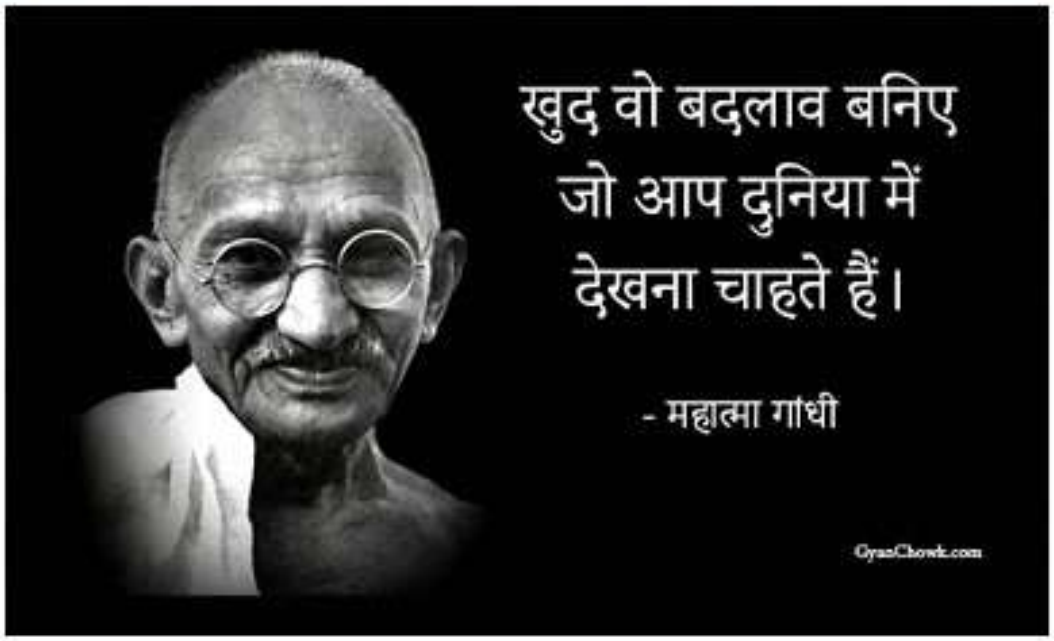
खुद वो बदलाव बनिए
जो आप दुनिया में
देखना चाहते हैं।
- महात्मा गांधी
GyanChowk.com

सत्याग्रह की संहिता

सत्याग्रही भय को सदा के लिए छोड देता है। इसलिए वह विरोधी पर विश्वास करने से कभी डरता नहीं है। विरोधी बीस बार भी उसको धोखा दे जाए, वह इक्कीसवीं बार उस पर विश्वास करने के लिए तैयार रहेगा। बात यह है कि मानव-प्रकृति में अडिग विश्वास ही सत्याग्रही के धर्म का सार है। जिसमें कानून का पालन करने की सहज वृत्ति न हो, वह सत्याग्रही नहीं। कानून का पालन करने की अपनी प्रकृति के कारण ही वह सर्वोच्च विधि, अर्थात अपनी अंतर्वाणी की आवाज, का निर्द्वंद्व होकर पालन करता है। चूंकि सत्याग्रह सीधी कार्रवाई का सबसे शक्तिशाली रूप है, इसलिए सत्याग्रही सत्याग्रह शुरू करने से पहले बाकी सब तरीकों पर अमल करके देख लेता है। तदनुसार वह पहले संबंधित प्राधिकारी से संपर्क करेगा और उसे जारी रखेगा, फिर जनमत का ध्यान आकर्षित करेगा, लोगों को संबंधित समस्या से अवगत कराएगा, जो उसकी बात सुनना चाहते हैं उनके समक्ष शांतिपूर्वक अपना पक्ष प्रस्तुत करेगा, और जब सभी उपाय चूक जाएंगे तब सत्याग्रह की शरण लेगा। लेकिन एक बार अंतर्वाणी का आदेश सुन लेने के बाद यदि वह सत्याग्रह शुरू कर देता है तो फिर किसी भी हालत में उससे पीछे नहीं हटेगा। सत्याग्रही यद्यपि हर समय संघर्ष के लिए तैयार रहता है, पर उसे शांति के लिए भी उतना ही उत्सुक रहना चाहिए। उसे शांति के किसी भी सम्मानजनक अवसर का स्वागत करना चाहिए। मेरा परामर्श एकमात्र सत्याग्रह पर ही अवलंबित रहने का है। आजादी प्राप्त करने का कोई अन्य अथवा बेहतर उपाय नहीं है। सत्याग्रही की संहिता में पशुबल के समक्ष आत्मसमर्पण करने जैसी कोई चीज नहीं है। समर्पण करना ही है तो पीड़ा के प्रति, संगीनधारी के प्रति कभी नहीं। सत्याग्रही के नाते मुझे अपने पक्ष की अन्य व्यक्तियों द्वारा समीक्षा एवं पुनः समीक्षा के लिए सदा प्रस्तुत रहना चाहिए और अगर कहीं कोई त्रुटि पाई जाए तो तुरंत उसका सुधार करना चाहिए।

- महात्मा गांधी

सुजाता
विभय कुमार झा

(कवि द्वारा पाली भाषा में बुद्ध के उपदेशों तथा बौद्ध साहित्य के गहन अनुसंधान से पहली बार यह सच्चाई सामने आई कि सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) की ज्ञान-प्राप्ति का प्रेरणा-स्रोत सुजाता नामक एक नारी थी। भूखे तपस्या कर रहे सिद्धार्थ को गाँव की नारी सुजाता ने चार बार खीर प्रस्तुत किया। तीन बार ठुकरा कर चौथी बार सिद्धार्थ ने खीर ग्रहण किया और वट वृक्ष के नीचे 49 दिनों बाद उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। सिद्धार्थ बुद्ध हो गये। बुद्ध की ज्ञान-प्राप्ति ही नहीं, आज भी प्रासंगिक उनके मध्यम-मार्ग के उपदेश का प्रेरणा-स्रोत भी सुजाता नामक नारी द्वारा प्रदत्त खीर ही थी। सुजाता के माध्यम से प्रेरणा-स्रोत रूप में समस्त नारी-शक्ति को यह कविता समर्पित है। चार बार खीर की प्रस्तुति नारी के चार रूपों - माया, माता, भक्ति तथा शक्ति के प्रतीक हैं।)

माया	माता	भक्ति	शक्ति
(प्रीति)	(वात्सल्य)	(श्रद्धा)	(शक्तिपात)
(राधा का भाव)	(यशोदा का भाव)	(मीरा बाई का भाव)	(प्रेरणा-श्रोत)

माया (राधा का भाव)

सत्यं शिवं सुन्दरम्
पत्तों की छांव में,
सपनों का राजकुँवर
अपने ही गाँव में।
जाने यह कौन पथिक
किसकी तलाश में?
जाने क्यों बंध गई,
इसके मोहपाश में?
सौम्य स्वरुप है,
सुन्दर ललाट है।
जाने किस देश का,
या हृदय-प्रदेश का
हो न हो कहीं का
युवराजेश है।
जोगी सा भेष है,
राजा सा रूप है।
मैं इसके ध्यान में,
यह किसके ध्यान में,
खोया है, खोई हूँ,

दोनों ही एक साथ।
कैसी यह साधना?
न जाने भावना।
अपनी भी सुध नहीं,
फिर भी सुधा की
वर्षा का दूत है।
समाधि में तो
निर्मोही बैठा है।
पर कुण्डलनी मानो
मेरी जग गई हो।
कैसा संयोग है?
फिर भी वियोग है!
कैसा जतन करूँ,
कोई बता दे।
क्यों न इसे मैं खीर खिला दूँ,
जो भूखे जोगी की भूख मिटा दे।
रूप तो सुंदर, मधुर है ही पर
अन्दर भी इसकी वैसी ही कुछ-कुछ,
प्रीत की मधुमय सरिता बहा दे।
खीर में दोनों ही, माधुर्य गर्मी भी,
खीर ही खिला दूँ।

(सिद्धार्थ द्वारा ठुकराए जाने के उपरान्त)

कैसा यह तिरस्कार?
खीर को अस्वीकार
कर जोगी ने गुत्थी को उलझा दिया है।
इनकी नजरों में क्या मैं अछूत हूँ?
या फिर, कुरूप हूँ?
या फिर, रूप ही मेरा अपराध है?
खीर तो खिलानी है, खीर मैं खिलाऊँगी
पर देनी होगी प्रीत को एक नई परिभाषा।
एक नए रूप में, एक नए अर्थ में,
एक नई रीत से, खीर मैं खिलाऊँगी।

माता (यशोदा का भाव)

नया नया सा कुछ सुजाता का रूप है,
माया नहीं, यह एक माता का रूप है।

पत्तों की छाँव में
अपने ही गाँव में
पलकें मुंदी है,
बैठा है फिर भी,
लगता है कुछ ऐसा
रूठकर कोई
नन्हा सा बालक भूखा सो गया हो।
क्यों न इसकी भूख मिटा दूँ,
चलो इसे मैं खीर खिला दूँ।

घुंघराले कुंतल, मासूम चेहरा,
माखन न मिलने से रूठा हुआ सा
या फिर,
अपने ही नटखटपने से थककर,
बालक कन्हैया भूखा सो गया हो।
चुप है, फिर भी लगता है मानो
सुजाता में छिपी जसोदा को कहीं से
रूठ कान्हा ने आवाज़ दी है।
क्यों न इसके नटखटपने को जगा दूँ
चलो इसे मैं खीर खिला दूँ।

भक्ति (मीरा बाई का भाव)

पत्तों की छाँव में
अपने ही गाँव में
बैठा है बैरागी धूनी रमाए,
ध्यान की धुन में सब कुछ भुलाए।
जग को जगाना है, मुँदी हैं पलकें,
दाँव पर अपना सब कुछ लगाए।
मैं इसके दाँव पर खुद को लगा दूँ,
चलो इसे मैं खीर खिला दूँ।
कठोर तप, कोमल काया,
कैसी विडम्बना !
सुना था किसी से अचेत हो गया था,
पाँचो शिष्यों ने संग छोड़ दिया था ।
फिर भी लगा है, कैसी लगन है!

बेसुध, बेखुद, खुद में मगन है।
प्रीति नहीं यह भक्ति का पात्र है।
तप में तपकर कुंदन सा निखरा है।
ओज ही ओज, चहुँ दिशि बिखरा है।
सत्य की खोज में,
सृष्टि की गुत्थी,
सुलझाने निकला है।
अनुपम बैरागी की भक्ति की रागिनी
प्राणों के तारों में बजने लगी है।
बैरागी में यह कैसा मेरा अनुराग है।
ज्ञान की ज्योति में
दु:ख के अंतिम कारण को ढूँढती
अन्दर ही अन्दर, इसकी यह यात्रा।
साधक का त्राटक अन्तर्मुखी है,
वहीं से फूटेगा मुक्ति का रास्ता।
मैं तो करुँगी, करती रहूँगी,
तब तक करुँगी, जब तक सकूँगी
ऐसे ही अनुपम साधु की साधना।
सम्पूर्ण अर्पण, सब कुछ समर्पण
जिसका प्रतीक यह थाल थमा दूँ।
क्यों न इसे मैं खीर खिला दूँ।

शक्ति (प्रेरणा का श्रोत)

पत्तों की छाँव में
अपने ही गाँव में
मानों मुसाफ़िर भटक गया हो।
जाना कहीं है, दृष्टि कहीं है,
रास्ता कहीं का पकड़ लिया है।
आत्मयंत्रणा सत्य की कुन्जी नहीं है।
आओ इसे मैं कुन्जी सुझा दूँ।
भूले की मुक्ति की युक्ति बता दूँ।
क्यों न इसे मैं खीर खिला दूँ।

सिद्धार्थ अपने अर्थ को सिद्ध कर।
स्वंय को कष्ट कष्ट का निवारण नहीं है।
द्रुत और विलम्बित रागों को छोड़ो,
आलाप में मध्यम ही राग आलापो,

'मध्यम-मार्ग' में ही कुन्जी छिपी है।

सिद्धार्थ की संप्रज्ञात समाधि पर
सुजाता का यह शक्तिपात !
प्रज्ञा की कुण्डलनी जग गई
आज्ञा-चक्र में हुआ प्रभात।
फिर भी कुछ कसर रह गई,
चलो उसे भी अभी मिटा दूँ।
क्यों न इसे मैं ये खीर खिला दूँ।

*****

सत्याग्रही की योग्यताएं

मेरा विचार है कि भारत के प्रत्येक सत्याग्रही में... निम्नलिखित योग्यताएं होनी चाहिए:

(1) उसे ईश्वर में जीती-जागती आस्था होनी चाहिए, क्योंकि वही तो उसका एक मात्र अवलंब है।

(2) उसे सत्य और अहिंसा को अपना धर्म मानते हुए उनमें विश्वास रखना चाहिए और इसी कारण, उसे मानव-प्रकृति की अंतर्निहित अच्छाई में भी आस्था होनी चाहिए। उसे आशा रखनी चाहिए कि वह इसी अच्छाई को अपने पीड़ा-भोग के जरिए सत्य तथा प्रेम की अभिव्यक्ति करके जगाने में कामयाब होगा।

(3) उसे पवित्र जीवन व्यतीत करना चाहिए और अपने ध्येय की पूर्ति के लिए अपने जीवन और अपनी संपत्ति को न्यौछावर करने के लिए तैयार तथा इच्छुक रहना चाहिए।

(4) वह आदतन खादी धारण करने वाला तथा चरखा कातने वाला होना चाहिए। भारत के संदर्भ में यह आवश्यक है।

(5) वह मद्यत्यागी और अन्य नशीले पदार्थों के सेवन से मुक्त होना चाहिए ताकि उसका विवेक सदा जागृत रहे और चित्त स्थिर रहे।

(6) वह समय-समय पर निर्धारित अनुशासन के नियमों का स्वेच्छा से पालन करे।

- महात्मा गांधी

साँटी

विभय कुमार झा

(ब्रज-भाषा में रचित इस कविता के हर दोहे में साँटी (अर्थात् छड़ी) की उपयोगिता के नये पहलू को क्रमशः दर्शाया गया है।)

साँटी माँहि गुण बहुत, तैं नित राखौ निज संग,
बस मेट्रो में सीट देलावै, न भी जदि अपंग।

स्पोंडिलाइटीस टीस, दुखै अंग प्रत्यंग,
भयौ सहारा साँटी, पावत राहत आहत अंग।

दंगल माँहि लट्ठ कौ करतब, करै सबै कौ दंग,
जंग छिड़ौ क्षण में करि दीन्हौ अरि कौ मस्तक भंग।

लट्ठ मुट्ठ में तो नशा, जो दीजै भंग न छंग,
'कॉंफिडेंस लेवल' बढ़्यौ, दब्बू लगै दबंग।

शिव तो भस्म करि कीन्हौ मन्मथ कौ अनंग,
बिन आंच टारै लकुटिया कवि, कुक्कुर कुरंग

जौं करि रारि अरि घर तेरौ तोहि कबहुँ सताई,
पुलिस तो दूर मेरो भाई, साँटिनि मारि करौ पहुनाई।

बरसै पथ पर जल ताल समतल, हेरि बुद्धि चकराई,
डेग सौं पहले लट्ठ टेक, थाह लीन्हौ गहराई।

अंधौ को दृष्टि लाठी, दिखरावै जौं नैन,
खट-खट सैण बताए बतिया, सँटिया मूक कौ बैन।

बापू कौ साथी साँटी, दांडी लौ पहुँचायौ,
दियौ स्वराज वा साँटिनि बाँधि तिरंगा फहरायौ,

अस्त्र किन्तु अहिंसावादी, ऐसौ सबक सिखायौ,
दुखै परन्तु दिखै नाहिं, कंबल-परेड करायौ।

इतकू उतकू घुमाया लट्ठ, कुक्कुर कौ मुंह माँहि,

कुक्कुर भाजै न भाजै, साँटी टूटौ नाहि।

मोहन मोहि मोह्यौ साँटी, लै जइ तैं चरायौ गैया,

वा साँटी कत बिसरौ, धाई जो लै हाथ जसोदा मैया।

हिलै डोलै डगमग-डगमग भाव-सागर में मेरौ नैया,

सोई साँटी चप्पू, छप-छप नैया, कन्हैया पार खेवैया।

लुका-छिपाई खेलौ कान्हा, तैं ढूंडौ मैं छिप जैया,

ढूढि ढढोरि थक्यौ जब तैं, मैं सँटिया ही ठक-ठकैया

महा-रास, कबहुँ महाभारत, मुरलिया, कबहुँ लकुटिया,

माखनचोर, कबहुँ चितचोर, कबहुँ 'गीता गीत गवैया।

छिद्र-छिद्र तो साँटी बंसी, कान्हा बंसी-बजैया,

वेणु मधुर सुर हिय न समैया, सुनि चरणन की बलैया।

जस-वैभव-शक्ति न जाचौं, जाचक टेरौ कन्हैया,

तोकौं ही तोसौं जाचौं मैं, मैं तैं में ही समैया।

साँटी कौ इत ओर जीव, परम-ब्रह्म उत छोर,

साँटी माया बीच में, तोड़ि ढलै निसि भोर।

तोड़ि मोड़ि जोड़ि, ओर-छोर तोड़ि जीव-ब्रह्म मिलायौ,

स्वयं टूटि गयौ, टूटत-टूटत साँटी मोक्ष सुझायौ।

*****

जीवन

डॉ. आनंद बल्लभ धौलाखंडी

-1-

जीवन अस्थिर
गतिशील बिंदु,
ले जाता हमको कहाँ-कहाँ !
कभी हिम शिखरों के पार चले,
कभी सागर की लहरों पर डोले ।
कभी झूमता चले,
गहन वन प्रान्तर में ।
कभी रात भर जगे !
चाँद के संग-संग ।
जानी-अनजानी जगहों पर,
गिरता झरता,
वर्षा की बूँदों सा !
कभी हँसाता,
कभी रुलाता !
कभी अनायास
बाहों में भर लेता है ।
जीवन !
एक सपना है
सहसा खो जाता है !

-2-

काँटों की चुभन
क्या तोड़ सकी है
मेरा मन !
झंझा के झोंके
क्या तोड़ सका है
मेरा तन !
हर हाल में मुसकाता हूँ मैं,
हर मौसम में गुनगुनाता हूँ,
जीवन है धूप-छाँव !

*****

मेरा देश मेरा परिवार

सूचिका चावला

बीती छूट्टियों में मौका मिला,
गई विदेश मैं घूमने को।
मन में बहुत उत्साहित थी,
जा रही थी भाई से मिलने को।

पहुँची तो पहले बारिश मिली,
पर सुगंध नहीं थी मिट्टी की,
चेहरे सब अन्जाने थे,
हवा भी बिल्कुल ठण्डी थी,
बस एक झलक मिले अपनों की,
इतना ही इन्तज़ार था।
बेफ़िक्री थी फिर भी मन में,
क्योंकि वहाँ मेरा परिवार था।

सुंदर-सुंदर घर खड़े थे,
जो एक दूसरे से नहीं जुड़े थे,
घर के आगे पीछे बागवानी खिली,
ना नीम दिखा ना तुलसी मिली,
घर के बाहर कोई बैठक नहीं,
आँगन सूना और बेज़ार था।
बेफ़िक्री थी मेरे मन में,
क्योंकि वहाँ मेरा परिवार था।

घर पहुंची तो जान में जान आई,
अपनों के चेहरों पर जब मुस्कान पाई,
बाद दिनों के बैठे साथ में,
चाय की प्याली लेकर हाथ में,
सब बोले आज से पहले,
हर सुख यहां बेकार था।
पर बेफ़िक्री थी अब भी मन में,
क्योंकि वहाँ सारा परिवार था।

धूप खिली तो निकली घर से,
नया शहर देख आने को,

स्वच्छ हवा थी, चौड़ी सड़कें,
गाड़ी तेज़ दौड़ाने को,
सभ्य समाज में मिली मशीनें,
बस मनुष्य का आकार था।
बेफ़िक्री थी फिर भी मन में,
क्योंकि वहाँ मेरा परिवार था।

नियम से सोना नियम से उठना,
नियम में बँधा जीवन था,
घर में सब आराम की वस्तु,
खान पान भी उत्तम था,
रखे सुंदर पशु पालतू,
बस बूढ़ों का गायब परिवार था।
बेफ़िक्री थी अब भी मन में,
क्योंकि वहाँ मेरा परिवार था।

लौटने देश को निकली जब,
तो भाई ने एक बात कही,
इससे पहले इतना सुंदर,
नहीं लगा यह देश कभी।
माने हम सब इस बात को आखिर,
सबको जोड़ने वाले, अपनी मिटटी, अपने संस्कार हैं।
हां मैं बेफ़िक्र हूं आज यहां, क्योंकि यहां मेरा देश, मेरी मिट्टी, मेरा परिवार है।

*****

विश्व के सारे महान धर्म मानवजाति की समानता, भाईचारे और सहिष्णुता का संदेश देते हैं।

- महात्मा गांधी

समय टल जाएगा
बिपिन पारचा

जो समय है हाथ में,
उसको व्यर्थ न गँवाओ,
इंसान हैं गर हम सभी,
तो इंसानियत का धर्म ही अपनाओ।
माना मुश्किल की घड़ी है,
राह में विपदा बड़ी है,
इंसान से निर्मित हुई,
फिर असंख्यों में संक्रमित हुई।
चलती फिरती जिंदगी में,
गतिरोध फिर वो आ गया
राहों में न अब शोर है,
खामोशी का जोर है
एक वो भी दौर था,
एक ये भी दौर है।
यह समय संयम का है,
आत्मा के मंथन का है,
धर्म से हट कर सोचिए,
न धार्मिक भावनाओं के मंचन का है।
न किसी प्रतिरोध का,
न धार्मिक विरोध का,
कितनों के आभार का,
जोश के संचार का।
सामना इसका करेंगें,
एकजुटता से लड़ेंगे,
ये समय टल जाएगा,
फिर नया कल आएगा।
कठिनाईयाँ हार जाएँगी।
गर धर्म आड़े न आए,
मानवता रंग लाएगी।

*****

निर्णायक मैं नहीं
इला नेगी

वो क्या है, क्यों है, कैसा है?
वो ऐसा है, वो वैसा है।
वो मुख्यधारा से अलग है,
इसलिए ही तो वो ऐसा है।

वो राह से अपनी भटक गया,
उसने जो किया वो गलत किया।
पैमाना विवेक का उठा लिया,
फिर हमने उसपे निर्णय दिया।

परिस्थितियाँ उसकी क्या होंगी,
मनोस्थिति कैसी रही होगी।
इस बात से क्या लेना देना,
हम निर्णायक बन जाते हैं,
फिर उसे गलत ठहराते हैं।

ये सब कितना अनुचित होगा,
यह निर्णय कैसे उचित होगा।
हालात का मारा इंसाँ,
कभी उठा, कभी फिर गिरा वहाँ।

उसे सोचे बिना ही समझ गए,
अपने पैमाने पे परख गए।
फिर वक्त ने यह समझाया,
जो सबको समझना बाकी है,
हम कैसे किसी पे निर्णय दें,
अभी खुद को समझाना बाक़ी है।

*****

जिन्दगी तेरा एतबार इला नेगी

तासीर नहीं ऐसी मेरी,
की हर ग़म में भी मुस्कुराऊँ।

जब भी हारूँगी ज़िन्दगी तुझसे,
मुश्किल है कि फिर उठ पाऊँ।

तू वजह देगी फिर भी उठने की,
इतना यक़ीन है मुझको।

शायद इसी एतबार पे तेरे ,
मैं फिर से मुस्कुराऊँ।

*****

चरित्र और शैक्षणिक सुविधाएँ ही वह पूँजी है जो माता-पिता अपने संतान में समान रूप से स्थानांतरित कर सकते हैं।

- महात्मा गांधी

संघर्ष-प्रेरणा

गुरुबक्श लाल चोपड़ा

सह ली सारी यातना, पर
कर्तव्य सर्वोपरि रखा।
त्यागशील संकल्प को,
जिस तरह जीवित रखा।
बोलो कहां तक टिक सकोगे,
यदि राम सा संघर्ष हो, यदि राम सा संघर्ष हो।
कल मुकुट जिस पर सजना था,
अब उसे सब कुछ त्यागना था।
निर्णयों के द्वंद्व से,
एक बालपन का सामना था।
वचन भी था थामना,
आदेश भी था मानना। ..... आदेश भी था मानना।
तब किस तरह सोचो स्वयं को,
धर्म पर तुम रख सकोगे ?
बोलो कहां तक टिक सकोगे ?
यदि राम सा संघर्ष हो। ..... यदि राम सा संघर्ष हो।
प्रजा तो बस राम की थी,
दुनिया उसे तो जप रही थी .....
वचन ही था, तोड़ देता,
धर्म ही था, छोड़ देता।
पर पीढ़ियां क्या सीख लेंगी .....
राम को चिंता यही थी।
हो छिन रहा एक क्षण में सबकुछ,
सोचो एक क्षण .... क्या करोगे ?
बोलो कहां तक टिक सकोगे ?
यदि राम सा संघर्ष हो। ..... यदि राम सा संघर्ष हो।
केवट ने जाने क्या किया था,
सौभाग्य जो उसको मिला था।
राम से ही तारने को,
राम से ही लड़ गया था .....
कुलवंश उसके तर रहे थे,
सब राम अर्पण कर रहे थे।

जब सब कुछ जो बिखरा हुआ,
तो सहज कब तक रह सकोगे।
बोलो कहां तक टिक सकोगे ?
यदि राम सा संघर्ष हो। ..... यदि राम सा संघर्ष हो।
है याद वो घटना तुम्हें,
जब राम थे वनवास में।
सिया थी हर ली गयी,
था कौन उनके साथ में।
कुटी जब सूनी पड़ी थी,
दो भाई और विपदा बड़ी थी।
बोलो ऐसे मोड़ पर,
तुम धैर्य कब तक रख सकोगे ?
बोलो कहां तक टिक सकोगे ?
यदि राम सा संघर्ष हो।..... यदि राम सा संघर्ष हो।
वह तो स्वयं भगवान था,
पर कहां उसमें मान था।
किरदार भी ऐसा चुना,
जिसमे सिर्फ बलिदान था।
मर्यादा के प्राण थे,
रघुवंश के अभिमान थे।
बोलो श्री राम के अध्याय से,
एक पृष्ठ हासिल कर सकोगे ?
बोलो कहां तक टिक सकोगे ?
यदि राम सा संघर्ष हो।..... यदि राम सा संघर्ष हो।

*****

रक्षा अनुसंधान विकास
सुनील कुमार सिंह

अनुसंधान और विकास देश रक्षा की आन है,
रक्षा अनुसंधान संगठन का हमें भी अभिमान है।
यह जांबाज सैन्य बलों के सैनिकों की भूमि है,
डीआरडीओ के नित नये परीक्षण राष्ट्र की शान हैं ।

अनुसंधान का बल सेना का तेज बढ़ाता है,
अग्नि, त्रिशूल, पृथ्वी, आकाश मिसाइल डीआरडीओ बनाता है।
जल में, थल में आसमान में सेना का मनोबल बढ़ाता है,
हमारी सरहदों पर छक्के दुश्मनों के छुड़ाता है।

तेजस विमान, अर्जुन टैंक, रुस्तम ड्रोन बनाता है,
वैज्ञानिक अनुसंधान से नया इतिहास बनाता है।
दुश्मनों के दिल में खौफ यह बढ़ाता है,
दुश्मन अपने दांतों तले चने चबाता है।

डीआरडीओ की लगन मेहनत क़ाबिले तारीफ है,
देश की रक्षा, सुरक्षा के लिए इस संगठन का नाम है।
सुरक्षा बलों की चहुँमुखी शान है।
अनुसंधान और विकास खबर सुन कर दुश्मन भी हैरान है।

*****

सत्य का सौंदर्य

मनुष्य अक्सर सत्य का सौंदर्य देखने में असफल रहता है, सामान्य व्यक्ति इससे दूर भागता है और इसमें निहित सौंदर्य के प्रति अंधा बना रहता है।

- महात्मा गांधी

माटी चंदन है
पूरण सिंह राठौड़

प्रातः स्मरणीय शहीदों को वंदन है,
जिनके त्याग तपोवन से माटी चन्दन है।

जिन्हें आत्म सम्मान रहा प्राणों से प्यारा,
उन्हें याद करती अब भी गंगा की धारा।

ले हाथों में शीश चले ऐसे मतवाले,
आज़ादी के लिए हलाहल पीने वाले।

आज़ादी के रखवालों को हृदय से नमन है,
जिनके त्याग तपोवन से माटी चंदन है।

जिनकी दृढ़ता से उन्नत है आज हिमालय,
अब उनके पद चिन्ह हमारे लिए शिवालय।

आज तिरंगा जिनकी याद लिए फहराता,
वक्त आज भी जिनकी गौरव गाथा गाता।

धन्य नींव के पत्थर जिन पर बना भवन है,
जिनके त्याग तपोवन से माटी चंदन है।

महके बीस गुलाब गंध बाँटे खुशहाली,
नव दुल्हन-सी खेतों में नाचे हरियाली।

अनुशासन से देश नया जीवन पाता,
कर्मशील ही आगे जा पूजा जाता है।

आज धरा खुशहाल और उन्मुक्त गगन है,
जिनके त्याग तपोवन से माटी चंदन है।

*****

टिक-टॉक

आकाश गुप्ता

जो देश जाना जाता था, सोने की चिड़िया के नाम से,
जिस देश की पहचान थी, उसके अमूल्य इतिहास से।
अब उस देश की एक नई पहचान कुछ इस प्रकार बनी,
जब से देश में टिक-टॉक की एक लहर सी चली।
जी हाँ टिक-टाक आप में से लगभग सब जानते होंगे कि क्या बला है,
जनाब शायद आपका या फिर आपके पड़ोसी का इस पर अकाउंट खुला है।
इसका इस्तेमाल करने वाले कहते हैं इसकी मदद से हम जल्दी फेमस हो जायेंगे,
हमारे लाखों करोड़ों फैन रातों-रात हो जायेंगे।
दरअसल में वो यह नहीं जानते कि यह एप उनको सिर्फ उल्लू बनाएगी,
और जिंदगी में कामयाबी के नाम पर ठेंगा दिखायेगी।
इसने न जाने आज युवा पर क्या जादू कर डाला,
लड़कियां एक्टिंग के नाम पर कर रही बेहूदापन।
और लड़के दाढ़ी मूंछ वाली आंटियाँ बन रहे हैं।
आज के दौर में कैसी होड़ सी चली कि देश की जनता को देश कि नहीं पड़ी,
पढ़ाई-लिखाई में इनका दिल है नहीं लगता और काम के नाम से इनका जी है जलता।
देश की जनता टिक-टॉक पर इतनी व्यस्त है,
उन्हें पता ही नहीं कि देश की आर्थिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त है।
पर ऐसा नहीं है कि टिक-टॉक कुछ अच्छा सिखाता नहीं,
इसके प्रभाव में आकर लोग कुछ इस प्रकार के अच्छे काम भी करते हैं।
कोई किसी को दिन-दहाड़े गोली मार रहा है,
फेमस होने के लिए कुछ लोग अपना ही गला काटते फिर रहे हैं।
कोई अश्लीलता फैला रहा है तो कोई मानसिक तनाव,
कोई देशद्रोह फैला रहा है तो कोई राष्ट्रवाद।
कोई संगीत के नाम पर शोर मचा रहा है,
तो कोई डांस के नाम पर दंगे करवा रहा है।
कोई सामाजिक भावनाओं को ठेस पहुंचा रहा है,
यह कहना गलत नहीं होगा कि देश के लोग रचनात्मक हैं।
बस अपनी रचनात्मक शक्ति को सही उपयोग में लायें,
ऐसा न हो कि हम लोग टिक-टॉक में ही उलझे रह जाएँ।
और इससे बनने वाला समाज हम से ही बाजी न मार जाए।

*****

भर्ती मूल्यांकन केन्द्र में राजभाषा गतिविधियां

हिन्दी भाषा को प्रचारित एवं प्रसारित करने के लिए उसे व्यवहार में लाना जितना अपेक्षित है, उतना ही महत्वपूर्ण सरकारी काम-काज में हिन्दी का प्रयोग करना भी है। वर्तमान युग में भाषा के प्रयोग के क्षेत्र में इलैक्ट्रॉनिक प्रचार माध्यमों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई है। आज सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने तथा भाषा का समुचित प्रचार-प्रसार के लिए इलैक्ट्रोनिक माध्यमों का उपयोग आवश्यक है। सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारी से अपेक्षा की जाती है कि वो अपना सरकारी काम-काज हिन्दी में करें। इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा सरकारी कार्यालयों के लिए वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है। भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र द्वारा किये गये प्रयासों का विवरण इस प्रकार है।

1 **हिन्दी पखवाड़ा आयोजन :** राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं व्यापक प्रयोग हेतु भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र में दिनांक 14 सितम्बर 2020 से 28 सितम्बर 2020 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। पखवाड़े का संबोधन भाषण श्री बी. पी. शर्मा, अध्यक्ष, भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र द्वारा दिया गया। पखवाड़ा कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री सुशील कुमार वर्मा, निदेशक द्वारा किया गया। निदेशक महोदय ने अपने उद्घाटन भाषण में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा पखवाड़ा प्रतियोगिताओं को सफल बनाने का आह्वान किया। प्रतियोगिताओं के प्रश्न-पत्र इस केन्द्र में अधिक से अधिक हिन्दी के प्रयोग को ध्यान में रखते हुए तैयार करने का निर्देश दिया गया ताकि पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिताएं सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने में उपयोगी सिद्ध हो सकें।

हिन्दी पखवाड़े के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें निबंध प्रतियोगिता, सुलेख/श्रुतलेख, वाद-विवाद, आशुभाषण, कविता पाठ, चित्र कथा, हिन्दी टंकण, हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता, टिप्पण एवं मसौदा लेखन (नोटिंग-ड्राफ्टिंग), शब्द-ज्ञान आदि प्रतियोगिताएं काफी उत्साहवर्धक रही। इन प्रतियोगिताओं में सभी संवर्ग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लेकर राजभाषा का गौरव बढ़ाया।

2 **हिन्दी दिवस का आयोजन :** भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र में 14 सितम्बर 2020 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। हिन्दी दिवस का उद्घाटन इस केन्द्र के निदेशक श्री सुशील कुमार वर्मा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक द्वारा किया गया। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह तथा डॉ. जी. सतीश रेड्डी, सचिव रक्षा अनुसंधान विकास विभाग एवं अध्यक्ष डीआरडीओ के संदेशों को पढ़कर सुनाया गया। तत्पश्चात श्री बी. पी. शर्मा अध्यक्ष (आर ए सी) ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि कार्यालय में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए राजभाषा वार्षिक लक्ष्यों को पूर्ण किया जाना अनिवार्य है। इसके साथ-साथ हिन्दी को आधुनिक रूप में ढ़ालने के लिए सूचना एवं प्रोद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः हम सभी को उसका उपयोग करके हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करना है।

3 **कार्यशाला आयोजन :** राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र में दिनांक 24 सितम्बर 2020 को "उच्च शिक्षा अर्जन में हिन्दी माध्यम का महत्त्व" विषय पर राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन इस केन्द्र के निदेशक श्री सुशील कुमार वर्मा द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि जिन विषयों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए हिन्दी भाषा का विकल्प नहीं है उन विषयों में हिन्दी माध्यम

से उच्च शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा से राजभाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ेगा और इसके साथ-साथ आम नागरिकों को भी अपनी बात को हिन्दी में रखने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यशाला का व्याख्यान डॉ. राजेश त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'डी' द्वारा दिया गया। उन्होंने कहा कि कानून तथा विज्ञान विषयों की उच्च शिक्षा में हिन्दी माध्यम की सुविधा होने से हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग होने लगेगा और ऐसे विषयों पर संगोष्ठी तथा कार्यशाला आयोजन के माध्यम से चर्चा किया जाना राजभाषा के लिए महत्वपूर्ण होगा। इस कार्यशाला में 14 अधिकारियों तथा 29 कर्मचारियों ने भाग लिया।

4 **प्रशासनिक प्रबंधन में हिन्दी का प्रयोग :** सरकारी काम-काज को मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए निर्धारित जाँच बिन्दुओं को व्यवहार में लाने के सभी उपायों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए इस केन्द्र में द्विभाषी मानक फॉर्मों का उपयोग किया जा रहा है। केन्द्र के अंतर्-कार्यालयी प्रशासनिक पत्रों को द्विभाषी रूप में जारी किया जा रहा है। रबड़ की मोहरें, नाम पट्ट आदि द्विभाषी बनाये गये हैं। हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिया जा रहा है। भर्ती एवं मूल्यांकन में प्रयुक्त होने वाले फॉर्मों जैसे उम्मीदवारों का यात्रा दावा प्रपत्र, भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र के प्रवरण बैठकों में भाग लेने के लिए आमंत्रित सलाहकार का यात्रा दावा प्रपत्र, वैज्ञानिक 'बी' के चयन हेतु जीवन वृत्त प्रारूप, मानदेय बिल आदि द्विभाषी बनाए गये हैं।

5 **कंप्यूटर तथा इलैक्ट्रोनिक माध्यमों का उपयोग :** आज कंप्यूटर तथा इंटरनेट भाषा के प्रचार-प्रसार का मुख्य साधन है। वर्तमान समय में इलैक्ट्रॉनिक माध्यम मुद्रित सामग्री की प्रतियोगिता में आ गये हैं। हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए यह केन्द्र कंप्यूटर, इंटरनेट का उपयोग करता आ रहा है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार को प्रभावी बनाने के लिए प्रख्यात लेखकों द्वारा कहे गये हिन्दी के उद्धरणों को सी॰सी॰टी॰वी॰ के माध्यम से हिन्दी में प्रदर्शित किया जा रहा है।

6 **विज्ञापन को हिन्दी में जारी करना :** यह केन्द्र वैज्ञानिकों की भर्ती के लिए रोजगार समाचार पत्र के अलावा मुख्य दैनिक समाचार पत्रों में द्विभाषी विज्ञापन जारी करता आ रहा है। विज्ञापन आवश्यकतानुसार जारी किये जाते हैं।

7 **राजभाषा रिपोर्ट एवं पत्र व्यवहार :** इस केन्द्र द्वारा हिन्दी से संबंधी तिमाही, अर्द्ध वार्षिक व अन्य रिपोर्ट राजभाषा निदेशालय को निर्धारित समय पर नियमित रूप से भेजी जाती है। इसके अतिरिक्त राजभाषा मुख्यालय से प्राप्त पत्रों का उत्तर समय पर दिया जाता है।

8 **हिन्दी अनुवाद कार्य :** इस केन्द्र में प्रयुक्त होने वाले फॉर्मों को द्विभाषी बनाया गया है जैसे - वैज्ञानिकों के चयन के लिए जीवन वृत्त प्रारूप, अभ्यर्थियों का यात्रा भत्ता प्रपत्र, विशेषज्ञों के चयन के लिए साक्षात्कार हेतु बुलावा पत्र आदि द्विभाषी रूप में जारी किये जाते हैं। इसके अलावा इस केन्द्र के राजभाषा अधिनियम 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी दस्तावेजों, आदेशों को द्विभाषी रूप से जारी किया जा रहा है।

9 **हिन्दी पुस्तकों की खरीद :** हिन्दी में काम करने की सुविधा तथा इस केन्द्र के मूल काम को हिन्दी में किये जाने से संबन्धित सहायक पुस्तकें, जैसे अँग्रेजी हिन्दी शब्द-कोश, तकनीकी शब्दावलियों, ललित साहित्य एवं रोचक विषयों पर लिखी गई पुस्तकों की खरीद की गई है। इसके साथ ही हिन्दी के दैनिक समाचार पत्र जैसे दैनिक जागरण, नव-भारत टाइम्स, हिंदुस्तान तथा पत्रिका जैसे इंडिया टूड़े पुस्तकालय में मंगाये जा रहे हैं। कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी, सरकारी कामकाज में इन पुस्तकों की सहायता लेते हैं, जो राजभाषा हिन्दी की उन्नति में सहायक है।

10 **साक्षात्कार परीक्षाओं में हिन्दी का प्रयोग :** राजभाषा नीति का अनुपालन करने के लिए इस केन्द्र द्वारा आयोजित की जाने वाली सभी प्रकार की साक्षात्कार परीक्षाओं में उत्तर हिन्दी में दिये जाने का खुला विकल्प रखा गया है।

11 **राजभाषा मुख्यालय द्वारा हिन्दी के प्रयोग से संबंधित निरीक्षण :** राजभाषा मुख्यालय द्वारा दिनांक 19 सितम्बर 2020 को हिन्दी के प्रयोग संबंधी आदेशों के अनुपालनार्थ इस केन्द्र का निरीक्षण किया गया ।

12 **वेबसाइट :** अखिल भारतीय स्तर पर राजभाषा की आवश्यकता एवं उपयोगिता को देखते हुए आर.ए.सी. की वेबसाइट को द्विभाषी बनाया गया है, जो हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण कदम है।

13 **साक्षात्कार बैठकों का आयोजन :** मूल्यांकन बोर्ड के अध्यक्ष एवं सदस्यों के नाम-पट्टों को द्विभाषी रूप में लिखा जाता है एवं सहायता मेजों पर अभ्यर्थियों तथा विशेषज्ञों के साथ वार्तालाप का माध्यम भी हिन्दी है। इसके अलावा साक्षात्कार बोर्ड में अभ्यर्थियों को साक्षात्कार देने का विकल्प भी दिया गया है, जिससे हिन्दी का प्रचार-प्रसार अखिल भारतीय स्तर पर हो रहा है।

14 **सीमित दूरदर्शन प्रणाली :** इस केन्द्र में हिन्दी के उद्धरणों, सुविचार, आज के शब्द, विभिन्न विषयों की जानकारी सीमित दूरदर्शन प्रणाली के माध्यम से प्रसारित की जाती हैं। अभ्यर्थी का विषय एवं साक्षात्कार का अनुमानित समय तथा अन्य विवरण सीमित दूरदर्शन प्रणाली (सी.सी.टी.वी.) पर प्रदर्शित किये जाते हैं।

सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र निरंतर प्रयासरत है। इस प्रकार हमारे केन्द्र में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विकास को काफी प्रोत्साहन मिला है। हिन्दी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए यह केन्द्र सदैव कृत-संकल्प है।

*****

कार्मिक समाचार

पदोन्नतियां

क्रम सं.	नाम	पद से	पद में	पदोन्नति की तिथि
1	डॉ ए. बी. धौलाखंडी	वैज्ञानिक 'ई'	वैज्ञानिक 'एफ'	01 जुलाई 2019
2	श्री सौरभ गुप्ता	वैज्ञानिक 'डी'	वैज्ञानिक 'ई'	01 जुलाई 2019
3	श्री संत प्रसाद मिश्रा	वैज्ञानिक 'एफ'	वैज्ञानिक 'जी'	30 अगस्त 2019
4	श्री बसंता कुमार दत्ता	एसटीए 'बी'	टीओ 'ए'	01 सितम्बर 2019
5	श्रीमती कला कालिया	तकनीशियन 'ए'	तकनीशियन 'बी'	01 सितम्बर 2019

आर ए सी में अन्य प्रयोगशाला/स्थापनाओं से स्थानान्तरण

क्रम सं.	नाम	पद	आने की तिथि
1	श्रीमती सुमन बाला जोशी	पीए	10 अक्टूबर 2018
2	श्री पियूश जोशी	एसटीए 'बी'	15 अक्टूबर 2018
3	डॉ ए. बी. धौलाखंडी	वैज्ञानिक 'ई'	17 अक्टूबर 2018
4	श्रीमती सुनीता वडेरा	वैज्ञानिक 'जी'	17 अक्टूबर 2018
5	श्री सूरयांश	एसटीए 'बी'	03 दिसम्बर 2018
6	श्री सुनील कुमार सिंह	भण्डार अधिकारी	31 दिसम्बर 2018
7	श्री संत प्रसाद मिश्र	वैज्ञानिक 'एफ'	08 मार्च 2019
8	श्री सौरभ गुप्ता	वैज्ञानिक 'डी'	18 अप्रैल 2019
9	श्री टी. के. भारद्वाज	वरिष्ठ लेखाधिकारी-II	13 सितम्बर 2019
10	श्री कमलजीत सिंह	एसटीए 'बी'	27 नवम्बर 2019
11	श्री बिपिन पारचा	वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी-II	02 दिसम्बर 2019
12	श्री महेंदर कुमार	तकनीकी अधिकारी 'सी'	17 दिसम्बर 2019
13	विभय कुमार झा	प्रधान निदेशक (ए एफ एच क्यू)	28 जनवरी 2020
14	श्री के. प्रशांत	वरिष्ठ भण्डार अधिकारी- II	24 जून 2020
15	श्री उत्पल भास्कर	पीपीएस	03 जुलाई 2020
16	श्री रवि मित्तल	तकनीकी अधिकारी 'सी'	03 अगस्त 2020
17	श्रीमती के. वी. प्रभा	वैज्ञानिक 'जी'	14 सितम्बर 2020
18	श्री मोहन लाल	तकनीकी अधिकारी 'डी'	19 अक्टूबर 2020

आर ए सी से अन्य प्रयोगशाला/स्थापनाओं में स्थानान्तरण

क्रम सं.	नाम	पद	जाने की तिथि
1	डॉ आर. के. सोखी	वैज्ञानिक 'जी'	16 जनवरी 2019
2	श्री जी. एस. गुप्ता	वैज्ञानिक 'जी'	08 जुलाई 2019
3	श्रीमती ज्योति भल्ला	वैज्ञानिक 'डी'	30 सितम्बर 2019
4	श्री मिलन स्वरुप भोई	एसटीए 'बी'	30 सितम्बर 2019
5	श्री हरिकृष्ण	एमटीएस	30 सितम्बर 2019
6	प्रत्यक्ष कुमार शर्मा	एसटीए 'बी'	29 जनवरी 2020
7	श्रीमती अंजू माला	वैज्ञानिक 'डी'	19 मई 2020

सेवा निवृतियां/त्याग-पत्र

क्रम सं.	नाम	पद	सेवा निवृति की तिथि
1	श्री के. के. मेहता	टीओ 'सी'	30 जून 2019
2	श्री अनिल वोहरा	टीओ 'बी'	31 अक्टूबर 2019
3	कु. दीपिका	एसआरएफ	14 अक्टूबर 2019 (त्याग-पत्र)

*****

स्थापना दिवस उदघाटन समारोह की कुछ झलकियाँ

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की कुछ झलकियाँ

राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह की कुछ झलकियाँ

राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह के अवसर पर अध्यक्ष महोदय तथा निदेशक महोदय द्वारा दीप प्रज्वलन एवं पखवाड़ा संबोधन की कुछ झलकियाँ

राजभाषा हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगी कार्यक्रमों की कुछ झलकियाँ

राजभाषा हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगी कार्यक्रमों की कुछ झलकियाँ

राजभाषा कार्यशाला आयोजन की कुछ झलकियाँ

राजभाषा कार्यशाला आयोजन की कुछ झलकियाँ

आर ए सी में अध्यक्ष द्वारा जिम कक्ष का उद्घाटन

आर ए सी में स्थापना दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण की कुछ झलकियाँ

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

म. क. गांधी

सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा

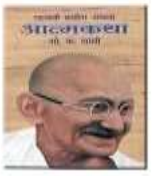

लेखक : मोहनदास करमचंद गांधी

अनुवाद: काशिनाथ त्रिवेदी

यूनिकोड संस्करण : संजय खत्री

Courtesy: http://hi.wikipedia.org

नवजीवन प्रकाशन मंदिर,

अहमदाबाद ३८०००१४